आदिवासी एक्सप्रेस

आमजन का एक मात्र हिंदी दैनिक अखबार

रांची, बुधवार
14 मई 2025
वर्ष: 38, अंक: 161
पृष्ठ: 12, मूल्य: 3रु
RNI NO.: 49065/1989
DAVP CODE: 130961

देश

मुख्यमंत्री ने भागलपुर में 208 करोड़ रुपये से अधिक की 48 विकासात्मक योजनाओं का किया उद्घाटन एवं शिलान्यास

गिरिडीह

भीषण गर्मी में पानी के लिए त्राहिमाम, गिरिडीह के वार्ड नं. 15 में नदी से चुंआ खोदकर पानी लाने को मजबूर लोग

हज़ारीबाग

प्राणिक हीलिंग फाउंडेशन ट्रस्ट ऑफ झारखंड द्वारा वेसाक फुल मून मेडिटेशन का सफल आयोजन

सहारा में निवेश करने वाले लोगों का पैसा दिलायेगी सरकार

संवाददाता द्वारा

रांची: झारखंड के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में विश्व भारती जनसेवा संस्थान के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की. प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री से सहारा इंडिया निवेशकों का पैसा वापस दिलाने, जांच आयोग का गठन और राज्य सरकार द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में हस्तक्षेप याचिका दायर करने की दिशा में पहल किए जाने का आग्रह किया. मुख्यमंत्री ने कहा कि इस मामले में राज्य सरकार विधिसम्मत कदम उठाएगी.

मुख्यमंत्री से मुलाकात करने वालों मे संस्थान के राष्ट्रीय सचिव नागेंद्र कुमार कुशवाहा, संयुक्त सचिव अशोक कुमार राम, उप सचिव प्रवीण कुमार श्रीवास्तव और रेजिना सुचिता कच्छप शामिल थे. इसमें जांच आयोग के गठन करने की मुख्यमंत्री ने सहमति दे दी. साथ ही जिन 75 लोगों ने सहारा इंडिया में पैसा डूबने के कारण आत्महत्या या अवसाद से मर जाने वाले लोगों को सरकार की तरफ से मुआवजा दिया जायगा. साथ ही कानूनी प्रक्रिया में राज्य सरकार सहयोग करेगी.

किराएदार महिला ने 80 साल के मकान मालिक को मार डाला

क्राइम संवाददाता द्वारा

बोकारो: बोकारो जिले में एक 80 साल के बुजुर्ग मकान मालिक को उसकी ही महिला किराएदार ने कथित तौर पर मसाला पीसने वाले पत्थर से हमला कर के हत्या कर दी। पुलिस ने मंगलवार को बताया कि मकान मालिक ने महिला किराएदार के साथ छेड़छाड़ की। इससे नाराज महिला ने पीसने वाले पत्थर से मकान मालिक के सिर पर वार किया। इससे मकान मालिक की मौत हो गई। यह घटना 11 मई को बोकारो स्टील सिटी थाना क्षेत्र के कोऑपरेटिव कॉलोनी में हुई। मकान मालिक कालिका राय ने किराएदार रूना देवी को मछली खिलाने के बहाने अपने घर पर बुलाया। बोकारो के पुलिस अधीक्षक मनोज स्वर्गारी ने संवाददाताओं को बताया कि मकान मालिक कालिका राय ने महिला से छेड़छाड़ करनी शुरू कर दी तो पीड़िता ने उसके सिर पर पीसने वाले पत्थर से वार किया।

इस हमले में मकान मालिक कालिका राय की मौत हो गई। एसपी ने कहा कि 11 मई को जब इस हत्याकांड के बारे में जानकारी मिली, तो तुरंत एक विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया गया। जांच में पता चला कि कालिका राय किराए का भुगतान नहीं करने के कारण रूना देवी को परेशान कर रहा था। रूना देवी के साथ लगातार छेड़छाड़ हो रही थी। मौके पर फोरेंसिक टीम ने भी वारदात की पड़ताल की। फोरेंसिक साक्ष्य से मौत के कारण की पुष्टि होने के बाद आरोपी रूना देवी को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस का कहना है कि वह वारदात की जांच कर रही है। आरोपी रूना देवी ने जिस पत्थर से मकानमालिक की हत्या की उसका इस्तेमाल आमतौर पर घर पर मसाला पीसने में किया जाता है।

देह व्यापार में शामिल युवती ने जमशेदपुर के होटल में की खुदकुशी

क्राइम संवाददाता द्वारा

जमशेदपुर। साकची आम बागान स्थित सना कॉम्प्लेक्स के एल डोराडो होटल में एक युवती की संदिग्ध परिस्थिति में मौत के मामले में पुलिस ने होटल मैनेजर, एक युवती और दो युवकों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है. मृतका की पहचान मानगो निवासी के रूप में हुई है. जेल जाने वालों में मानगो ओल्ड पुरुलिया रोड जाकिरनगर निवासी सह होटल मैनेजर अब्दुल शफीक, औरंगाबाद नवीनगर निवासी ऋतुराज कुमार, कोडरमा के झुमरीतिलैया निवासी पंकज कुमार और मानगो ओल्ड पुरुलिया रोड नंबर-एक की एक युवती शामिल है.

पिता ने करायी प्राथमिकी दर्ज: मृतका के पिता ने साकची थाने में प्राथमिकी दर्ज करायी है. उन्होंने बताया कि उनकी बेटी पिछले कुछ महीने से एक सहेली के साथ देह व्यापार में लिप्त थी. रविवार को उनकी बेटी पार्टी में जाने की बात कहकर घर से निकली थी. जानकारी के मुताबिक, वह और उसकी सहेली एल डोराडो होटल के कमरे नंबर 506 में पहुंची थी, जबकि आरोपी ऋतुराज कुमार (नवीनगर, औरंगाबाद) और पंकज कुमार (झुमरीतिलैया, कोडरमा) कमरा नंबर 504 में ठहरे हुए थे. 10 हजार रुपये में एक रात का सौदा तय हुआ था.

युवकों ने शराब पीकर बनाए शारीरिक संबंध : रात में सभी ने शराब और सिगरेट का सेवन किया और फिर शारीरिक संबंध बनाए. किसी बात को लेकर युवती नाराज होकर अपने कमरे में चली गयी और दरवाजा अंदर से बंद कर लिया. काफी देर तक दरवाजा न खोलने पर सहेली और दोनों युवकों ने होटल के मैनेजर अब्दुल शफीक को बुलाया. दरवाजा तोड़ने पर युवती को फंदे से लटका पाया. सोमवार को पुलिस ने शव को कमरे से बरामद कर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा था. मंगलवार को पुलिस ने पूछताछ के बाद चारों आरोपियों को जेल भेज दिया. मामले की जांच जारी है.

बीआईटी कैंपस बना रणक्षेत्र! दो गुटों में झड़प के बाद एक्शन

क्राइम संवाददाता द्वारा

धनबाद: धनबाद स्थित झारखंड के प्रसिद्ध इंजीनियरिंग कॉलेज बीआईटी सिंदरी में सोमवार की देर रात छात्रों के दो समूहों के बीच टकराव और मारपीट के बाद प्रबंधन ने प्रथम वर्ष के सभी छात्रों को हॉस्टल खाली करने का आदेश दिया है। मंगलवार दोपहर तक इंजीनियरिंग प्रथम वर्ष के सभी छात्र हॉस्टल खाली कर अपने घरों के लिए रवाना हो गए।

प्रबंधन ने घटना की जांच शुरू की ञसंस्थान के निदेशक डॉ. पंकज राय ने कहा है कि प्रबंधन ने अपने स्तर पर घटना की जांच शुरू कर दी है। इसमें दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। पुलिस भी घटना को लेकर अलग से जांच कर रही है। घटना से संबंधित सीसीटीवी फुटेज जुटाए गए हैं और मारपीट में शामिल छात्रों की पहचान की जा रही है।

प्रथम वर्ष के छात्रों को छात्रावास खाली करने का निर्देश : निदेशक ने कहा कि गर्मी की छुट्टियां करीब हैं, इसलिए प्रथम वर्ष के छात्रों को छात्रावास खाली करने के लिए कहा गया ताकि वे जून-जुलाई में होने वाली अपनी इंटर्नशिप पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

प्रथम और तृतीय वर्ष के छात्रों के बीच टकराव: इंजीनियरिंग प्रथम वर्ष और तृतीय वर्ष के छात्रों के बीच सोमवार शाम मामूली बात को लेकर शुरू हुए विवाद ने देर रात मारपीट और टकराव का रूप ले लिया था।

बताया जा रहा है कि प्रथम वर्ष का एक छात्र कथित तौर पर किसी बाहरी व्यक्ति के साथ परिसर में था। उसने किसी बात पर तृतीय वर्ष के एक छात्र के साथ विवाद के बाद उसकी पिटाई कर दी। जब इसकी जानकारी उसके अन्य साथियों को हुई तो रात करीब 11 बजे तृतीय वर्ष के छात्रों का एक समूह कई गाड़ियों पर सवार होकर प्रथम वर्ष के छात्रों के हॉस्टल में पहुंचा और कई छात्रों की पिटाई कर दी।

मारपीट की घटना में तीन छात्र घायल: इस घटना में कम से कम तीन छात्र घायल हो गए। घटना की जानकारी मिलते ही संस्थान के निदेशक डॉ. पंकज राय, करियर डेवलपमेंट सेंटर के चेयरमैन डॉ. घनश्याम, छात्रावास अधीक्षक डॉ. आरके. वर्मा, डॉ. प्रशांत कुमार के अलावा सभी छात्रावासों के वार्डन और वरिष्ठ शिक्षक मौके पर पहुंचे। घटना की सूचना पाकर पुलिस भी पहुंची।

बीआईटी सिंदरी की स्थापना 1949 में हुई थी। यह संयुक्त बिहार (बिहार-झारखंड) का पहला सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज है और इसकी ख्याति पूरे देश में रही है।

सरकार का फैसला: मानसून से पहले गरीबों को मिलेगा 3 महीने का राशन

संवाददाता द्वारा

रांची: झारखंड सरकार ने मॉनसून के पहले गरीबों को बड़ी राहत देने का फैसला किया है. सरकार ने फैसला लिया है कि 2.88 करोड़ राशन कार्डधारकों को जून, जुलाई और अगस्त के लिए राशन एक साथ दिया जाएगा.

क्यों लिया गया यह फैसला : यह फैसला मॉनसून और बारिश-बाढ़ की आशंका को देखते हुए लिया गया है. सरकार का उद्देश्य है कि आपदा के समय भी कोई गरीब भूखा न सोए.

कैसे मिलेगा राशन : सरकार ने सभी जिला प्रशासन को निर्देश दिया है कि राशन वितरण में कोई लापरवाही न हो और लाभुकों को समय पर और सुरक्षित ढंग से राशन मिले. खाद्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी खुद वितरण कार्यों की निगरानी करेंगे और लापरवाह अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई करेंगे.

तैयारियां जोरों पर : सरकार ने आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने और हर प्रकार की आपदा से निपटने के लिए पूरी तैयारी की है. मंत्री ने सभी डीएसओ और एफसीआई अधिकारियों की एक आपात बैठक बुलाने का निर्देश दिया है, जिसमें अनाज की व्यवस्था, गोदामों की उपलब्धता और राशन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने पर चर्चा होगी.

झारखंड में सहायक आचार्य परीक्षा के 53,604 आवेदन रद्द

विशेष संवाददाता द्वारा

रांची, झारखंड प्रारंभिक विद्यालय प्रशिक्षित सहायक आचार्य संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा (सहायक आचार्य परीक्षा)-2023 से जुड़े 53,604 अभ्यर्थियों के आवेदन रद्द कर दिए गए हैं. झारखंड निवासी ये अभ्यर्थी सीटेट और पड़ोसी राज्यों से शिक्षक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण हैं. झारखंड हाईकोर्ट के आदेश के बाद झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) ने वैसे अभ्यर्थियों से ऑनलाइन आवेदन प्राप्त किया था. बाद में झारखंड हाईकोर्ट के आदेश को परिमल कुमार व अन्य ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी. इस संबंध में आयोग के परीक्षा नियंत्रक की ओर से मंगलवार को आवश्यक सूचना जारी की गयी.

इनके आवेदनों को किया गया है रद्द : झारखंड कर्मचारी चयन आयोग के परीक्षा नियंत्रक ने कहा है कि परीक्षा से संबंधित याचिका एसएलपी संख्या-4194/2024 परिमल कुमार व अन्य बनाम झारखंड राज्य एवं अन्य के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 30 जनवरी 2025 को न्यायादेश पारित किया था. उस न्यायादेश के आलोक में परीक्षा संबंधी संशोधित विवरणिका व 22 अक्टूबर 2023 के बाद प्राप्त सभी आवेदनों को रद्द कर दिया गया है, जिसमें 53,604 अभ्यर्थियों का आवेदन शामिल है.

जेएसएससी ने दी है ये जानकारी : जेएसएससी ने यह भी कहा है कि परीक्षा के तहत कई अभ्यर्थियों द्वारा एक से अधिक आवेदन समर्पित करने की स्थिति में अद्यतन आवेदन को वैध मानते हुए 22 अक्टूबर 2023 के पूर्व भरे गये आवेदनों को आयोग द्वारा पूर्व में रद्द घोषित किया गया है. एक से अधिक आवेदन भरने की स्थिति में जिन अभ्यर्थियों के आवेदन को आयोग द्वारा रद्द घोषित किया गया है, वैसे 1196 अभ्यर्थियों के 22 अक्टूबर 2023 के पूर्व समर्पित आवेदन को पुनर्बहाल करते हुए उस आवेदन में की गयी प्रविष्टि के आधार पर परीक्षा संबंधी शेष कार्रवाई की जाएगी.

जेपीएससी सिविल सेवा रिजल्ट घोषित करने की मांग को लेकर छात्रों ने घेरा आयोग कार्यालय

संवाददाता द्वारा

रांची, जेपीएससी सिविल सेवा मुख्य परीक्षा परिणाम जारी करने की मांग को लेकर छात्रों का आंदोलन पांचवें दिन भी जारी रहा. जेपीएससी गेट पर राज्यभर से जुटे छात्रों ने इस दौरान जमकर नारेबाजी की और सरकार के उदासीन रवैये पर जमकर भरास निकाली. सरकार की ओर से कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाए जाने के विरोध में मंगलवार को राज्य भर से आए छात्रों ने विरोध प्रदर्शन किया. छात्रों के आंदोलन का समर्थन करने पहुंचे भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष शशांक राज ने कहा कि परीक्षा लिए जाने के 11 महीने गुजर जाने के बाद भी अभी तक परिणाम प्रकाशित नहीं किए गए हैं.

जेपीएससी एक ऐसी संस्था बन गई है, जहां अध्यक्ष की नियुक्ति से लेकर परीक्षा परिणाम प्रकाशित करने के लिए छात्रों को आंदोलन करना पड़ता है. ऐसे में राज्य सरकार छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है, इससे छात्र आक्रोशित हैं और रिजल्ट घोषित करने की मांग को लेकर लगातार आंदोलन कर रहे हैं.

जेपीएससी ने 11वीं से 13वीं सिविल सेवा मुख्य परीक्षा का परिणाम 11 महीने बीतने के बाद भी जारी नहीं कर सकी है. 342 पदों के लिए जारी इस विज्ञापन के तहत प्रारंभिक परीक्षा का परिणाम 22 अप्रैल 2024 को आयोग द्वारा जारी किया गया था, जिसमें 7011 अभ्यर्थी सफल हुए थे. आयोग ने प्रारंभ में जल्दबाजी दिखाई और पीटी रिजल्ट के साथ ही मुख्य परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि भी घोषित कर दी थी.

मगर आयोग की इस जल्दबाजी पर ना जाने किसकी नजर लग गई और यह लंबित होता चला गया. प्रारंभ में रिजल्ट लंबित होने की मुख्य वजह आयोग के अध्यक्ष का कार्यकाल समाप्त होना बताया गया.

तत्कालीन अध्यक्ष नीलिमा केरकेट्टा का कार्यकाल खत्म होने के बाद कई महीनों तक अध्यक्ष के मनोनयन का इंतजार होता रहा. तत्पश्चात जेपीएससी को नये अध्यक्ष के रुप में एल खियांग्ते मिले. छात्रों को उम्मीद जगी की नए अध्यक्ष के आने के साथ ही मुख्य परीक्षा का रिजल्ट घोषित होगा, मगर ऐसा नहीं हो सका जिसके कारण छात्र आंदोलनरत हैं.

छत्तीसगढ़ व झारखंड में एक साथ दबिश से बौखलाहट में हैं नक्सली

क्राइम संवाददाता द्वारा

रांची। छत्तीसगढ़ व झारखंड में एक साथ दबिश के चलते नक्सली बौखलाहट में हैं। दोनों ही राज्यों में बड़ी कार्रवाई से परेशान नक्सली सुरक्षा बलों को चोट पहुंचाने की लगातार कोशिश में जुटे हैं। पुलिस मुख्यालय के अनुसार आइइडी विस्फोट व सुरक्षा बलों को निशाना बनाने की कोशिश इसी बौखलाहट का हिस्सा है। सुरक्षा बलों की लगातार चल रही कार्रवाई व घेराबंदी के चलते नक्सलियों के प्रभाव क्षेत्र सीमट रहे हैं। अपने अस्तित्व की रक्षा खुद को बचाने के लिए नक्सलियों ने आइइडी का घेरा बना रखा है, जिससे आए दिन जवान जख्मी हो रहे हैं। एक दिन पहले ही इसी तरह के आइइडी विस्फोट में जैप वन के एक जवान मनोज कुमार दमाई जख्मी हो गए थे, जिन्हें हेलीकाप्टर से इलाज के लिए रांची लाया गया था। वे इलाजरत हैं।सारंडा क्षेत्र में नक्सल विरोधी अभियान के दौरान अब तक दो दर्जन से अधिक बार आइइडी विस्फोट व ऐसे आइइडी बरामदगी के मामले सामने आ चुके हैं। पिछले तीन महीने में नक्सल प्रभावित छत्तीसगढ़ व झारखंड में नक्सलियों के बड़े नेता व कुख्यात मुठभेड़ में ढेर हो चुके हैं। छत्तीसगढ़ व झारखंड एक साथ प्रभावी तरीके से नक्सल विरोधी अभियान चला रहे हैं।

तीन महीने के भीतर छत्तीसगढ़ के बीजापुर व कांकेर में 30 से अधिक नक्सली मारे गए हैं। वहीं, झारखंड के बोकारो में गत माह 21 अप्रैल को एक करोड़ के इनामी सहित आठ कुख्यात नक्सली भी मारे गए हैं।

इन मुठभेड़ों ने नक्सलियों की कमर तोड़ दी है। छत्तीसगढ़ से जंगल के रास्ते सिमडेगा होकर पश्चिमी सिंहभूम के सारंडा तक नक्सलियों का आना-जाना रहा है। राज्य की सीमा पर चौकसी के बावजूद नक्सली आ-जा रहे हैं। खुफिया विभाग ने झारखंड पुलिस को इससे संबंधित सूचना भी दी है, जिसके बाद नक्सलियों के इस रूट को ध्वस्त करने की कार्रवाई जारी है।

पुलिस के वरिष्ठ सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार नक्सल विरोधी अभियान का एक हिस्सा नक्सलियों के लिए राशन व विस्फोटकों का सप्लाई चेन तोड़ना भी है। सुरक्षा बलों ने उस रूट को भी चिह्नित किया है, जिस रूट से नक्सलियों तक उनके जीवन-यापन की वस्तुएं पहुंचती हैं।इस अनुरूप कार्रवाई भी चल रही है। नक्सलियों के कई मददगार भी पूर्व में गिरफ्तार हुए हैं। उनके आधार पर कई चिह्नित भी हुए हैं, जिनपर कार्रवाई की तैयारी है

करोड़ों का इनाम वाले तीन नक्सली बचे : झारखंड में अब मात्र तीन ऐसे नक्सली बच गए हैं जिनके सिर पर एक-एक करोड़ रुपए का इनाम घोषित है. पूर्व में पांच नक्सलियों के ऊपर एक-एक करोड़ रुपए का इनाम घोषित था, लेकिन एक के गिरफ्तार होने और एक के एनकाउंटर में मारे जाने के बाद अब मात्र 3 नक्सली ही झारखंड में बचे जिन पर करोड़ रुपए का इनाम है.

गौरतलब है कि सोमवार को झारखंड में भाकपा माओवादियों के सेंट्रल कमेटी सदस्य प्रयाग मांझी उर्फ विवेक समेत पूरे दस्ते के सफाए से उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल में एक ही झटके में माओवादी संगठन का खात्मा हो गया. विवेक झारखंड पुलिस के द्वारा मार गिराया गया पहला एक करोड़ का इनामी था. इससे पहले झारखंड पुलिस ने एक करोड़ के इनामी नक्सली को गिरफ्तार करने में ही कामयाबी पाई थी.

कौन कौन बचा : झारखंड में अब मात्र तीन नक्सली बच गए हैं, जिनके सिर पर एक करोड़ का इनाम घोषित है. उनमें पहला नाम भाकपा माओवादियों के ईआरबी सचिव मिसिर बेसरा का है. दूसरा सेंट्रल कमेटी मेंबर पतिराम मांझी और तीसरा आकाश मंडल उर्फ अनमोल है. तीनों के सिर पर एक एम करोड़ का इनाम घोषित है और सबसे खास बात यह है कि के तीनों ही कोल्हान में एक्टिव हैं, लेकिन तीनों सुरक्षा बलों के निशाने पर हैं.

झारखंड पुलिस के एडीजी अभियान संजय आनंद लाटकर ने बताया कि विवेक के मारे जाने के बाद अब मात्र तीन ऐसे नक्सली बच्चे हैं जिनके ऊपर एक-एक करोड़ का इनाम घोषित है. वहीं डीजीपी अनुराग गुप्ता ने बताया कि एनकाउंटर में बच निकले प्रवेश के ऊपर भविष्य में एक करोड़ रुपए का इनाम घोषित किया जा सकता है. इसके अलावा ऐसा कोई नक्सली झारखंड में नहीं बचा है, जो अब एक करोड़ के इनाम के दायरे में भविष्य में आएगा.

प्रशांत बोस था गिरफ्तार होने वाला पहला करोड़ रुपए इनाम वाला नक्सली : झारखंड के नक्सली इतिहास में जिस तरह से सबसे बड़ा एनकाउंटर विवेक का था. उसी तरह सबसे बड़ी गिरफ्तारी प्रशांत बोस की थी. प्रशांत बोस के ऊपर एक करोड रुपए का इनाम था. भाकपा माओवादियों का सेकेंड इन कमान प्रशांत बोस माओवादियों के सभी ईस्टर्न रीजनल ब्यूरो का प्रमुख था.

ईस्टर्न रीजनल ब्यूरो के अधीन ही झारखंड, बिहार, बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़ व पूर्वोतर के सभी राज्य आते हैं. माओवादी संगठन में ईआरबी के प्रमुख का पद दूसरा सबसे बड़ा पद माना जाता है. यही वजह थी कि प्रशांत बोस पर एक करोड़ का इनाम घोषित था. प्रशांत बोस को 2 वर्ष पहले उसकी पत्नी के साथ गिरफ्तार किया गया था.

क्या है वर्तमान में नक्सलियों की स्थिति : झारखंड के सारंडा में फिलहाल तीन नक्सली ऐसे हैं, जिन पर 1 करोड़ का इनाम घोषित है. इनके साथ 40 से 50 की संख्या में नक्सली कैडर मौजूद हैं. लेकिन सभी की घेराबंदी सुरक्षा बलों के द्वारा करके रखी गई है. इसलिए वे चाह कर भी कुछ कर नही पा रहे हैं,. जंगल से निकलते ही वे या तो पकड़े जा रहे हैं या फिर एनकाउंटर में मारे जा रहे हैं.

वर्तमान समय में कोल्हान के अलावा दूसरे जिलों में नक्सलियों की भी मौजूदगी है लेकिन वहां पर उनकी संख्या काफी कम हो गई है. कोल्हान के अलावा चतरा, पलामू, लातेहार, लोहरदगा, गुमला, बोकारो और गिरिडीह में इनामी नक्सली सक्रिय हैं. जिनपर एक से लेकर 25 लाख तक के इनाम घोषित हैं.

झारखंड में नेस्तनाबूद हो चुका है भाकपा माओवादियों का शीर्ष नेतृव: झारखंड में भाकपा माओवादियों के नेतृत्व को लगातार बड़े बड़े झटके लग रहे हैं. भाकपा माओवादियों के सेकेंड इन कमांड प्रशांत बोस उर्फ किशन दा और माओवादियों थिंक टैंक माने जाने वाले कंचन दा उर्फ कबीर समेत दर्जनभर बड़े नक्सली नेताओं की गिरफ्तारी और दर्जन भर बड़े नक्सलियो के आत्मसमर्पण ने भाकपा माओवादियों के सामने नेतृत्व का संकट खड़ा कर दिया है. रही सही कसर एक करोड़ के इनामी विवेक के मारे जाने ने पूरी कर दी.

आलम यह है कि जब भी संगठन अपने आप को मजबूत करने की कोशिश करता है, तभी उन पर पुलिस का कड़ा प्रहार हो जा रहा है. पिछले साल चतरा में एक साथ पांच इनामी नक्सली एनकाउंटर में मारे गए थे. अब एक साथ आठ नक्सली एनकाउंटर में मारे गए, नतीजा संगठन की कमर ही टूट गई है. ■ शेष पृष्ठ 7 पर

भारतीय सेना ने सटीक कार्रवाई से खोली पाकिस्तान की 'परमाणु धमकी' की पोल

पूनम पाण्डे

ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारतीय सेना की ताकत तो दुनिया को दिखी ही है, पाकिस्तान की सबसे बड़ी रणनीति भी हमेशा के लिए खत्म हो गई। वह है बार-बार परमाणु हमले की धमकी देना। यह शुरू से पाकिस्तान की रणनीति का हिस्सा रहा है, लेकिन इस बार भारत की मिलिट्री ने जिस तरह एक्शन लिया, उससे इस 'गीदड़ भभकी' को लेकर पाकिस्तान पूरी तरह एक्सपोज हो गया।

2016 में हुई सर्जिकल स्ट्राइक में आर्मी ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर का आतंकी कैंप नष्ट किया था और 2019 की एयरस्ट्राइक में एयरफोर्स ने खाइबर पख्तून इलाके में आतंकी कैंप को ध्वस्त किया। लेकिन इस बार ऑपरेशन सिंदूर में लाहौर, इस्लामाबाद, बहावलपुर, रावलपिंडी तक निशाने पर रहे। 1971 के बाद पहली बार ऐसा हुआ और भारत की मिलिट्री ने दिखाया कि वह जब चाहे, जहां चाहे सटीक स्ट्राइक कर सकती है। भारत के पास इसकी पूरी क्षमता है। इस कामयाब ऑपरेशन से देश की सैन्य क्षमता ही नहीं चमकी, इस बात का भी दुनिया को अहसास हुआ कि भारत के पास किस तरह की टेक्नॉलजी है। प्रिसिजन स्ट्राइक हुई, यानी टारगेट को सटीक निशाना बनाकर हिट किया गया।

चीन की मदद से अपनी फौज को मजबूत कर रहे पाकिस्तान के लिए यह एक बहुत बड़ा झटका है। बालाकोट एयरस्ट्राइक के बाद पाकिस्तान ने सबसे ज्यादा ध्यान अपने एयर डिफेंस सिस्टम को मजबूत करने पर दिया था। चीन से उसे कई रडार सिस्टम मिले थे। लेकिन इंडियन मिलिट्री ने जिस तरह से पाकिस्तान के एयर डिफेंस सिस्टम और रडार को ही टारगेट बना डाला, उससे पाकिस्तान की ही फजीहत नहीं हुई, चीन के लिए भी असुविधाजनक स्थिति बनी। पाकिस्तान ने अपने सबसे बेहतरीन प्लैटफॉर्म और हथियारों का इस्तेमाल किया था। उसने भारत के कई एयरफील्ड को टारगेट किया, लेकिन भारत के एयर डिफेंस सिस्टम ने लगभग सभी हमलों को नाकाम कर दिया। पाकिस्तान ने जिस तरह से पूरे बॉर्डर पर एक साथ हमला बोला और हाई स्पीड मिसाइल से लेकर सैकड़ों ड्रोन एक साथ इस्तेमाल किए, उसमें भारत के एयर डिफेंस सिस्टम की मजबूती उभरकर सामने आई। जिस बड़े पैमाने पर अटैक हुआ था, अगर वह थोड़ा भी सफल हो जाता तो भारत को बहुत नुकसान होता। लेकिन एयर डिफेंस सिस्टम ने खतरे का समय रहते पता लगाया और उसे निशाने पर पहुंचने से पहले ध्वस्त कर दिया। पिछले कुछ समय से भारतीय सेना में को-ऑर्डिनेशन (समन्वय) और जॉइंटनेस (संयुक्तता) पर काफी काम हुआ है। इस ऑपरेशन में उसका कमाल दिखा। आर्मी, नेवी और एयरफोर्स तीनों ने मिलकर जमीन, आसमान और समंदर सब जगह बढ़त बनाई। छङ्गउ पर फरवरी 2021 से सीजफायर पूरी तरह से लागू हुआ था। इसका इस्तेमाल पाकिस्तान ने LoC के पास अपनी पोजिशन मजबूत करने के लिए किया था। लेकिन आर्मी ने इस ऑपरेशन में पाकिस्तान की कई पोस्ट को भारी नुकसान पहुंचाया। समंदर में इंडियन नेवी का दबदबा पूरी तरह बना रहा। पाकिस्तान की नेवी और उसकी एयर यूनिट ज्यादातर अपने हार्बर के अंदर, तट के पास ही बनी रही। इस ऑपरेशन में भारतीय सेना की एक और ताकत दिखी, वह है नए और पुराने प्लैटफॉर्म के बीच तालमेल। इस ऑपरेशन में विंटेज पिचौरा सिस्टम से लेकर सबसे नए र-400 सिस्टम तक, सबने अपना-अपना काम किया। एयर डिफेंस गन का जिस तरह इस बार इस्तेमाल हुआ, वैसा पहले कभी नहीं हुआ था। पाकिस्तान की तरफ से आए एक साथ सैकड़ों ड्रोन को आर्मी की एयर डिफेंस गन ने हवा में ही मार गिराया। सबसे पहले जंग में ड्रोन का व्यापक इस्तेमाल 2016 में अजरबैजान और आर्मेनिया के बीच हुए संघर्ष में दिखा था। उसके बाद से दुनिया भर की मिलिट्री अपने ड्रोन और एंटी ड्रोन कैपिसिटी को बढ़ाने लगी हैं। ऑपरेशन सिंदूर ने दिखाया कि किस तरह भारत ने इन दोनों मामलों में बढ़ी हुई क्षमता हासिल कर ली है। ब्रह्मोस की ताकतइसी तरह एयरफोर्स के पास मौजूद सबसे पुराने से लेकर सबसे नए तक के, हर जनरेशन के फाइटर जेट का इस्तेमाल किया गया और सब कुछ अच्छी तरह को-ऑर्डिनेशन के साथ हुआ। ब्रह्मोस मिसाइल का एक तरह से कॉम्बैट डेब्यू भी इस ऑपरेशन में हुआ। हालांकि मिलिट्री अधिकारियों ने अपनी आधिकारिक ब्रीफिंग में इसका कोई जिक्र नहीं किया कि किस मिसाइल का इस्तेमाल हुआ, लेकिन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर में ब्रह्मोस की ताकत सबने देखी। ब्रह्मोस को भारत और रूस ने मिलकर डिवेलप किया है और भारत की तरफ से इसका पहली बार इस्तेमाल हुआ।

सुरक्षा के मद्देनजर कई फ्लाइट कैंसल

ब्यूरो

भारत और दुनिया भर की ताज़ा खबरें, ब्रेकिंग न्यूज़ अलर्ट और घटनाक्रमों की जानकारी आपको यहां मिलती रहेगी। इसमें भारत-पाकिस्तान तनाव, राजनीति, अर्थव्यवस्था से जुड़ी खबरें भी शामिल हैं। इंडिगो और एयर इंडिया ने भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव के बीच एहतियाती हवाई क्षेत्र प्रतिबंधों और कड़ी सुरक्षा उपायों का हवाला देते हुए 13 मई तक उत्तरी और पश्चिमी भारत के कई शहरों के लिए उड़ान संचालन को निलंबित कर दिया है। इंडिगो ने शनिवार रात 11:59 बजे तक श्रीनगर, जम्मू, अमृतसर, लेह, चंडीगढ़ और राजकोट से आने-जाने वाली सभी उड़ानें रद्द कर दी हैं। एक बयान में, एयरलाइन ने कहा, हम समझते हैं कि इससे आपकी यात्रा की योजनाएँ बाधित हो सकती हैं, और हुई असुविधा के लिए खेद है। हमारी टीमें सक्रिय रूप से स्थिति की निगरानी कर रही हैं और आपको आगे की अपडेट के बारे में तुरंत सूचित करेंगी। एयर इंडिया ने जम्मू, लेह, जोधपुर, अमृतसर, भुज, जामनगर, चंडीगढ़ और राजकोट के लिए दोतरफा उड़ानें रद्द करने की भी घोषणा की है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व महानिदेशक और पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित डॉ. सुब्बाना अय्यप्पन रहस्यमय परिस्थितियों में मृत पाए गए। श्रीरंगपटना में साईं आश्रम के पास कावेरी नदी में एक शव मिलने के बाद शनिवार, 10 मई को पुलिस को इसकी सूचना दी गई। मैसूर में अपनी पत्नी के साथ रहने वाले डॉ. अय्यप्पन 7 मई को लापता हो गए थे। रविवार शाम को शव की पहचान उनके रूप में होने के बाद अधिकारियों को सूचित किया गया। उनका स्कूटर भी नदी किनारे लावारिस हालत में मिला, जिससे उनकी मौत का रहस्य और गहरा गया। पंजाब के अमृतसर में कथित तौर पर जहरीली शराब पीने से पांच गांवों में कम से कम 14 लोगों की मौत हो गई, जिसके बाद पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि जहरीली शराब पीने से छह लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। ये मौतें पांच गांवों - भंगाली, पातालपुरी, मरारी कलां, थेरेवाल और तलवंडी घुमन में हुई हैं। अमृतसर की डिप्टी कमिश्नर साक्षी साहनी ने 14 लोगों की मौत की पुष्टि की और पत्रकारों को बताया कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मनिंदर सिंह स्थिति का जायजा लेने के लिए मौके पर पहुंचे। पुलिस ने बताया कि उन्होंने घटना में पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए लोगों की पहचान मुख्य आरोपी प्रभजीत सिंह, कुलबीर सिंह, साहिब सिंह, गुरजंत सिंह और निंदर कौर के रूप में हुई है।

पहलगाम हमले पर चौतरफा हो रही ट्रोलिंग से भड़के सत्यपाल मलिक

वैभव पांडे

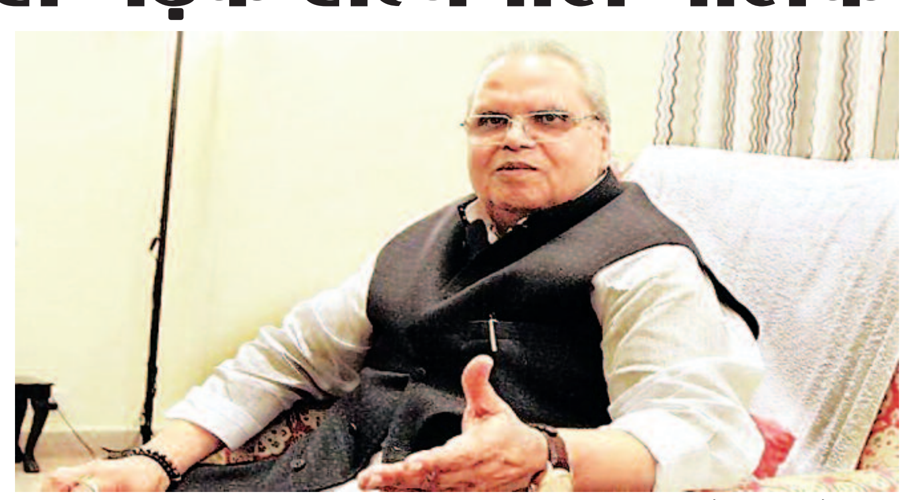

बागपत : पहलगाम आतंकी हमले पर दिए गए बयानों के बाद पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक चर्चा में हैं। पाकिस्तान में उनकी बातों की चर्चा हो रही है, वहीं भारत में उनकी आलोचना हो रही है। इस बीच, उन्होंने खुद को किसान का बेटा बताते हुए कहा है कि वह बागी हो सकते हैं, लेकिन गद्दार नहीं। सत्यपाल मलिक ने पीएम मोदी पर व्यक्तिगत हमले किए थे और उन्हें डरपोक तक कह दिया था। उन्होंने पहलगाम हमले को लेकर सरकार पर लापरवाही का आरोप लगाया था। अब मलिक ने सोशल मीडिया पर जवाब देते हुए कहा है कि वह झुकने वाले नहीं हैं और सरकार से उनके सवाल जारी रहेंगे। जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक अपने बयानों के कारण विवादों में हैं। उन्होंने 6 मई को एक यूट्यूब चैनल को इंटरव्यू दिया था। इस इंटरव्यू में उन्होंने पहलगाम हमले को लेकर सरकार पर कई सवाल उठाए थे। उन्होंने सुरक्षा में लापरवाही का आरोप लगाया था। मलिक ने कहा था कि इस असफलता के लिए पीएम मोदी को माफी मांगनी चाहिए। सत्यपाल मलिक का यह बयान पाकिस्तान में खूब चर्चित हुआ। पाकिस्तान के कई नेताओं और सेना ने उनके बयान का इस्तेमाल किया। उन्होंने अपने बचाव में और भारत सरकार पर आरोप लगाने के लिए मलिक के बयान का सहारा लिया। इस वजह से भारत में कई लोग सोशल मीडिया पर सत्यपाल मलिक को ट्रोल कर रहे थे। अब मलिक ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जवाब दिया है। उन्होंने लिखा है- 'नमस्कार साथियों। बहुत से लोग मुझे सोशल मीडिया पर टारगेट कर रहे हैं, अनाप शनाप मेरे खिलाफ लिख रहे हैं। मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि मैं उस किसान कौम का बेटा हूं। मैं बागी हो सकता हूं लेकिन गद्दार होना मेरी फितरत में नहीं है। मैंने मेरे जीवन में झुकना नहीं सीखा सत्ता पक्ष से मेरे आज भी वही सवाल है। सेना की ओर से पाकिस्तान और इसके कब्जे वाले कश्मीर में आतंकी ठिकानों पर हमले से ठीक एक दिन पहले मलिक ने एक बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि पीएम मोदी ने युद्ध का माहौल बना दिया है, लेकिन वह कुछ नहीं कर पाएंगे। हालांकि, एक दिन बाद ही जब ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया गया, तो उन्होंने सेना की तारीफ की और सरकार के साथ एकजुटता दिखाई। आपको बता दें कि पूर्व बीजेपी नेता सत्यपाल मलिक जम्मू-कश्मीर के अलावा बिहार, गोवा और मेघालय के भी राज्यपाल रह चुके हैं। पद छोड़ने के बाद से वह पीएम मोदी के आलोचक बन गए हैं। वह अलग-अलग मुद्दों पर सरकार की खुलकर आलोचना करते

एक और वार से नेस्तनाबूद हो जाता पाकिस्तान

कीर्तिवर्धन मिश्र

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के जवाब में भारत ने ऑपरेशन सिंदूर चलाकर पाकिस्तान को मुहंतोड़ जवाब दिया। 7 मई की अल-सुबह शुरू हुए इस अभियान में पाकिस्तान के सौ से अधिक आतंकवादी मारे गए। इतना ही नहीं पाकिस्तानी सेना को भी भारत की कार्रवाई में जबरदस्त नुकसान हुआ। इसके बाद जब पाकिस्तान ने भारी गोलाबारी कर एक बार फिर भारत को उकसाने की कोशिश की तो उसे फिर से माकूल जवाब मिला और वायुसेना ने 10 मई आते-आते पाकिस्तान के कई एयरबेस तबाह कर दिया। इस पूरे घटनाक्रम में एक मौका तो ऐसा आ गया, जब भारत ने पाकिस्तान का परमाणु भंडारण क्षेत्र माने जाने वाली किराना हिल्स को निशाना बनाने के साफ संकेत देते हुए सरगोधा एयरबेस को भारी नुकसान पहुंचाया। इस पूरे घटनाक्रम के बावजूद दुनियाभर में भारत-पाकिस्तान संघर्ष के विजेता को लेकर चर्चा जारी है। अब ऑस्ट्रिया के जाने-माने एविएशन एनालिस्ट (हवाई-उड्डयन मामलों के विश्लेषक) टॉम कूपर ने इस पूरे संघर्ष का परत-दर-परत विश्लेषण किया है और भारत को स्पष्ट विजेता बताया है। आइये जानते हैं...

7 मई 2025 : कूपर के मुताबिक, भारत की तरफ से अल-सुबह पाकिस्तान पर कार्रवाई की गई। पाकिस्तान पर इसके बाद दोबारा हमला करने का दबाव बनने लगा। आखिरकार पाकिस्तानी सशस्त्र बलों ने कई अटैक ड्रोन्स लॉन्च किए। इनकी पहचान यीहा-क्क्कऔर सोंगर ड्रोन्स के तौर पर की गई। इसके अलावा पाकिस्तान ने फतेह-1 मल्टीपल रॉकेट लॉन्चर के जरिए रॉकेट भी दागे, जिनकी रेंज 120-140 किमी तक होती है। हालांकि, भारत पाकिस्तान के पलटवार के लिए पूरी तरह तैयार था और उसकी एकीकृत हवाई रक्षा प्रणाली (एयर डिफेंस सिस्टम) पूरी तरह तैयार थी। भारत के एयर डिफेंस सिस्टम लंबे समय से आधुनिक किए जा रहे हैं और अब तक यह पूरी दुनिया में सबसे परिष्कृत प्रणाली बन चुकी है। भारत के एयर डिफेंस सिस्टम में तीन परत हैं। इनमें रूस का निर्मित एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम (रेंज- 380 किमी), भारत-इस्राइल की निर्मित बराक-8एस सर्फेस-टू-एयर मिसाइल (70 किमी रेंज) और आकाश सर्फेस-टू-एयर मिसाइल (रेंज- 25 किमी) शामिल हैं। इसके अलावा भारत की हवाई रक्षा प्रणाली में इस्राइल की निर्मित स्पाइडर सर्फेस-टू-एयर मिसाइल (रेंज- 15 किमी) और बोफोर्स एल70 एंटी-एयरक्राफ्ट बंदूकें भी हैं। नतीजतन पहले ही दिन भारत ने पाकिस्तानी ड्रोन्स-मिसाइलों को मुंहतोड़ जवाब दिया और उत्तर से दक्षिण की तरफ जाने के बीच इन्हें श्रीनगर, जम्मू, पठानकोट, अमृतसर, कपूरथला, जालंधर, लुधियाना, बठिंडा, चंडीगढ़, नल, फलौदी और भुज के ऊपर मार गिराया। भारत में ज्यादातर नुकसान असैन्य क्षेत्रों में हुआ, वह भी ड्रोन-मिसाइलों के मलबे के गिरने से।

8 मई 2025 : पाकिस्तान की तरफ से हमले की कोशिश का भारत ने गंभीरता से जवाब देना शुरू कर दिया। कूपर का कहना है कि भारत ने पाकिस्तान पर जवाबी कार्रवाई के इरादे से 160 हैरोप अटैक ड्रोन्स भेजे, जो कि उसने इस्राइल से खरीदे हैं। पाकिस्तान यह दावा कर सकता है कि उसने इन हैरोप को मार गिराया, लेकिन सच्चाई यह है कि कई हैरोप ड्रोन्स ने रावलपिंडी में पाकिस्तानी सेना के मुख्यालय को निशाना बनाया। कुछ हैरोप तो पाकिस्तानी सेना के कोर को भी निशाना बनाने में कामयाब रहे। इन ड्रोन्स ने चीन की एचक्यू-9 सर्फेस-टू-एयर मिसाइल ऑपरेट करने वाली बटालियन को भी निशाना बनाया। लाहौर में तो एक टुकड़ी को बुरी तरह नुकसान हुआ। इसके अलावा कराची की सुरक्षा के लिए तैनात एचक्यू-9 बटालियन को भी भारी नुकसान हुआ। पाकिस्तान को इन हैरोप ड्रोन्स का सामना करने के लिए अपने एफ-16 तक इस्तेमाल करने पड़े। 8 मई की शाम आते-आते पाकिस्तान की मुश्किलें बढ़ चुकी थीं। पाकिस्तान के ड्रोन्स और फतेह-1 रॉकेट लॉन्चर सिस्टम नाकाफी थे। भारत की रक्षा प्रणालियों ने भी पाकिस्तान के रॉकेट और ड्रोन्स को मार गिराया। पाक के पास सिर्फ 2-3 दिन के ही यूएवी और मिसाइल स्टॉक में रहे होंगे। ऐसे में उसकी परेशानी बढ़ती दिखाई दीं। पाकिस्तान ने इस दौरान एक एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम मार गिराने का दावा किया। हालांकि, एंटी-रडार मिसाइल से यह कैसे संभव हुआ, यह समझ से परे है। लेकिन दावे तो किए ही जा सकते हैं।

9 मई 2025 : टॉम कूपर का कहना है कि इस दिन चीन-पाकिस्तान का प्रोपेगैंडा अपने चरम पर था। वह लगातार हवाई हमलों को लेकर अलग-अलग दावे चला रहे थे। दूसरी तरफ भारत ने भी पाकिस्तान वायुसेना के साब 2000 को मार गिराने का दावा किया। इसके अलावा कई और दावे किए, लेकिन इस पर कोई खास सबूत नहीं मिल पाए।

10 मई 2025 : एविएशन एक्सपर्ट ने कहा कि यह दिन निर्णायक साबित हुआ। इस दिन तक इस्लामाबाद जबरदस्त मुश्किलों में घिर चुका था। न तो पाकिस्तानी ड्रोन्स और न ही उसके फतेह-1 सिस्टम और न ही पाकिस्तानी वायुसेना भारत के एयर डिफेंस सिस्टम को कोई नुकसान पहुंचा पाए। FlightRadar24.com वेबसाइट ने पाकिस्तान की एक फ्लाइट को ट्रैक भी किया, जो कि तुर्किये रवाना हुई थी। यह दर्शाता है कि पाकिस्तान के पास ड्रोन्स और फतेह-1 रॉकेट लॉन्चर सिस्टम भी खात्मे की कगार पर थे। दूसरी तरफ भारत ने एक बार फिर पाकिस्तान को निशाना बनाया और वायुसेना ने ब्रह्मोस और SCALP-E मिसाइलों के जरिए पाकिस्तान के कई एयरबेस को निशाना बनाया। इस दौरान भारत के सुखोई 30एमकेआई, मिराज 2000 और राफेल ने पाकिस्तान को भीषण नुकसान पहुंचाया। टॉम का कहना है कि भारतीय वायुसेना ने अपने जैगुआर फाइटर-बॉम्बर एयरक्राफ्ट के जरिए इस्राइली रैंपेज मिसाइलों से सुक्कुर एयरबेस को निशाना बनाया। वहीं, सरगोधा एयरबेस को निशाना बनाए जाने के दौरान किराना हिल्स में परमाणु भंडारण केंद्र के एंट्रेंस पर बड़े ब्लास्ट भी हुए।

एविएशन एक्सपर्ट ने क्या बताया इस संघर्ष का नतीजा? :-1.टॉम कूपर ने साफ किया है कि पाकिस्तान की भारत को रोक सकने लायक हर कोशिश नाकाम हो चुकी है। मौजूदा समय में तो उसके पास ऐसी कोई ताकत है ही नहीं। दूसरी तरफ भारत लगातार अपनी हवाई रक्षा क्षमताओं को बढ़ा रहा है।

2.पाकिस्तान के पास भारत का सामना करने के लिए युद्धक सामग्री भी काफी कम थी। उसके पास लंबी दूरी तक मार करने वाले हथियारों की भी भारी कमी है। उनके पास 300-400 किमी की रेंज में सटीक निशाना लगाने वाली मिसाइल भी मौजूद नहीं दिखतीं।

3. भारत की ब्रह्मोस और SCALP-E G मिसाइलों के मुकाबले पाकिस्तान अभी काफी पीछे है। एक तरह से पाकिस्तान इस संघर्ष में भारत के मुकाबले काफी पीछे रहा है।

4.भारत के लिए राह तब और आसान हो गई, जब उसने पाकिस्तानी वायुसेना के एयर डिफेंस और तोपों को खत्म कर दिया।

संक्षिप्त समाचार

सादगीपूर्ण तरीके से मना गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी का जन्मोत्सव

● शहीदों को श्रद्धांजलि

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। गुरूदेव श्री श्री रविशंकर जी का जन्मोत्सव सादगीपूर्ण तरीके से मनाया गया।इस अवसर पर सभी सदस्य द्वारा मौन-प्रभातफेरी निकाली गई। नगर भ्रमण के पश्चात् स्थानीय बुढ़वा महादेव मंदिर में सदस्यों द्वारा बीस मिनट का ध्यान किया गया एवं पहलगाम हमले में दिवंगत हुए लोगों के लिए एवं शहीदों की आत्मा की शांति हेतु तथा उनके परिजनों को ईश्वर शक्ति प्रदान करें इस भाव से प्रार्थना की गई। हर साल की तरह भव्य सत्संग न करके शहर के अलग-अलग स्थानों पर सीमित एवं सादगीपूर्ण तरीके से सत्संग हुए। जो इस देश के सैनिकों को समर्पित रहा।

बड़कागांव में सेक्शन 9 लगने की अफवाह जोरों पर , इससे सावधान

बड़कागांव संजय कुमार

बड़कागांव। प्रखंड अंतर्गत बड़कागांव बाज़ार के 2 किलो मीटर रेडियस के आसपास के क्षेत्र में सेक्शन 9 लगाए जाने की चर्चा जोरों पर है, बड़कागांव चौक चौराहो में चर्चा है कि बडकागांव के आसपास के क्षेत्र में सेक्शन 9 लगाने की तैयारी चल रही है जिससे माहौल पूरा गर्म है और इसका सीधा असर जमीन खरीद बिक्री पर पड़ रहा है। जहां एक ओर एनटीपीसी कंपनी जब से बड़कागांव क्षेत्र में खनन का कार्य शुरू की है दिन प्रतिदिन बड़कागांव के आसपास की जमीन की कीमत तेजी से बढ़ रही है इसका कारण है, कई गाँव के लोग विस्थापित हो चुके है और वे बडकागांव में जमीन ले कर घर बनाना चाहते हैं। लेकिन वही कुछ महीनो से यह चर्चा है कि बड़कागांव के आसपास के क्षेत्र, जो कोयला खनन परियोजना से बहार थे, जहाँ बाज़ार है, लोगों का कारोबार है, कॉलोनी बसी है, वहां भी सेक्शन 9 लगाया जाएगा। इस खबर से बड़कागांव में हडकंप मचा हुआ है और यहाँ के निवासी हताश, निराशा और परेशान है, कि आखिर क्या बड़कागांव का मार्केट भी खत्म कर देगी कंपनी, क्या कंपनी लोगो का स्वरोजगार छिनना चाहती, ऐसे कई सवाल है जिससे लोगों के अंदर कंपनी के प्रति गुस्सा और असंतोष की भावना पैदा हो रही है। कई लोगों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि अगर एनटीपीसी, बड़कागांव मार्केट, पटिवा बाध, ढेंगा कॉलोनी के आस पास के एरिया को उठाने की बात करेगी तो, ऐसा उलगुलान होगा की एनटीपीसी को जड़ से उखाड़ कर बड़कागांव से फेंक दिया जाएगा। क्योंकि बड़कागांव टाउन एक बहुत बड़ा मार्केट हब है, जहां हजारों लोगों का रोजगार बसा हुआ है और लाखों लोगों की जीविका चलती है। हालांकि सेक्शन 9 लगने की बात को लेकर पत्रकार रंजन कुमार ने अंचलाधिकारी से पूछा तो उन्होंने बताया की ऐसी कोई भी चिट्ठी या कोई सूचना डीसी कार्यालय या किसी भी दुसरे सरकारी श्रोत से मुझे नहीं मिली है ,कि बड़कागांव टाउन के आसपास के क्षेत्र में सेक्शन 9 लगाया जाएगा या लगने वाला है। यह बिल्कुल भ्रामक अफवाह है। जब तक की अंचल या प्रखंड कार्यालय से इस तरह की किसी भी सूचना ऑफिशियल तौर पर नहीं दी जाती है ,इस पर विश्वास ना करें।

बड़कागांव के किसान प्रवीण कुमार को पौधा नर्सरी तैयार कर के बिक्री करने को मिला, एम ओ यू

बड़कागांव संजय कुमार

बड़कागांव। बड़कागांव कृषि प्रणाली का पहाड़ी एवं पठारी अनुसंधान केंद्र आईसीएआर प्लांडू नामकुम रांची झारखंड में आयोजित कृषक मिलन समारोह फार्मर्स एंड साइंटिस्ट इंटरेक्शन सेरेमनी मैं डॉक्टर हिमांशु पाठक निदेशक आईसीआरईएसएटी हैदराबाद के हाथों बड़कागांव निवासी प्रवीण कुमार एवं सूरज साहू बेड़ो रांची को पौधा नर्सरी तैयार कर बिक्री हेतु एम ओ यू पत्र प्रदान किया गया। समारोह में क्षेत्रीय निदेशक पटना आईसीएआर उत्तरी भारत के वैज्ञानिक डॉक्टर अनूप कुमार दास एवं प्लांडू के कई वैज्ञानिक और झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों के कृषक शामिल थे। बताते चलें कि प्रवीण कुमार पिछले 5-6 वर्षों से लगातार परवल की खेती बड़कागांव में करते आ रहे हैं। आमतौर पर परवल की खेती वर्ष भर की जाती है। ये बिहार, पश्चिम बंगाल, पूर्वी उत्तर प्रदेश में सामान्य तौर पर उगाई जाती है वहीं राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, असम और महाराष्ट में भी उगाई जाती है। माना जाता है कि परवल की खेती गंगा किनारे ही होती है। झारखंड की मिट्टी और जलवायु परवल के लिए उपयुक्त नहीं मानी जाती। पर इस धारणा को नकारते हुए बड़कागांव के प्रवीण कुमार ने परवल की खेती कर समाज को यह बता दिया कि अगर लगन व जज्बा हो तो कोई काम असंभव नहीं है। जिसके परिणाम स्वरूप आज उन्हें पौध तैयार बिक्री हेतु एम ओ यू प्रदान किया गया। मौके पर डॉ हिमांशु पाठक डीजी आईसीआरआईएसएटी हैदराबाद, डॉ अनूप दास डायरेक्टर आईसीएआर, आरसीईआर पटना, डॉ आरएस पान, हेड आईसीएआर, आरसीईआर रांची, उज्जवल कुमार हेड डीएसईई, आईसीआरआर पटना एवं डॉक्टर पी भावना वैज्ञानिक रांची मुख्य रूप से उपस्थित थे।

प्राणिक हीलिंग फाउंडेशन ट्रस्ट ऑफ झारखंड द्वारा वेसाक फुल मून मेडिटेशन का सफल आयोजन

शांति, ऊर्जा और सामूहिक प्रार्थना का अनुपम संगम

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। प्राणिक हीलिंग फाउंडेशन ट्रस्ट ऑफ झारखंड द्वारा बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर वेसाक फुल मून मेडिटेशन कार्यक्रम का भव्य आयोजन हजारीबाग में किया गया। यह ध्यान-सत्र बीकानेर एक्सप्रेस परिसर में सोमवार को शाम 4 बजे से 5ः30 बजे तक आयोजित हुआ, जिसमें शहर के विभिन्न सामाजिक संगठनों, चिकित्सा संस्थानों और आम नागरिकों की बड़ी संख्या में सहभागिता रही। कार्यक्रम की शुरुआत आध्यात्मिक ऊर्जा और शांति के मंत्रों के साथ हुई। उपस्थित लोगों को वेसाक पर्व का महत्व समझाया गया, जिसे वर्ष का सबसे पवित्र और आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली दिन माना जाता है। इस दिन भगवान बुद्ध के पृथ्वी पर अवतरण और दिव्य ऊर्जा के संचार का प्रतीक माना जाता है। वेसाक फुल मून मेडिटेशन के दौरान सभी प्रतिभागियों ने सामूहिक रूप से ध्यान किया, अपनी मनोकामनाओं को ब्रह्मांडीय ऊर्जा में समर्पित किया और समस्त जीवों के कल्याण हेतु प्रार्थना की। ध्यान-सत्र में देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में कार्यरत हमारे सैनिकों के लिए भी आंतरिक शक्ति, साहस और मानसिक बल की सामूहिक ऊर्जा भेजी गई।

कार्यक्रम में वसुंधा कल्याण संस्था की अंजलि कुमारी अपनी टीम के साथ कार्यक्रम में शामिल हुईं। हजारीबाग मेडिकल कॉलेज के कई छात्र-छात्राएँ भी इस कार्यक्रम का हिस्सा बने। शहर के विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़े लोगों और युवाओं ने भी इसमें सक्रिय भागीदारी की। सत्र के दौरान प्रतिभागियों को प्राणिक हीलिंग के मूल सिद्धांतों से अवगत कराया गया। बताया गया कि यह एक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक विधि है जो शरीर की प्राण ऊर्जा को संतुलित कर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाती है। यह न केवल बीमारियों से लड़ने में सहायक है, बल्कि व्यक्ति के भीतर शांति, संतुलन और आत्मबल भी विकसित करती है। सदस्या लता जैन पांड्या एवं नेहा जैन ने जानकारी दी कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को आत्मिक जागरूकता, ध्यान की महत्ता और सामूहिक ऊर्जा के प्रभाव से जोड़ना है। उन्होंने कहा कि जब हम एक साथ ध्यान करते हैं, तो एक सकारात्मक शक्ति उत्पन्न होती है, जिसे समाज, राष्ट्र और विश्व शांति के लिए समर्पित किया जा सकता है। विशेषकर वर्तमान भारत-पाकिस्तान संबंधों में शांति और सद्भाव की प्रार्थना सामूहिक ध्यान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही। सभी प्रतिभागियों ने इस सत्र को अत्यंत शांति, आनंद और ऊर्जा से भरपूर बताया और भविष्य में इस तरह के कार्यक्रमों में पुनः सहभागिता की इच्छा जताई।

ओएसिस स्कूल का बारहवीं सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड परीक्षा में शत प्रतिशत परिणाम

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। हज़ारीबाग़ शहर के कल्लू चौक मंडई रोड स्थित ओएसिस स्कूल ने सत्र 2024 -25 बारहवीं सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड परीक्षा में शत प्रतिशत परिणाम हुआ है। इस सत्र में विद्यालय के कुल 169 विद्यार्थियों ने परीक्षा में शामिल हुआ जिसमे आदित्यय गुप्ता (कॉमर्स) 95% अंकों के साथ सर्वोच्च स्थान हासिल किया जबकि सामिया (साइंस), ओवैस उल हक (साइंस) ने 93.4% अंकों के साथ दूसरे स्थान पर एवं तनिशा परवीन (आर्ट्स) ने 91% अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहा द्य 90% से अधिक अंक कुल 8 विद्यार्थियों ने हासिल किया, 85% से 90% के बीच 24 विद्यार्थियों ने जबकि 42 विद्यार्थियों ने 80% से 85% के बिच अंक प्राप्त किया। विद्यालय के प्राचार्य अरविन्द कुमार ने सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा की यह सफलता की उनकी पहली सीढ़ी है। विद्यालय के चेयरमैन शब्बीर अहमद ने विद्यालय की शानदार सफलता के लिए स्कूल के कुशल प्राचार्य अरविन्द कुमार, विद्यार्थियों, अभिभावकों, एवं सभी मार्गदर्शकों को बधाई देते हुए कहा कि बोर्ड के विद्यार्थियों ने शानदार रिजल्ट हासिल किया है जो की विद्यालय के प्राचार्य के कुशल नेतृत्व में शिक्षक- शिक्षिकाओं के शिक्षण कौशल को दिखाता है। विद्यालय के कोषाध्यक्ष तनवीर अहमद ने कहा की ये सभी सफल विद्यार्थी समाज एवं राष्ट्र के धरोहर हैं। उन्होंने आशा व्यक्त कि भविष्य में वे देश का नाम रौशन करेंगे अभी उन्हों ने स्कूल एवं हजारीबाग का नाम रौशन किया वे आगे भी इसी प्रकार मेहनत करते रहे। उन्होंने उनके लिए उज्जवल भविष्य की कामना की। विद्यालय के उपप्राचार्य मेराजुल हक, ऐकेडमिक हेड सिस्टर उदया ऐकेडमिक इंचार्ज मुज़म्मिल हुसैन, वरिष्ठ शिक्षक सादुल हसन, नसीम अख्तर सय्यद उजैर रिजवी, मनोज कुमार, कुणाल अभिषेक सहित सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भी सभी सफल विद्यार्थियों को उनकी सफलता के लिए बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

विद्यालय के शिक्षकों में विद्यार्थियों की सफलता से काफी खुशी है। इस सफलता पर उन्होंने ने आपस में एक दूसरे को मिठाई खिलाई। इस शानदार रिजल्ट से जहाँ एक ओर उत्साहित विद्यार्थियों ने जश्न मनाया वहीँ उनके अभिभावकों में भी काफी हर्ष का माहौल रहा। विद्यालय के इस शानदार सफलता के लिए बी एस राठौर, समाजसेवी बटेश्वर मेहता, सतेन्द्र कुमार दीपक, विकास कुमार गहलौत, नदीम अख्तर, अबरार आलम, सुनील शर्मा, सोनी प्रिया सहित कई प्रबुद्ध जनो ने विद्यालय के प्राचार्य सहित पुरे विद्यालय परिवार को शुभकामनाएँ दी।

मुस्लिम समाज की शादियों में डीजे पर लगा विराम

● दहेज प्रथा पर भी विराम लगाने की पहलः शमशेर

बड़कागांव संजय कुमार

बड़कागांव। इन दिनों बड़कागांव प्रखंड क्षेत्र में शादी-विवाह का कार्यक्रम जोर शोर से चल रहा है। क्षेत्र में कई लड़के लड़कियों की शादी हो गया वहीं कई का शादी होने वाला है।पर विवाह कार्यक्रम में सबसे अजीब बात यह देखने को मिल रहा है की लड़का पक्ष की ओर से बारात तो जा रही है।पर बारातियों के साथ में अब डीजे नहीं जा रहे हैं।डीजे पर पूर्ण रूप से विराम लग गया है।बताते चले की महज कुछ वर्ष पहले बड़कागांव के कई ओलमा इकराम वा कई मस्जिदों के इमाम ने बैठक कर सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए एक बड़ा फैसला लिया था।वह यह की शादी-विवाह में डीजे और पर रोक लगाने का निर्णय लिया था।उनका कहना था कि अगर मुस्लिम समाज के लोग शादी-विवाह में डीजे बजाते हैं तो उन पर भारी जुर्माना लगाया जाएगा।और सबसे बड़ी निर्णय यह था कि शादी के दौरान काजी साहब निकाह नहीं पढ़ाएंगे।जो कोई भी इस नियम का उल्लंघन करेगा उसकी शादी में कोई भी मुस्लिम समाज का व्यक्ति खाना नहीं खाएंगे।यह फैसला समाज में आग की तरफ फैल गया था। लोगों में चर्चा का विषय बन गया था। कई लोग या कहते तक नहीं रहे थे कि यह नहीं चलेगा निर्धन गरीब लोग मान जाएंगे पर अमीर लोग दंड देंगे तो देंगे पर डीजे बाजा के साथ ही बाराती लेकर जाएंगे।समय बितता गया और अंताः परिणाम यह निकला कि पूर्ण रूप से डीजे बजा के साथ बराती जाने पर विराम लग गया।यह फैसला समाज में बढ़ती फिजूल खर्ची और शोर शराबे को दूर करने के लिए लिया गया था।समाज के लोग चाहते हैं की शादी-विवाह सरल और पारंपरिक तरीके से हो।बिना किसी फिजूल खर्ची और शोर शराबे के बिना शादी-विवाह का कार्यक्रम संपन्न हो।और आज बड़कागांव ही नहीं जिले एवं राज्य के कई गांव में शादी विवाह में डीजे बाजा पर पूर्ण रूप से इस अभियान में सफलता मिल गई है।डीजे बाजा बंद होने से फिजूल खर्ची , समय पर विवाह संपन्न होना सहित कई फायदे हुए हैं।

दहेज प्रथा पर कब लगेगा विराम

बड़कागांव प्रखंड के कांडतरी पंचायत अंतर्गत ग्राम महुदी निवासी मो. शमशेर आलम का कहना है आज के समाज में दहेज प्रथम एक बहुत बड़ी प्रताड़ना एंव गंभीर समस्या है।और इसकी खिलाफ कई कानून बनाए गए हैं। दहेज प्रताड़ना के मामलों में महिलाओं को शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना का सामना करना पड़ रहा है।और उनकी जान भी जा सकती है।कानून तिलक दहेज को अपराध मानते हैं।और तिलक - दहेज लेने या देने को प्रतिबंधित करते हैं।दहेज से संबंधित अब तक क्षेत्र में दर्जनों घटनाएं घट चुका है।इसलिए क्षेत्र के तमाम अलीम ओलमा , काजी, बुद्धिमान लोग जिस तरह से डीजे को लेकर पहल किया।अगली कड़ी में तिलक दहेज प्रथा को लेकर पहला किया जाए तो समाज हित में बेहतर होता।बस जरूरत है तो समाज के जागरूक लोगों को आगे आकर इसमें पहल करने की क्योंकि आज समाज के अधिकांश लोग शिक्षित हैं, जागरुक हैं।ऐसे भी अब कई लोग अपने लड़के का विवाह बिना तिलक लिए निकाह करवा रहे हैं और लड़के राजी खुशी से निकाह पढ़ रहे हैं।

नेशनल पब्लिक स्कूल न्यू एरिया हजारीबाग की साक्षी शगुन कक्षा 12वीं में 96% लाकर बनी स्कूल टॉपर

● स्कूल के सभी विद्यार्थियों ने शत प्रतिशत परिणाम दिए

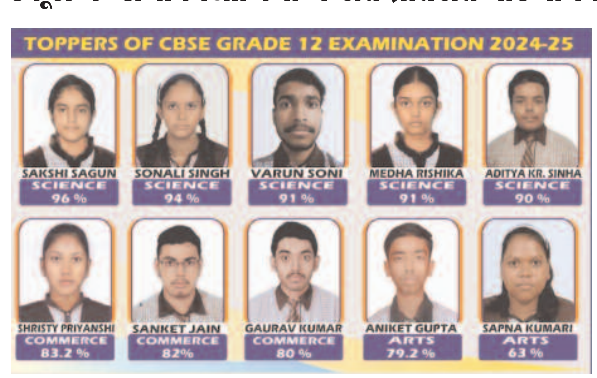

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। सीबीएसई बोर्ड द्वारा घोषित 2025 की 12वीं सीनियर सेकेंडरी परीक्षा 2025 में नेशनल पब्लिक स्कूल के छात्र छात्राओं ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी सफलता का कीर्तिमान रचा।

विज्ञान में साक्षी शगुन ने 96% लकार स्कूल टॉपर बनी। वाणिज्य में सृष्टि प्रियांशी 83.2% लाकर बनी टॉपर। कला में अनिकेत गुप्ता ने 79.2% लाकर विद्यालय टॉपर रहे

विज्ञान संकाय में -सोनाली सिंह 94%, मेधा ऋषिका 91%, वरुण सोनी 91%, आदित्य कुमार सिन्हा 89.4%, उमंग अग्रवाल 89त्न, तन्मय राज 87% अंक प्राप्त किया। वाणिज्य संकाय में- संकेत जैन 82%, गौरव कुमार 80% अंक प्राप्त किया कला संकाय में- सपना कुमारी 63% अंक प्राप्त किया उपर्युक्त मेधावी बच्चों के अलावा स्कूल के सभी बच्चों ने सभी संकाएं विज्ञान, वाणिज्य एवं कला में बेहतर अंक प्राप्त कर स्कूल एवं अपने माता-पिता का मान बढ़ाया । उत्कृष्ट प्रदर्शन पर विद्यालय के प्राचार्य धीरेंद्र कुमार सिंह ने सभी सफल विद्यार्थियों को एवं उनके परिवार जनों को शुभकामनाएं दी एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। साथ ही साथ उप प्राचार्य कुमारी सोनी ने कहा कि छात्र-छात्राओं के इस प्रदर्शन में उनके साथ देने के लिए स्कूल के शिक्षक और अभिभावक गण को भी ढेर सारी शुभकामनाएं।

झारखंड जन संस्कृति मंच हजारीबाग का मासिक कवि सम्मेलन

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। झारखंड जन संस्कृति मंच हजारीबाग का मासिक कवि सम्मेलन 12 मई को पेंशनर कार्यालय में आयोजित हुआ। बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर चार घंटे तक चले कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कवि साहित्यकार उपस्थित थे। अध्यक्ष प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुरेन्द्र सिंह मुख्य अतिथि संध्या झा और विशिष्ट अतिथि संजय प्रसाद थे। विषय प्रवेश कराते पहले सत्र में शंकर गुप्ता ने गौतम बुद्ध के उपदेश की विस्तृत चर्चा करते हुए उनके बताए मार्ग पर चलने की बात कही। अवकाश प्राप्त अभियंता पांडे गोपीकृष्ण सहाय ने विभिन्न प्रसंगों के साथ बुद्ध की कई सारगर्भित बातों पर विस्तारित वक्तव्य दिया। कवियत्री संध्या झा ने बहुत सारी खोज पूर्ण और जानकारी से भरपूर बुद्ध के प्रसंग और उपदेश को बताया। कवियत्री सह प्राध्यापिका डाक्टर प्रमिला गुप्ता ने कहा कि प्रकृति और जीवन का अद्भुत संतुलन ही बुद्धभाव है। बुद्ध पर सारगर्भित बातों का जिक्र करते हुए प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुरेन्द्र सिंह ने इस अवसर पर प्रकृति से लबरेज कविता का शानदार पाठ किया जिसे हर किसी ने खुब सराहा। पांडे गोपीकृष्ण सहाय ने मातृदिवस और बुद्ध पर दो रचनाएं सुनाकर प्रशंसा पाई। डा प्रमिला गुप्ता ने प्रकृति पर अपनी कविता नदी मेरे भीतर बहती है सुनाई जिसे खुब सराहना मिली। शिक्षक कवि संजय हजारीबागी ने बुद्धम शरणम् गच्छामि संघम शरणम् गच्छामि धम्मम शरणम् गच्छामि का विस्तार से अर्थ बताते हुए अपनी दो रचना मां और बुद्ध पर सुनाई जिसे खुब प्रसंशा मिली। खोरठा एवं हिन्दी के प्रसिद्ध कवि अनंत ज्ञान ने अत्यंत मार्मिक और संवेदनशील रचना फोन रिचार्ज करेगा कौन? मां भी हो जाएगी मौन सुनाकर श्रोताओं के दिल में जगह बनाई। डाक्टर कविता सिन्हा ने पहलगाम में आतंकी घटना पर आधारित रचना सुनाई।कवि विजय कर्ण ने गर्भवती महिला और अंदर के भ्रूण के संवाद पर अपनी कविता का पाठ किया। पेंशनर कार्यालय के उपाध्यक्ष राजु विश्वकर्मा ने पेंशनर समाज का सदस्य बनने का आग्रह करते हुए अपनी हास्य व्यंग से भरी कविता हम सत्ता में अयबो तो हजारीबाग के कलकत्ता बनयबो सुनाकर हंसी ठहाके का जबरदस्त माहौल बनाया। अवकाश प्राप्त बैंक अधिकारी हितनाथ झा ने झरिया के जल संकट और वर्तमान राजनीतिक रचना सुनाई। जनवादी कवि चित्रकार अवकाश प्राप्त बैंक अधिकारी टीपी पोद्दार ने व्यावसायिक एवं व्यापारिक डाक्टर पर आधारित अपनी कविता प्राइवेट अस्पताल सुनाई जिसे खुब सराहना मिली। अवकाश प्राप्त वन अधिकारी अजय कुमार ने मातृदिवस पर मां पर लिखी दो रचनाएं सुनाकर प्रशंसा पाई। प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुरेन्द्र सिंह ने सास-दामाद संवाद वाली हास्य खोरठा कविता सुनाई। कवयित्री सह शिक्षिका सुप्रिया रश्मि ने प्रकृति से जुड़ी अपनी कविता-गीत सुनाकर खुब प्रशंसा पाई। अवकाश प्राप्त बैंक अधिकारी कवि प्रमोद रंजन ने आओ मिल मंथन करें युद्ध किसके विरुद्ध है और मां पर मार्मिक रचना सुनाई जिसे खुब सराहना मिली। डा साकेत पाठक ने कहा कि अपने आप को पहचाना ही बुद्ध है। मां पर लिखी गई कविता के साथ ही केदारनाथ अग्रवाल की रचना करोड़ो का गाना सुनाया जिसे श्रोताओं ने खुब सराहा। कवि अधिवक्ता अरविंद झा ने अपने पति से दिल्ली बनारस न घुमाने की फरमाइश करती पत्नी झारखंड के गौरियाकरमा, भद्रकाली कनहरी वगैरह जाने को घुमाने को कहती हैं गीत सुना कर तारीफ पाई। शायर आसिफ़ ने आज मोबाइल के लिए पागल लोगों पर तंज करते हुए ग़ज़ल और शायरी भी सुनाई जिसे खुब सराहा गया। पुलिस अधिकारी मेजर संजय कुमार ने हास्य व्यंग से सराबोर ढेरों वाक्या और प्रहसन सुनाई साथ ही देश के वीर जवानों पर रचना वर्दी देश की शान? है सुनाकर हर श्रोताओं के दिल में जगह बनाई। रचनाकार उषा सहाय, मिथिलेश कुमार कर्ण, प्रभुनाथ प्रसाद एवं अन्य साहित्यकार अपनी रचनाओं का पाठ किया। अध्यक्ष ने सभी रचनाकारों को साधुवाद देते हुए हर कविता की तारीफ की। मंच संचालन डॉ. प्रमिला गुप्ता ने और धन्यवाद ज्ञापन शंकर गुप्ता ने किया।

संक्षिप्त समाचार

डीपीएस, शंकरपुर, हजारीबाग के 2025 बैच ने सीबीएसई 10वीं की परीक्षा में मचाया धमाल, 96.8% के साथ साक्षी कुमारी बने स्कूल टॉपर

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के 10वीं की परीक्षा के नतीजे मंगलवार को घोषित हुए। हजारीबाग के बड़कागांव रोड के शंकरपुर स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) का 2025 का धमाकेदार प्रदर्शन रहा। 2025 पहले बैच के शानदार प्रदर्शन से स्कूल परिवार गदगद है। डीपीएस, हजारीबाग से 10 वीं परीक्षा में पहली बार कुल 118 विद्यार्थियों ने भाग लिया। जिसमें सभी ने शत प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण होकर यह साबित कर दिया कि डीपीएस में गुणवत्त आधारभूत संरचना के साथ गुणवत्त शिक्षा भी प्रदान किया जाता है।
डीपीएस, शंकरपुर, हजारीबाग का औसत प्रतिशत 80.94 रहा।

- 95% से अधिक - 5 , विद्यार्थी
- 90% से अधिक 20 , विद्यार्थी
- 80-90% - 40 , विद्यार्थी
- 70- 80% - 26 विद्यार्थी और
- 70 % से कम 43 विद्यार्थी ने हासिल किया।

स्कूल के साक्षी कुमारी ने 96.8% लाकर स्कूल टॉपर बनने का गौरव प्राप्त किया। दूसरे स्थान पर आर्यन कुमार 96, प्रतिशत तीसरे स्थान पर प्रियशी चौधरी 95.8 % स्थान प्राप्त किए।
स्कूल की निदेशिका निशा जायसवाल और प्रधानाध्यापिका पायल बंसल ने सफल विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की और शानदार रिजल्ट के लिए विद्यार्थियों, स्कूल के शिक्षक शिक्षिकाओं एवं अभिभावकों को बधाई दिया।

सीबीएसई कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम घोषित, संत मरियम का आयुष 95.2% के साथ बना विद्यालय टॉपर

● बच्चों की मेहनत एवं शिक्षकों के समर्पण का परिणाम है संत मरियम का शानदार परिणामः अविनाश देव

मेदिनीनगर। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम घोषित हो गया है। इस बार संत मरियम स्कूल का परिणाम काफी उत्कृष्ट रहा। विज्ञान संकाय में आयुष रंजन सिंह 95.2त्न के साथ विद्यालय टॉपर रहा, वहीं नीरज महतो 92.4% के साथ दूसरे स्थान और आदित्य गौरव 90.6% के साथ तीसरे स्थान पर रहा। वाणिज्य संकाय में अभिजीत अग्रवाल 71.4% के साथ विद्यालय टॉपर, मोमिना कौसर 66.8% और आर्यन कुमार मेहता 66.4% के साथ क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। विद्यालय के चेयरमैन अविनाश देव ने बताया कि विगत वर्षो की अपेक्षा इस वर्ष परीक्षा परिणाम काफी उत्कृष्ट रहा। बच्चे, अभिभावक एवं शिक्षक काफी प्रसन्न हैं। विद्यालय हर बार अपना नया रिकॉर्ड बनाता जा रहा है, चाहे वह शैक्षणिक शिक्षा की बात हो या फिर अन्य खेल गतिविधियों की। विभिन्न क्षेत्रों में संत मरियम के बच्चे अपना जौहर दिखा रहे हैं। आगे उन्होंने कहा कि जल्द ही 12वीं कक्षा में सर्वोत्तम अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को सम्मानित किया जाएगा।

प्रखंड के जनप्रतिनिधियों द्वारा क्रिकेट टूर्नामेंट का किया गया शुभारंभ

● दो दिवसीय बहेरा प्रीमियर लीग का किया गया शुभारंभ
● टूर्नामेंट का फाइनल मैच खेल जाएगा आज

आदिवासी एक्सप्रेस संवादाता चरही
चरही। मंगलवार को चुरचू प्रखंड के बहेरा पंचायत में दो दिवसीय बहेरा प्रीमियर लीग का शुभारंभ चुरचू प्रखंड प्रमुख निरंजन प्रसाद नायक, चुरचू प्रखंड जिला परिषद सदस्य बासुदेव करमाली, चुरचू प्रखंड मुखिया संघ अध्यक्ष सह बहेरा पंचायत मुखिया देवकी महतो, चनारो पंचायत मुखिया ब्रजबिहारी महतो, चुरचू प्रखंड के पूर्व उप प्रमुख चौलेश्वर महतो के द्वारा विधिवत बैटिंग बॉलिंग कर टूर्नामेंट का शुभारंभ किया गया। इस दौरान कमेटी के सदस्यों ने सभी जनप्रतिनिधियों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। उद्घाटन मैच ग्रुप ए और ग्रुप बी के बीच खेला गया जिसमें ग्रुप बी के कप्तान टिंकू ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया निर्धारित 8 ओवर में 120 रन का विशाल स्कोर किया। वहीं जवाबी पारी खेलते हुए ग्रुप ए की टीम जीत की लक्ष्य से 26 रन दूर रह गई।

पर्यावरणविद ने अपने पुत्र के जन्मदिन व अपनी शादी की सालगिरह पर किया पौधरोपण

● जन्मदिन पर अनाथालय के बच्चों को कराया जलपान , घर के अन्य परिजनों के जन्मदिन पर अनाथालय जाने का निर्णयः डॉ कौशल, मुखिया पूनम, प्रो अरुण पार्षद अमित

● बढ़ती प्रदूषण, जल संकट, भीषण गर्मी और जलवायु परिवर्तन रोकना है तो अपने धर्म के साथ अपनाना होगा पर्यावरण धर्म : डॉ कौशल

पर्यावरण धर्म की शपथ दिलाते पर्यावरण धर्मगुरु कौशल

मेदिनीनगर, पलामू, झारखंड
शहर के बाईपास रोड स्थित केपीजे कंपलेक्स के पीछे अवस्थित पर्यावरण भवन के उपरी तल के आकाश बाग और छतरपुर प्रखंड के डाली पंचायत के कुंडली में विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह पर्यावरण धर्मगुरु व वन राखी मूवमेंट के प्रणेता पर्यावरणविद ट्री मैन डॉ कौशल किशोर जायसवाल ने अपने बड़े पुत्र अरुण कुमार जायसवाल के जन्मदिन व अपनी शादी की सालगिरह को यादगार बनाने के लिए पर्यावरण धर्म के तहत थाईलैंड प्रजाति के आम का पौधा लगाया। कार्यक्रम में शामिल सभी लोगों को पर्यावरणविद ने पर्यावरण धर्म के आठ मूल ज्ञान मंत्रों की शपथ भी दिलाई। पौधरोपण के बाद अपने संक्षिप्त संबोधन में उन्होंने बढ़ते प्रदूषण, जल संकट, भीषण गर्मी, और जलवायु परिवर्तन पर चिंता जताते हुए कहा कि अगर जलवायु परिवर्तन रोकने की दिशा में ठोस व कारगर कदम नहीं उठाए गए तो लोगों को जल संकट के साथ ऑक्सिजन की समस्या से भी जूझना होगा।
उन्होंने कहा कि उनके जीवन में 10 मई का दिन बहुत शुभ है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2005 में वे आकाश बाग का निर्माण 10 मई को किया था। इसीतरह वर्ष 1967 में जंगल लगाओ जंगल बचाओ अभियान के तहत ट्रेंच खोदने का काम भी उन्होंने 10 मई को ही किया था। इसीतरह परमाणु ऊर्जा को खत्म कर सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा का इस्तेमाल करने के लिए सुंदरलाल बहुगुणा के साथ 2008 मैं बोधगया में दो दिवसीय धरना दिया था। वहीं 10 मई को कोसी नदी से हुए नुकसान को पुनर्वास के लिए पटना में सुंदरलाल बहुगुणा के साथ आंदोलन की शुरुआत किया था। वर्ष 2009 के 10 मई को वे अपनी न8जी खर्चो से तीन दिवसीय धरना जिले के चेंगवना धाम पर दिया था। वर्ष 2023 में 10 मई को उन्होंने तीन अनाथ लड़कियों की शादी अपने निजी खर्चो पर किया था। जिसमें दो अनाथ बच्ची को शादी कराने के बाद एक का कन्यादान उनको धर्मपत्नी व दूसरे का कन्यादान उनके पुत्र जिला परिषद अमित कुमार जायसवाल ने किया था।
संस्था के प्रधान सचिव और ग्राम पंचायत डाली बाजार के मुखिया पूनम जायसवाल ने अपने पुत्र की जन्मदिन व शादी के सालगिरह पर वैसे सभी लोगों के प्रति आभार जताया है जिन्होंने उनके जीवन के इस मुकाम में पहुँचने में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से मदद किया है। प्रो अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि वे इसबार के बाद घर के हर खुशी के मौके पर अनाथालय पहुंचकर बच्चों को भोजन कराएंगे। छतरपुर पूर्वी के जिला पार्षद अमित कुमार जायसवाल ने कहा कि उनके पिता सह पर्यावरणविद डॉ कौशल किशोर जायसवाल ने अपने जीवन के बहुमूल्य समयों में से वक्त निकाल कर पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर एक मानक स्थापित किया है। इसीलिए तो बच्चों को उनकी जीवनी की पढ़ाई 2010 से होते आ रहा है। अबतक उन्हें नेशनल-इंटरनेशनल मंचो पर 71 बार अवार्ड भी मिल चुका है।
मौके पर डाली पंचायत के पूर्व मुखिया अफजाल अंसारी, नंदू विश्वकर्मा, कोमल जायसवाल, शिल्पा जायसवाल, आराध्या जायसवाल, आशिका जायसवाल, रामू, छोटू, आद्रिका, अनुषा आदि लोग शामिल थे।

10 + 2 लॉर्ड कृष्णा स्कूल अमृत नगर हजारीबाग में दसवीं क्लास के छात्र-छात्राओं ने परचम लहराया

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। 10 + 2 लॉर्ड कृष्णा स्कूल अमृत नगर हजारीबाग में दसवीं क्लास के छात्र एवं छात्राओं ने जिला में अपना परचम लहराया विद्यालय का परिणाम 100% रहा विद्यालय से प्रथम आयुष राज 93.2%, द्वितीय सागर कुमार 90% एवं तृतीय आनंद कुमार 83.8%, विद्यालय का परिणाम इस प्रकार रहा मोहम्मद अमजद राजा 81.8त्न रोशन कुमार दास 80.8% रोहित कुमार 80.4% नुसरत जहां 79% अभिषेक यादव 78.6%, अंकित कुमार 75.2%, अतिफ़ा 71.2% लाकर विद्यालय का नाम रोशन किया। विषयवार प्रतिशत इस प्रकार रहा आयुष राज विज्ञान 98%, रोहित कुमार विज्ञान 94%, पवन सागर विज्ञान 93%, अभिषेक यादव विज्ञान 90%, आनंद कुमार विज्ञान 89%, अंकित कुमार विज्ञान 88%, रोशन कुमार दास विज्ञान 84%, नुसरत जहां विज्ञान 80%। आयुष राज गणित 92%, पवन सागर गणित 92%, रोहित कुमार गणित 80%। आयुष राज अंग्रेजी 93%, आनंद कुमार अंग्रेजी 86%, पवन सागर अंग्रेजी 83%, नुसरत जहां अंग्रेजी 81%, रोहित कुमार अंग्रेजी 82% ,आदित्य कुमार अंग्रेजी 81%। पवन सागर सोशल साइंस 93%, आयुष राज सोशल साइंस 90%, मोहम्मद अमजद राजा सोशल साइंस 83% ,रोशन कुमार दास सोशल साइंस 80%, कृष्ण कुमार 82%, आयुष राज हिंदी 93%, नुसरत जहां हिंदी 91%, रोशन कुमार दास हिंदी 92% ,पवन सागर हिंदी 89%, कोमल भारती हिंदी 83%, मोहम्मद अमजद राजा हिंदी 84%, आतिफा हिंदी 89%, आनंद कुमार हिंदी 90%। कंप्यूटर साइंस आयुष राइस 83% और पवन सागर 83%। लाकर विद्यालय का नाम रोशन किया विद्यालय के प्रिंसिपल कृष्णा कुमार देव, सचिव अमिताभ नीरज एवं समस्त शिक्षक गण ने सभी विद्यार्थियों को धन्यवाद दिए एवं उज्जवल भविष्य की कामना किए।

प्रतिमा नाथ धाम मुख्य द्वार पर गेट निर्माण का किया शिलान्यास

बिरनी/गिरीडीह
बिरनी प्रखण्ड के बाराडीह पंचायत अंतर्गत प्रतिमा नाथ धाम मंदिर के ताराटांड़-जमुनियाटांड़ के बीच मुख्य द्वार पर भव्य गेट का शिलान्यास मंगलवार को ग्रामीणों की मौजूदगी में किया गया। जानकारी देते हुए कमेटी के अध्यक्ष खूबलाल यादव ने बताया कि गेट का सारा खर्च प्रतीमा नाथ धाम कमेटी के कोषाध्यक्ष रूप नारायण यादव निजी खर्च से करेंगे। इस दौरान समिति के सचिव बलराम शरण कुशवाहा, श्याम लाल भगत,श्याम सुंदर भगत, सोमर रविदास ,बलराम यादव, वार्ड सदस्य भोला यादव,शाखाबारा पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि राजेंद्र यादव, बैजनाथ यादव, बबलू यादव,अशोक यादव, टेकलाल यादव,अशोक कुशवाहा सहित बाराडीह एवं मंझिलाडीह पंचायत के सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

शिव परिवार सह हनुमत प्राण प्रतिष्ठा एवं ध्वजारोहण कार्यक्रम

आदिवासी एक्सप्रेस
सतगावां कोडरमा। सतगावां प्रखंड के बासोडीह पंचायत अंतर्गत राउतडीह देवी मंडप में 30 मई से 5 जून 2025 तक चलने वाली श्री श्री 1008 श्री शिव परिवार सह हनुमत प्राण प्रतिष्ठा महायज्ञ को लेकर सोमवार दिनांक 12 मई ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ध्वजारोहण से पहले पंडित विमलेश पांडेय के द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ पूरे विधि - विधान से पूजा - पाठ किया गया। इस यात्रा के दौरान गाजे बाजे के साथ सैंकड़ों की संख्या में महिला पुरुष श्रद्धालुओं ने पूरे गांव का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान श्रद्धालुओं ने भगवा ध्वज गाजे बाजे के साथ हरहर महादेव, जय श्री राम, जय माता दी की जयकारा से गांव इलाके गूंज उठा।
वहीं यज्ञ समिति का अध्यक्ष रामदेव प्रसाद यादव ने बताया कि 30 मई से सात दिवसीय महायज्ञ क्लश यात्रा के साथ आरम्भ होगा , यज्ञ 5 जून तक चलेगा। पुजारी रामबचन कुमार ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से आसपास के क्षेत्रों को शुद्ध वातावरण और धर्म के प्रति लोगों में आस्था बढ़ती है। ध्वजारोहण कार्यक्रम को सफल बनाने में सचिव बह्मदेव प्रसाद यादव, कोषाध्यक्ष कृष्णकांत कुमार, सदस्य अर्जुन साव, राम कुमार , प्रदीप कुमार, अरुण कुमार, दीपक कुमार, भोला, पप्पू इत्यादि लोगों ने अहम भूमिका निभाई। मौके पर धनंजय यादव, धनेश्वर प्रसाद यादव, रितेश कुमार, बिमल महतो, रामबालक यादव, दिलीप पंडित, विपिन कुमार एवं अनेकों महिला पुरुष मौजूद रहे।

सीबीएसई बारहवीं 2025 की परीक्षा में एंजल्स हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने लहराया परचम

● परीक्षा में शामिल स्कूल के सभी 117 विद्यार्थी शत-प्रतिशत प्रथम श्रेणी से हुए उत्तीर्ण, स्कूल का औसत प्रतिशत 84 .75 % रहा ● विज्ञान में मानसी कुमारी 94.2%, वाणिज्य में अक्षया जैन 96.4% और कला विषय में संयुक्त रूप से अभिराज सिंह व अमृतांश कश्यप ने 95.2% अंक लाकर स्कूल टॉपर बनने का गौरव किया हासिल

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के 12वीं की परीक्षा परिणाम मंगलवार को निर्धारित समय पर बोर्ड की ऑफिशियल वेबसाइट के जरिए जारी कर दिया गया। हजारीबाग-बडकागाँव रोड के शंकरपुर स्थित एंजल्स हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने सीबीएसई बारहवीं परीक्षा परिणाम में लगातार 09 वीं बार शानदार प्रदर्शन कर स्कूल व जिले का नाम रौशन किया। एंजल्स हाई स्कूल के तीनों संकाय में विज्ञान में मानसी कुमारी 94.2%, वाणिज्य में अक्षया जैन 96.4% और कला विषय में संयुक्त रूप से अभिराज सिंह व अमृतांश कश्यप ने 95.2% अंक लाकर स्कूल टॉपर होने का गौरव हासिल किया । ज्ञात है की वर्तमान वर्ष 12 वीं की बोर्ड परीक्षा में स्कूल के कुल 117 विद्यार्थियों ने इंटरमीडिएट की परीक्षा में भाग लिया था। जिसमें विज्ञान संकाय में 45, वाणिज्य संकाय में 45 विद्यार्थी तथा कला संकाय 27 विद्यार्थी शामिल हुए। जिसमे सभी शत- प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी से सफलता हासिल कर यह सिद्ध कर दिया की स्कूल प्रबंधन और शिक्षक-शिक्षिकाओं के शिक्षण- शैली में सफलता दिलाने की सर्वोच्च छमता विद्यमान है। 12 वीं की परीक्षा परिणाम में स्कूल के कुल
1.) 34 विद्यार्थी 90 प्रतिशत से ऊपर,
2.) 27 विद्यार्थी 85-90 प्रतिशत,
3.) 25 विद्यार्थी 80- 85 प्रतिशत,
4.) 21 विद्यार्थी 75- 80 प्रतिशत,
5.) 9 विद्यार्थी 70- 75 प्रतिशत और
6.) 70 प्रतिशत से कम अंक के साथ 1 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। स्कूल का औसत प्रतिशत 84.75% रहा जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है और पिछले साल से बढ़ा है । प्रतिवर्ष की मुताबिक लगातार बढ़ते रिजल्ट प्रतिशत से स्कूल परिवार गदगद है। स्कूल की निदेशिका निशा जायसवाल ने बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की और शानदार रिजल्ट के लिए विद्यार्थियों के साथ स्कूल के शिक्षकों एवं अभिभावकों को धन्यवाद बधाई दिया। निशा जायसवाल ने बताया की टीमवर्क से ही यह संभव हो सका है और भविष्य में भी शिक्षा के स्तर को बढ़ावा देने के लिए हम गुणवत शिक्षा की ओर अग्रसर होकर बच्चों के सर्वांगीण विकास में विशेष ध्यान रखेंगे ताकि बच्चे नासिर परीक्षा में बल्कि जीवन में भी एक सफल इंसान बन सके। स्कूल की प्रधानाचार्य शिखा अग्रवाल ने भी सफल विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

सीबीएसई दसवीं बोर्ड की परीक्षा में सेक्रेड हार्ट स्कूल के छात्रों की शानदार उपलब्धि

विद्यालय के 10 छात्रों को मिले 90 प्लस अंक

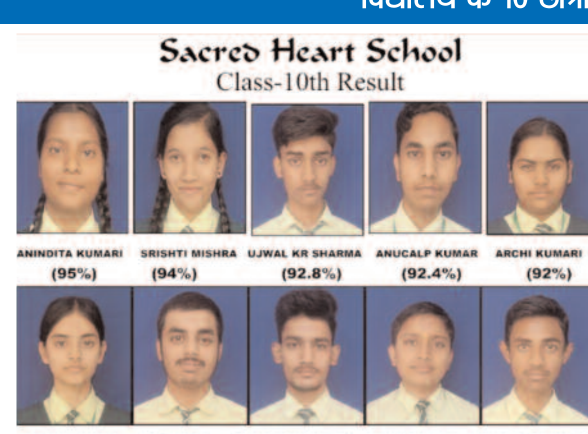

आदिवासी एक्सप्रेस
झुमरी तिलैया- सीबीएसई बोर्ड के द्वारा दसवीं बोर्ड परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। इसमें सेक्रेड हार्ट स्कूल के छात्रों ने शानदार उपलब्धि हासिल की है। इस परीक्षा में विद्यालय के 10 छात्र छात्राओं ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किया है। विद्यालय के निदेशक प्रमोद कुमार, प्राचार्य प्रमोद शर्मा और उप प्राचार्य प्रवीण कुमार से मिली जानकारी के अनुसार अनिंदिता को 95 प्रतिशत, सृष्टि मिश्रा को 94 प्रतिशत, उज्जवल कुमार शर्मा को 92.8 प्रतिशत,अनुकल्प कुमार को 92.4 प्रतिशत आर्ची कुमारी को 92 प्रतिशत, समय कुमारी को 91 प्रतिशत, आदित्य राज को 90.6 प्रतिशत, राजा बाबू गौतम को 90.4 प्रतिशत, शिवम कुमार को 90.2 प्रतिशत और निखिल राज शर्मा को 90 प्रतिशत अंक हासिल हुआ है अगर विषय वार चर्चा की जाए तो आनंदित कुमारी को अंग्रेजी में 96, उज्जवल कुमार शर्मा को हिंदी में 97, आदित्य राज को गणित में 97, अनुकल्प को साइंस में 97, अनिंदिता को एसएसटी में 96, दिव्यानी सिंह को आईटी में 96, शुभम राज को आईटी में 96 और सृष्टि मिश्रा को संस्कृत में सर्वाधिक 99 अंक प्राप्त हुए हैं। प्राचार्य प्रमोद कुमार शर्मा ने सभी सफल छात्रों को बधाई दी और कहा कि यह परीक्षा परिणाम छात्रों की कड़ी मेहनत, अभिभावकों का सहयोग और शिक्षकों के कुशल मार्गदर्शन का परिणाम है। निदेशक प्रमोद कुमार, उपनिदेशक विनोद कुमार, प्राचार्य प्रमोद शर्मा, उप प्राचार्य प्रवीण कुमार, रूटिंग इंचार्ज दीपक सर्राफ, शंकर कुमार, पायल सिंह, अभिलाषा सिंह, भोला कुमार, सुनील पाठक, पवन ठाकुर, संजय तिवारी, रणजीत सिंह, विक्रम कुमार और टिंकू कुमार ने बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।
दूसरी ओर सीबीएसई बोर्ड के द्वारा जारी 12वीं के परीक्षा परिणाम में सेक्रेड हार्ट स्कूल के छात्रों की शानदार उपलब्धि रही है। विद्यालय के निदेशक प्रमोद कुमार और प्राचार्य प्रमोद शर्मा से प्राप्त जानकारी के अनुसार श्रेष्ठ कुमार को 92 प्रतिशत, अंशिका सिंह को 88.2 प्रतिशत और समृद्धि जायसवाल को 88 प्रतिशत अंक हासिल हुए हैं। जबकि साकेत कुमार को 87.8 और आदर्श नितेश चंद्र को 85.4 प्रतिशत अंक प्राप्त हुआ है। अगर विषय वार बात कर तो श्रेया कुमारी को इंग्लिश में 98, श्रेष्ठ कुमार को फिजिक्स में 85, समृद्धि जायसवाल को केमिस्ट्री में 96, श्रेष्ठ कुमार को मैथ्स में 99, अंशिका सिंह को बायो में 89, आदर्श नितेश चंद्र को बायो में 89, सत्यम कुमार निराला को फिजिकल एजुकेशन में 96 और अंशिका सिंह को कंप्यूटर साइंस में 64 अंक प्राप्त हुए हैं।

संक्षिप्त समाचार

पोखरिया गांव के स्कूल के समीप से एक अज्ञात महिला का शव पुलिस ने किया बरामद

शिकारीपाड़ा/दुमका। शिकारीपाड़ा थाना क्षेत्र के पोखरिया गांव के स्कूल के समीप से एक अज्ञात महिला का शव शिकारीपाड़ा पुलिस ने मंगलवार को बरामद किया है, बताया जा रहा है कि महिला की उम्र 65 वर्ष के आसपास होगी, और मानसिक रूप से विक्षिप्त भी हो सकती है, पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए दुमका भेज दिया है और आगे की कार्यवाही में जुट गई है, समाचार लिखे जाने तक मृतक महिला की पहचान नहीं हो पाई थी।

सीबीएससी दसवीं बोर्ड परीक्षा में प्रखंड के उदय रौनक मुर्मू बने स्कूल टॉपर

- पार्थो मंडल 94 प्रतिशत लाकर द्वितीय और महेशपुर के फैजुद्दीन अंसारी ने 93.6 अंक लाकर तृतीय स्थान प्राप्त किया

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

हिरणपुर (पाकुड़) पीएमश्री नवोदय विद्यालय बागशिशा से सीबीएससी दसवीं बोर्ड परीक्षा में लिट्टीपाड़ा निवासी उदय रौनक मुर्मू विद्यालय टॉपर बने हैं। उक्त जानकारी देते हुए विद्यालय के प्रचार डॉक्टर अवधेश कुमार ने जानकारी दिया कि इस परीक्षा में 39 छात्रों ने भाग लिया था, जिसमें सभी बच्चे उत्तीर्ण हुए। जबकि 94.4 प्रतिशत अंक लाकर उदय रौनक मुर्मू विद्यालय टॉपर बने हैं। जबकि पार्थो मंडल अमड़ापाड़ा ने 94% लाकर द्वितीय और बासकेंद्री महेशपुर के फैजुद्दीन अंसारी ने 93.6% अंक लाकर तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

शिकारीपाड़ा वन विभाग की बड़ी कार्यवाही , बीड़ी पत्ता , समेत लकड़ी लदा चाइना टोली किया जप्त

शिकारीपाड़ा/दुमका/ शिकारीपाड़ा वन विभाग की बड़ी कार्यवाही, सोमवार देर रात खड़ीजोल के पास गुप्त सूचना के आधार वन विभाग की टिम ने 6 बोटा साल का लकड़ी जप्त किया है, तो वहीं रसनाला के पास से 16 बोरा बीड़ी पत्ता जप्त किया है , जप्त की हुई लकड़ी और बीड़ी पत्ता शिकारीपाड़ा वन परिसर लाकर रखा गया है, तो वहीं बड़तल्ली के पास सागवान और शिमल का लकड़ी लदा 2 चाइना टोली जप्त किया है दोनों में 22 बोटा लकड़ी लदा हुआ था,

इस प्रकार की कारवाई से लकड़ी माफियाओं में हड़कंप मच गया हैं। यहां बताते चले कि वन विभाग लगातार लकड़ी माफियाओं पर कार्रवाई कर रही है। लेकिन लकड़ी माफिया इससे बाज नहीं आते हैं और लगातार अवेध रुप से लकड़ी का तस्करी करते हैं। लकड़ी माफिया शिकारीपाड़ा क्षेत्र से हरे भरे पेड़ों को काट कर पश्चिम बंगाल ले जाते है और मोटी कमाई करते है। वन विभाग की टिम ने बताया किसी भी हाल में लकड़ी का तस्करी नहीं होने दिया जाएगा, और इस प्रकार से आगे भी कार्यवाही की जाएगी।

बाबूपुर का दौरा कर ग्रामीण विकास विभाग की विभिन्न योजनाओं का निरीक्षण किया

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। राजमहल प्रखंड विकास पदाधिकारी-सह-अंचल अधिकारी मो. यूसुफ ने मंगलवार को राजमहल प्रखंड के पंचायत दरला,पड़रिया और बाबूपुर का दौरा कर ग्रामीण विकास विभाग की विभिन्न योजनाओं का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पंचायत में अबुआ आवास योजना के अंतर्गत लंबित आवास निर्माण कार्यों की समीक्षा की गई। प्रखंड विकास पदाधिकारी ने लाभुकों से व्यक्तिगत रूप से बातचीत की और निर्देश दिया कि वे जल्द से जल्द आवास निर्माण कार्य पूर्ण करें। साथ ही पंचायत सचिव राकेश कुमार को निर्देशित किया गया कि दो दिनों के भीतर सभी पात्र लाभुकों को कार्य की प्रगति के अनुसार अगली किस्त का भुगतान सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बीडीओ ने इस वर्ष चयनित लाभुकों को गड्ढा खुदाई के पश्चात घेराबंदी शीघ्र पूर्ण करने का निर्देश दिया। साथ ही उन्होंने रोजगार सेवक को निर्देशित किया कि आवास योजना के अंतर्गत कार्य कर रहे लाभुकों को मनरेगा मद से मिलने वाली मजदूरी का भुगतान समय पर सुनिश्चित किया जाए। निरीक्षण के दौरान बीपीओ गगन बापू, आवास कोऑर्डिनेटर रविकांत रवि, पंचायत सचिव सिराजुल हक, राकेश कुमार, राहुल कुमार सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

सरकार आंदोलनकारियों को देगी सम्मान राशि- मंत्री

पालोजोरी और सारठ के 342 झारखंड आंदोलनकारियों को मिला प्रस्तिपत्र और सम्मान

पालोजोरी। देवघर ज़िले के पालोजोरी और सारठ प्रखंड के पृथक झारखंड राज्य के लिए संघर्षरत रहे आंदोलनारियों को सम्मान सह प्रमाण पत्र वितरण समारोह मंगलवार को डिग्री कॉलेज नवाडीह पालोजोरी में जिला प्रशासन देवघर की ओर से आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मंत्री हफीजुल हसन, सांसद नलिन सोरेन, विधायक उदय शंकर सिंह उर्फ चुन्ना सिंह, झारखंड आंदोलनकारी चिन्हितकरण आयोग के सदस्य नरसिंह मुर्मू, एसडीओ मधुपुर राजीव कुमार सहित अन्य ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। वहीं अतिथियों को बुके देकर और शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। मंत्री ने कहा कि आज का दिन यहाँ के लिये गर्व का दिन है। गुरु जी के साथ देने वाले आंदोलनकारियों को सम्मानित राशि और सम्मान देने का कार्य पूरे देश में झारखंड ही पहला राज्य है,जहां आंदोलनकारियों को सम्मानित जा रहा है।

342 आंदोलनकारियों को मिला सम्मान: देवघर ज़िले के पालोजोरी और सारठ प्रखंड के 342 पृथक झारखंड राज्य के लिए संघर्षरत रहे आंदोलनकारियों को प्रमाण पत्र और माला पहनाकर सम्मानित किया गया। सम्मान मिलने के बाद इनलोगों के बीच खुशी की लहर दौड़ गई।

पालोजोरी प्रमुख-बीडीओ के विवाद पर बोले मंत्री: मंत्री हफीजुल हसन ने पालोजोरी प्रखंड प्रमुख और बीडीओ विवाद पर भी किये चर्चा।

45 वर्षों तक राज्य में रहेगी गठबंधन की सरकार : मंत्री हफीजुल हसन ने कहा कि झारखंड में 45 वर्षों तक राज्य में गठबंधन की सरकार बने रहेगी। सरकार के द्वारा किये गए वादें आज पूरा हो रहा है।

क्रेशर प्लांट से हो रहे प्रदुषण से ग्रामीण त्रस्त, अंचलाधिकारी को दिया आवेदन

शिकारीपाड़ा/दुमका। शिकारीपाड़ा थाना क्षेत्र के पिनरगढ़िया पंचायत अंतर्गत बरमसिया गांव के ग्रामीणों ने मंगलवार को क्रेशर से हो रहे प्रदूषण को लेकर आवेदन दिया ,जिसमें ग्रामीणों ने बताया कि गांव के पास चल रहे क्रेशर प्लांट से काफी ज्यादा प्रदूषण हो रहा है, धूलकण और क्रेशर के तेज आवाज के कारण हम लोगों का गांव में रहना मुश्किल हो गया है। प्रदूषण के कारण वातावरण, जल स्त्रोतों और भूमि की गुणवत्ता पर भी बुरा असर पड़ रहा है, क्रेशर की धूल से हमारे जमीनों पर धूल की एक मोटी परत जम गई है इस कारण हम ग्रामीण लगभग 100 एकड़ भूमि पर खेती नहीं कर पा रहे हैं। पास के गांव घाट हरिपुर में और दो-तीन नए क्रेशर प्लांट बैठाने की योजना बनाई जा रही है जो कि हमारे गांव के ठीक सीमा पर सटा हुआ है यदि यह प्लांट भी खुल गया तो और भी ज्यादा हम लोगों को समस्या का सामना करना पड़ेगा।

और प्रदूषण का प्रभाव हम ग्रामीणों के स्वास्थ्य पर भी गंभीर रूप से पड़ रहा है ,लोगों को सांस की बीमारी, खांसी, आंख में जलन, त्वचा रोग,और पानी से जुड़ी बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है, पशु पक्षी और खेती पर भी इसका दुष्प्रभाव दिखाई दे रहा है।

इस मामले में ग्रामीणों ने शिकारीपाड़ा अंचलाधिकारी को आवेदन देकर यह मांग किया कि बरमसिया मौजा से सटे किसी भी जमीन पर नए क्रेशर प्लांट को अनुज्ञप्ति ना दी जाए,

प्रेशर प्लांट के संचालन की जांच की जाए और धूल को नियंत्रित करने का उपाय किया जाए। क्रेशर प्लांट को गांव और खेती योग्य भूमि से दूर रखा जाए। गांव में स्वास्थ्य शिविर लगाकर बीमार ग्रामीणों का इलाज कराया जाए, भूमि और जल की गुणवत्ता की जांच कराई जाए और सुधार के उपाय किया जाए।

मौके पर आवेदन सुपुर्द करने में लखीराम सोरेन, सनातन मुर्मू, चुनकु मरांडी ,दिलीप सोरेन, बुधीराम मरांडी ,सोमलाल टुडू ,सुनीराम सोरेन ,बुद्धि नाथ मरांडी सहित दर्जनों ग्रामीण मौजूद थे।

बाल आधार कार्ड बनाने हेतु जिले के सात आंगनबाड़ी केंद्रों में कैंप का हुआ आयोजन

- अमड़ापाड़ा प्रखंड के चार पंचायत एवं हिरणपुर प्रखंड के तीन पंचायतों के आंगनबाड़ी केंद्रों में शून्य से पांच साल तक के बच्चों के लिए बाल आधार कार्ड बनवाने को लेकर बाल आधार कैंप का आयोजन किया गया
- इस विशेष शिविर का लाभ उठाकर अपने बच्चों का बाल आधार बनवाएं- डीसी

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

पाकुड़ जिला प्रशासन के द्वारा अब प्रखंड स्तर पर भी बच्चों के आधार (बाल आधार) बनाने के लिए शिविर का आयोजन किया गया। जिला प्रशासन के सहयोग से बच्चों के आधार बनाने का काम निःशुल्क किया जा रहा है। बच्चों के पास आधार कार्ड नहीं होने के कारण छात्रवृत्ति का लाभ एवं अन्य योजना लेने में कठिनाई होती हैं। इसको लेकर अमड़ापाड़ा प्रखंड अंतर्गत पचुआड़ा पंचायत के पचुआड़ा टोला आंगनबाड़ी केंद्र, अमड़ापाड़ा संथाली पंचायत के अमड़ापाड़ा बाजार आंगनबाड़ी केंद्र, अमड़ापाड़ा हरिजन टोला 1 आंगनबाड़ी केंद्र, हिरणपुर प्रखंड अंतर्गत डांगापाड़ा पंचायत के डांगापाड़ा 1 आंगनबाड़ी केंद्र, बागशीशा पंचायत के बागशीशा 1 आंगनबाड़ी केंद्र, धोवाडांगा पंचायत के धोवाडांगा 1 आंगनबाड़ी केंद्रों के सभी बच्चों को बाल आधार कार्ड बनवाने को लेकर बाल आधार कैंप का आयोजन किया गया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य सभी बच्चों को आधार कार्ड बनाने का था।शिविर में जिले के विभिन्न प्रखंड कार्यालय में कार्यरत आधार ऑपरेटर ने मौके पर बच्चों का नया आधार बनाया। वहीं शिविर में मौजूद कर्मचारियों ने लोगों को आधार कार्ड से जुड़ी सभी जानकारी दी और उनकी समस्याओं का समाधान किया।

उपायुक्त ने समेकित जनजाति विकास अभिकरण (आईटीडीए) एवं कल्याण विभाग के कार्यों का किया समीक्षा

- कार्य में गति लाने एवं लंबित योजनाओं को अविलंब पूर्ण करने को लेकर पदाधिकारियों को किया निर्देशित

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

पाकुड़ उपायुक्त मनीष कुमार की अध्यक्षता में समेकित जनजाति विकास अभिकरण (आईटीडीए) एवं कल्याण विभाग की समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक के दौरान उपायुक्त द्वारा धुमकुड़िया भवन, कब्रिस्तान, एवं जाहेरस्थान योजनाओं की कार्यो प्रगति की समीक्षा कर कई आवश्यक व उचित दिशा- निर्देश दिये। उपायुक्त ने लंबित योजनाओं को अविलंब पूर्ण करने को लेकर पदाधिकारियों को निर्देशित किया। उपायुक्त ने कल्याण विभाग की योजनाओं में गति देने एवं लगातार उनकी मॉनीटरिंग करते रहने का निर्देश दिया।

उपायुक्त ने दिवाकलीन विद्यालय के कार्यों की समीक्षा

उपायुक्त मनीष कुमार ने जिले के सभी नौ दिवाकलीन विद्यालय की समीक्षा की उपायुक्त ने कहा कि शत प्रतिशत बच्चों की उपस्थिति अनिवार्य है। सभी दिवाकलीन विद्यालय में पढ़ाई में सुविधा हेतु स्मार्ट स्पीकर उपलब्ध कराया जाएगा। उपायुक्त ने सभी विद्यालयों में पेयजल, साफ-सफाई, और अन्य मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने कल्याण विभाग के कर्मी समेत अन्य उपस्थित थे।

जिले के विभिन्न प्रखंड में आयोजित आयुष जांच शिविर में 59 लोगों का स्वास्थ्य जांच किया गया

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

पाकुड़ प्रखंड के ईलामी एवं हिरणपुर प्रखंड के करनडंगा में आयुष विभाग की ओर से मंगलवार को आयुष कैंप लगाकर कुल 59 लोगों का स्वास्थ्य जांच कर आवश्यक दवा दिया गया। डॉ0 अबूतालिब शेख एवं डॉ लवकुश यादव ने बताया की इस कैंप में आज रक्तचाप, मधुमेह, जॉइंट पेन, गठिया, बच्चों से संबंधित आदि रोगों का जांच निःशुल्क किया गया। साथ ही सभी को मुफ्त दवा भी दी गई। वहीं शिविर में आने वाले मरीजों को शुगर, ब्लड प्रेशर का भी जांच की गई।

हिरणपुर पुलिस ने दो वारंटी को भेजा जेल

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो

हिरणपुर (पाकुड़) हिरणपुर थाना कांड संख्या 20 / 25 के दहेज प्रार्थना मामले में 52 वर्षीय शेखावत अंसारी उनके गांव महेशपुर प्रखंड प्यारदाहा से थाना के एएसआई गोविंद साव ने घर से गिरफ्तार कर हिरासत में लेकर न्यायिक उपास्थना हेतु पाकुड़ भेजा। यहां उल्लेखनीय है कि बीते 2 जुलाई 20 24 को उनके पूतोहू खैरुल निशा ने अपने पति ससुर और सास के खिलाफ मामला दर्ज कराया था। जबकि मंगलवार को थाना कांड संख्या 72/12 मैं मारपीट मामले के वारंटी काफी दिनों से फरार चल रही ठाकरन टुडू को उनके घर पोखरिया से थाना के एएसआई साधन कर्मकार ने गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा। इस संबंध में प्रभारी थाना प्रभारी गोपाल कुमार महतो ने कहा कि गिरफ्तार वारंटी को न्यायिक उपास्थापना के लिए पाकुड़ भेज दिया गया है।

मृतक के बेटा हेमलाल बसेरा ने अपने छोटी बहन के दमाद पर हत्या का आरोप लगाया

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। पतना रांगा थाना क्षेत्र अंतर्गत घटियारी जोजोटोला निवासी कपरा मरांडी 60 वर्षीय को तेजधार हथियार से सिर पर वार कर सोमवार-मंगलवार की रात करीब 2ः00 बजे निर्मम हत्या कर दी गई। मृतक के बेटा हेमलाल बसेरा ने अपने छोटी बहन के दमाद पर हत्या का आरोप लगाया है। मिली जानकारी के अनुसार तीनपहाड़ थाना के सांवलापुर निवासी मृतक के दमाद मेधराय मरांडी 35 वर्षीय, पिता सपल मरांडी 11ः00 बजे रात घटियारी गांव पहुंचा था, घटियारी गांव के कुछ लोग स्टेशन से घर आने के क्रम में मृतक के दमाद भी उसी टेंपु में सवार होकर जोजोटोला के पास उतरकर ससुराल चला गया। इधर सुबह होते ही घटना की सूचना आग की तरह फैल गया। घटना की सूचना पुलिस को मिलते ही एएसआई अशोक सिंह, एएसआई गिरिजल सोरेन, दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंच कर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए राजमहल अनुमंडल अस्पताल भेज दिया गया। मामले को लेकर थाना प्रभारी अखिलेश कुमार यादव ने बताया कि हत्या मामले पर मृतक के परिजनों के बयान पर कार्रवाई शुरू कर दी गई है।मृतक के दमाद ने पहले सांवलापुर अपने घर में पत्नी से झगड़ा किया और पत्नी को भी सर पर मारकर घायल कर दिया है। इस संबंध में मृतक के बेटा हेमलाल बेसरा ने पुलिस को बताया कि मेरी छोटी बहन सांवलापुर में मारपीट की घटना की जानकारी मां को दी थी। इस क्रम में दमाद बहन की पति ने सास को मोबाइल से जान से मारने की धमकी दी थी। उन्होंने रात में घटियारी पहुंचकर सास को तेजधार हथियार से सर पर वार कर हत्या कर देने का आरोप लगाया है। वहीं पुलिस इस मामले की जांच में जुट गई है।

आज से शुरू हुई लीला कीर्तन 16 मई को रासलीला व 17 मई को धुलोट के साथ समाप्त होगी

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। बोरियो प्रखंड के मोतीपहाड़ी गांव में श्री श्री 108 हरिनाम चौबीस प्रहर (तीन दिवसीय) पाला संकीर्तन की शुरुआत मगंलवार रात्रि अधिवास के साथ हो गई। इस संकीर्तन समारोह में प्रभु लीला का गुणगान विभिन्न स्थानों से आए कीर्तन मंडलियों द्वारा भक्तिमय माहौल में किया जाएगा। मोतीपहाड़ी कीर्तन समिति द्वारा गांव में पिछले 78 वर्षों से हरिनाम संकीर्तन का बोरियो- बोरियो प्रखंड के मोतीपहाड़ी गांव में श्री श्री 108 हरिनाम चौबीस प्रहर (तीन दिवसीय) पाला संकीर्तन की शुरुआत मगंलवार रात्रि अधिवास के साथ हो गई। इस संकीर्तन समारोह में प्रभु लीला का गुणगान विभिन्न स्थानों से आए कीर्तन मंडलियों द्वारा भक्तिमय माहौल में किया जाएगा। मोतीपहाड़ी कीर्तन समिति द्वारा गांव में पिछले 78 वर्षों से हरिनाम संकीर्तन का आयोजन किया जा रहा है। इस बार भी आज से शुरू हुई लीला कीर्तन 16 मई को रासलीला व 17 मई को धुलोट के साथ समाप्त होगी। बांग्ला कीर्तन मंडली में श्रीमती सुधा रानी मंडल (ब्रह्मपुर, मुर्शिदाबाद), श्रीमती भारती हांसदा (गाजोल, मालदा), श्रीमती सुधा रानी (बोरियो, साहेबगंज) व हिंदी कीर्तन मंडली श्रीमती सरिता देवी (पिपरा, गोड्डा), श्री महंत खगेश चौधरी एवं श्री छविलाल (मनिहारी, कटिहार) व श्री विनोद यादव (कस्तूरी, गोड्डा) को कीर्तन समिति, मोतीपहाड़ी ने लीला गुणगान के लिए आमंत्रित किया है। बता दें कि मोतीपहाड़ी में पाला कीर्तन आयोजन से लगभग एक महीने से ही नगर कीर्तन करती है, इसमें गांव के लोग मृदंग, करताल व अन्य वाद्य यंत्रों के साथ प्रभु नाम लेते हुए पूरे गांव का भ्रमण करती है। इस बार के भी हरिनाम संकीर्तन को सफ़ल बनाने में अध्यक्ष- अरविन्द पंडित, सचिव- राजेन्द्र साह, कोषाध्यक्ष- सरयु प्रसाद साह, चंदन साह, दिनेश साह, दिनेश पंडित, सुदर्शन पंडित, शंभु पंडित, कैलाश साह, पवन, राजीव, नन्दकिशोर व अन्य मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। किया जा रहा है। इस बार भी आज से शुरू हुई लीला कीर्तन 16 मई को रासलीला व 17 मई को धुलोट के साथ समाप्त होगी। बांग्ला कीर्तन मंडली में श्रीमती सुधा रानी मंडल (ब्रह्मपुर, मुर्शिदाबाद), श्रीमती भारती हांसदा (गाजोल, मालदा), श्रीमती सुधा रानी (बोरियो, साहेबगंज) व हिंदी कीर्तन मंडली श्रीमती सरिता देवी (पिपरा, गोड्डा), श्री महंत खगेश चौधरी एवं श्री छविलाल (मनिहारी, कटिहार) व श्री विनोद यादव (कस्तूरी, गोड्डा) को कीर्तन समिति, मोतीपहाड़ी ने लीला गुणगान के लिए आमंत्रित किया है। बता दें कि मोतीपहाड़ी में पाला कीर्तन आयोजन से लगभग एक महीने से ही नगर कीर्तन करती है, इसमें गांव के लोग मृदंग, करताल व अन्य वाद्य यंत्रों के साथ प्रभु नाम लेते हुए पूरे गांव का भ्रमण करती है। इस बार के भी हरिनाम संकीर्तन को सफ़ल बनाने में अध्यक्ष- अरविन्द पंडित, सचिव- राजेन्द्र साह, कोषाध्यक्ष- सरयु प्रसाद साह, चंदन साह, दिनेश साह, दिनेश पंडित,सुदर्शन पंडित, शंभु पंडित, कैलाश साह, पवन, राजीव, नन्दकिशोर व अन्य मुख्य भूमिका निभा रहे हैं।

चीन युद्ध के बीच नेहरू ने बुलाया था संसद सत्र, मोदी को क्या डर!

>> विचार

> “ सोशल मीडिया पर वायरल एक तस्वीर में ट्रंप को पगड़ी पहनाकर गाँव का सरपंच दिखाया गया है, जिसने भारत और पाकिस्तान की बीच सुलह करायी। यह सीज़फ़ायर की घोषणा को लेकर भारत में व्याप्त संशय और व्यंग्य को दर्शाता है। पूर्व गृहमंत्री पी. चिदंबरम ने इसकी समयरेखा पर सवाल उठाते हुए कहाः "राष्ट्रपति ट्रंप ने शाम 5:25 बजे युद्धविराम की घोषणा ट्वीट की। कुछ मिनट बाद अमेरिकी विदेश मंत्री माकी रुबियो ने ट्वीट किया कि भारत और पाकिस्तान एक ‘तटस्थ स्थान’ पर बातचीत करेंगे। भारत के विदेश सचिव ने शाम 6 बजे संक्षिप्त बयान दिया, जिसमें न ट्रंप का जिक्र था, न रुबियो का, न ही किसी तटस्थ स्थान का। यह चौंकाने वाला है।

पंकज श्रीवास्तव

1962 के चीन युद्ध के दौरान पंडित नेहरू ने संसद सत्र बुलाकर लोकतांत्रिक संवाद को महत्व दिया था। आज जब सीमा पर तनाव है, तो क्या प्रधानमंत्री मोदी उससे बच रहे हैं? जानिए पूरा विश्लेषण। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 10 मई को भारत और पाकिस्तान के बीच जिस तरह से युद्धविराम की घोषणा की, उसने भारत की संप्रभुता और बाहरी शक्तियों की भूमिका को लेकर सवाल खड़े कर दिए हैं। ट्रंप की घोषणा से शिमला समझौते का वह सिद्धांत नष्ट हो गया जिसमें कहा गया था कि भारत और पाकिस्तान आपसी मसले द्विपक्षीय आधार पर खुद तय करेंगे। विपक्ष नयी स्थिति में मुखर होकर संसद का सत्र बुलाने की माँग कर रहा है। कई विपक्षी नेता याद दिला रहे हैं कि पं. नेहरू ने चीन युद्ध के जारी रहने के बीच संसद का सत्र बुलाकर तमाम आलोचनाओं का जवाब दिया था। सोशल मीडिया पर वायरल एक तस्वीर में ट्रंप को पगड़ी पहनाकर गाँव का सरपंच दिखाया गया है, जिसने भारत और पाकिस्तान की बीच सुलह करायी। यह सीज़फ़ायर की घोषणा को लेकर भारत में व्याप्त संशय और व्यंग्य को दर्शाता है। पूर्व गृहमंत्री पी. चिदंबरम ने इसकी समयरेखा पर सवाल उठाते हुए कहाः "राष्ट्रपति ट्रंप ने शाम 5:25 बजे युद्धविराम की घोषणा ट्वीट की। कुछ मिनट बाद अमेरिकी विदेश मंत्री माकी रुबियो ने ट्वीट किया कि भारत और पाकिस्तान एक ‘तटस्थ स्थान’ पर बातचीत करेंगे। भारत के विदेश सचिव ने शाम 6 बजे संक्षिप्त बयान दिया, जिसमें न ट्रंप का जिक्रथा, न रुबियो का, न ही किसी तटस्थ स्थान का। यह चौंकाने वाला है। ‘तटस्थ स्थान’ जैसे शब्दों का इस्तेमाल कश्मीर मुद्दे के अंतरराष्ट्रीयकरण की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है, लेकिन सरकार की ओर से इसका खंडन नहीं किया गया।पहलगाम आतंकी हमले, ऑपरेशन सिंदूर और युद्धविराम की घोषणा के बाद विपक्ष ने संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग की है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और नेता प्रतिपक्ष राहुल गाँधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर इसकी ज़रूरत बताई। राहुल गाँधी ने अपने पत्र में कहाः "लोगों और उनके प्रतिनिधियों के लिए पहलगाम आतंकी हमले, ऑपरेशन सिंदूर और आज के युद्धविराम पर चर्चा करना बहुत ज़रूरी है, जिसकी घोषणा सबसे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने की थी। यह हमारी एकजुटता दिखाने का अवसर होगा। लेकिन सरकार ने इस माँग को ठुकरा दिया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इसे "संवेदनशील" बताते हुए कहा कि सार्वजनिक चर्चा से रणनीतिक नुक़सान हो सकता है। वैसे, सरकार इस मुद्दे पर पारदर्शी रवैया नहीं अपना रही है। सरकार ने दो सर्वदलीय बैठकें बुलाईं, जिनमें राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री एस. जयशंकर मौजूद थे, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी शामिल नहीं हुए। जबकि विपक्ष ने सरकार को पूरा समर्थन दे रखा है। नेता प्रतिपक्ष राहुल गाँधी समेत सभी नेता सर्वदलीय बैठक में मौजूद रहे।

1962 की नज़ीर : सरकार का यह रवैया 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के रुख से एकदम उलट है। 20 अक्टूबर को युद्ध शुरू हुआ था जो 21 नवंबर तक चला। उस समय भारत सैन्य रूप से कमजोर था, फिर भी नेहरू ने चीन से मुकाबला करने का फैसला किया। हार के बावजूद, उन्होंने पारदर्शिता बरती। जनसंघ नेता अटल बिहारी वाजपेयी की मांग पर 8 नवंबर 1962 को संसद का विशेष सत्र बुलाया गया। नेहरू ने एक कांग्रेसी सांसद के गुप्त सत्र के प्रस्ताव को खारिज करते हुए कहाः "यह मुद्दा देश के लिए महत्वपूर्ण है, इसे जनता से नहीं छिपाया जा सकता। नेहरू ने राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा की, संसद में सवालों का जवाब दिया और 20 नवंबर को रेडियो पर असम के लोगों को संबोधित किया। विपक्ष ने तीखी आलोचना की-वाजपेयी ने सैनिकों के पास हथियारों की कमी को "शर्मनाक" बताया और नेहरू की चीन नीति को "महापाप" कहा। आचार्य कृपलानी सहित अन्य नेताओं ने भी सरकार की खामियों पर सवाल उठाए। नेहरू ने इनका जवाब दिया और 1963 में अविश्वास प्रस्ताव का सामना किया, जो गिर गया था। आज की स्थिति में विपक्ष सरकार की चुप्पी और जवाबदेही से बचने की प्रवृत्ति पर सवाल उठा रहा है। लोग नेहरू को याद कर रहे हैं। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहाः 1962 में नेहरू ने युद्ध के बीच संसद सत्र बुलाया था, लेकिन मौजूदा सरकार चर्चा से बच रही है। राज्यसभा सदस्य दिग्विजय सिंह ने जोड़ाः "नेहरू हर मंच पर जवाब देते थे, लेकिन मोदी प्रेस कॉन्फ्रेंस तक नहीं करते। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने सर्वदलीय बैठक में प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति पर आपत्ति जताते हुए कहा कि अगर मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री होते, तो वे बैठक में मौजूद होते और सत्र बुलाते। ज़ाहिर है प्रधानमंत्री मोदी का रवैया लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप नहीं है। विपक्ष का कहना है कि जनता को यह जानने का हक है कि हालिया सैन्य अभियानों से क्या हासिल हुआ, नुकसान कितना हुआ, और पाकिस्तान-चीन गठजोड़ से निपटने की रणनीति क्या है। भारत के सामने मौजूदा चुनौतियों के बीच सरकार का लोकतांत्रिक सिद्धांतों को बनाए रखना ज़रूरी है। 1962 में नेहरू ने जो मिसाल कायम की, वह बताती है कि संकट के समय संसद और जनता से संवाद ज़रूरी है। पारदर्शिता और जवाबदेही से ही राष्ट्रीय एकता और जनता का भरोसा कायम रह सकता है। सरकार को जनता के सवालों का जवाब देना होगा, वरना लोकतंत्र पर सवाल उठते रहेंगे।

संपादकीय

संसद का सत्र बुला लिया जाए

प्रधानमंत्री मोदी रक्षा मंत्री, विदेश मंत्री, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ और तीनों सेना प्रमुखों के साथ लगातार बैठकें कर रहे हैं। जाहिर है कि युद्धविराम पर भी विमर्श किया गया होगा। डीजीएमओ को भी, अंततः, प्रधानमंत्री से ही निर्देश मिलते हैं। डीजीएमओ ने पाकिस्तान के समकक्ष के अनुरोध पर, अंततः, युद्धविराम की सहमति दी। राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत-पाक के बीच युद्धविराम का फैसला नहीं लिया। ट्रंप को दक्षिण एशिया की परिस्थितियों का सम्यक ज्ञान भी नहीं है। उन्होंने तो भारत और पाकिस्तान दोनों के नेतृत्व को ‘महान’ करार दिया है। दोनों की ताकत, समझ और धैर्य की सराहना की है कि उन्होंने युद्धविराम की घोषणा कर दी। ट्रंप का भारत और पाकिस्तान को एक ही तराजू में, बराबर-बराबर, तोलना ही गलत और भ्रामक है। एक तरफ दुनिया का सबसे विराट लोकतंत्र और दूसरी तरफ नाकाम लोकतंत्र, फौज का परोक्ष शासन, क्या दोनों में तुलना हो सकती है? भारत हर संदर्भ में पाकिस्तान से दसियों गुना आगे और विकसित है। दरअसल ट्रंप ‘सौदेबाज राष्ट्रपति’ हैं। वह यमन पर बमबारी भी करा सकते हैं और हूतियों के साथ बातचीत को भी तैयार हैं। वह हमास के साथ भी संवाद कर सकते हैं, लेकिन गाजा पट्टी पर कब्जा करना चाहते हैं। अमरीका अतीत में भी भारत का मूल्यांकन इसी आधार पर करता रहा है। वह भारत को ‘शक्तिशाली देश’ के तौर पर नहीं देखना चाहता, लिहाजा वह भारतीय सेना के ‘मिट्टी-मलबा’ करने वाले मिसाइल हमले से भी हैरान होगा! यूरोपीय देश भी भारत की शक्ति के विश्लेषण कर रहे हैं। इन स्थितियों में न तो युद्धविराम पर राजनीति उचित है और न ही प्रधानमंत्री के तौर पर इंदिरा गांधी और नरेंद्र मोदी की तुलना की जानी चाहिए। विपक्ष के सामने है कि सैन्य संचालन के तीनों महानिदेशकों ने विस्तार से ब्रीफ किया है कि ‘ऑपरेशन सिंदूर’ का मकसद कैसे हासिल किया गया है। हमारा सब कुछ सुरक्षित है और ‘ऑपरेशन सिंदूर’ अब भी जारी है। उनसे अधिक जानकारी कौन दे सकता है? वे पेशेवर सैन्य अधिकारी हैं। यदि प्रधानमंत्री संसद में भी कुछ बोलेंगे, तो इन्हीं सैन्य अधिकारियों से डाटा लेकर ही बोलेंगे। बहरहाल संसद का सत्र फिर भी बुला लिया जाए, तो हम उसे उचित कदम कह सकते हैं।

फसलों की विविधता को कम करेगी बढ़ती गर्मी

मुकुल व्यास

ग्लोबल वार्मिंग दुनिया में फसलों की विविधता को कम कर सकती है। एक नए अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि यदि वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाता है, तो विशाल क्षेत्र फसल विविधता खो सकते हैं, जिससे विश्वव्यापी खाद्य सुरक्षा के लिए जोखिम बढ़ सकता है। शोधकर्ताओं का अनुमान है कि उच्च तापमान के कारण वैश्विक खाद्य उत्पादन का लगभग एक तिहाई हिस्सा खतरे में पड़ सकता है। फिनलैंड के आल्टो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने नेचर फूड में प्रकाशित शोध में बताया कि तापमान,वर्षा पैटर्न और समग्र शुष्कता में परिवर्तन किस तरह दुनिया भर में 30 प्रमुख खाद्य फसलों के विकास को प्रभावित करेंगे। शोध के परिणाम बताते हैं कि निम्न अक्षांश क्षेत्र, खास कर उष्णकटिबंधीय देशों के बड़े हिस्से सबसे अधिक नुकसान उठाने वाले हैं। जैसे-जैसे तापमान बढ़ेगा, इन क्षेत्रों में कृषि के लिए बहुत अधिक भूमि अनुपयुक्त होती जाएगी। साथ ही उगाई जा सकने वाली फसलों की विविधता में भी भारी गिरावट आएगी। अध्ययन का नेतृत्व करने वाली शोधकर्ता सारा हेइकोनेन ने कहा कि विविधता के नुकसान का मतलब है कि कुछ क्षेत्रों में खेती के लिए उपलब्ध खाद्य फसलों के दायरे में काफी कमी आ सकती है। इससे खाद्य सुरक्षा कम होगी और पर्याप्त कैलोरी और प्रोटीन प्राप्त करना अधिक कठिन हो जाएगा। इन बदलती परिस्थितियों से दुनिया के मौजूदा खाद्य फसल उत्पादन का आधा हिस्सा प्रभावित हो सकता है। चावल, मक्का, गेहूं, आलू और सोयाबीन जैसी प्रमुख फसलों को उपयुक्त कृषि भूमि में भारी कमी का सामना करना पड़ सकता है। इससे उन लोगों के लिए चुनौतियां बढ़ सकती हैं जो दैनिक पोषण के लिए इन फसलों पर निर्भर हैं। कई अन्य फसलें भी असुरक्षित हैं जिनमें अनाज और दालों के अलावा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगने वाली जड़ वाली फसलें शामिल हैं। जिमीकंद जैसी जड़ वाली फसलें कम आय वाले क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान के दक्षिण में स्थित देश सबसे अधिक प्रभावित होंगे। यदि ग्लोबल वार्मिंग 3 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाती है तो इन देशों में वर्तमान उत्पादन का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा खतरे में पड़ जाएगा। वैश्विक तापमान का असर सब जगह एक जैसा नहीं होगा। नया अध्ययन निम्न अक्षांश और मध्य से उच्च अक्षांश क्षेत्रों (भूमध्य रेखा और ध्रुवीय क्षेत्रों के बीच में गर्म और ठंडी जलवायु वाले क्षेत्र) के बीच एक स्पष्ट अंतर को दर्शाता है। भूमध्य रेखा के नजदीकी देशों को जहां फसल की भारी क्षति और विविधता में गिरावट का सामना करना पड़ सकता है, वहीं ठंडी जलवायु वाले देश अपने समग्र उत्पादन स्तर को बनाए रख सकते हैं। वैज्ञानिकों ने यह भी अनुमान लगाया है कि मध्य और उच्च अक्षांश वाले क्षेत्र गर्म होती दुनिया में फसलों की एक विस्तृत श्रृंखला की खेती करने में सक्षम हो सकते हैं। अध्ययन के वरिष्ठ लेखक मैटी कुम्मू का कहना है कि जलवायु में अनुकूल बदलाव अधिक पैदावार की गारंटी नहीं देता है। जलवायु परिवर्तन से कुछ स्थानों पर उत्पादन बढ़ सकता है लेकिन वार्मिंग नए कीट पैदा कर सकती है और चरम मौसम की घटनाएं ला सकती है। खाद्य असुरक्षा से जूझ रहे देश, खास कर अफ्रीकी देश पहले से ही कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं क्योंकि बढ़ते तापमान अन्य सामाजिक और आर्थिक दबावों के साथ मेल खाते हैं। कई कम अक्षांश वाले क्षेत्रों में, खास तौर पर अफ्रीका में, दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तुलना में पैदावार कम है। ये देश उर्वरकों और सिंचाई तक अपनी पहुंच बढ़ाने के साथ-साथ उत्पादन और भंडारण श्रृंखला के माध्यम से खाद्य नुकसान को कम करके वे अधिक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि वैश्विक गर्मी इन अनुमानों में बहुत अधिक अनिश्चितता जोड़ेगी और संभवतः और भी अधिक कार्रवाई की आवश्यकता होगी, जैसे कि अनुरूप फसल का चयन करना और प्रजनन के नए तरीके अपनाना। मॉडल के जरिए अध्ययन और विश्लेषण करना आसान लगता है लेकिन यह समझना सबसे कठिन है कि बदलाव कैसे किए जाएं। रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि कम अक्षांश वाले देशों में नीति-निर्माताओं को कृषि के इंफ्रास्ट्रक्चर में अंतर को पाटने के तरीकों की तलाश करनी चाहिए। साथ ही अधिक प्रतिकूल बढ़ती परिस्थितियों के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे प्रयासों के बिना स्थानीय समुदायों को, जो पहले से ही खाद्य कमी के खतरे में हैं, आने वाले वर्षों में और भी अधिक संघर्ष करना पड़ेगा। दुनिया की खाद्य फसलों को सुरक्षित करना मध्य और उच्च अक्षांश वाले क्षेत्रों के लिए किसानों और नीति निर्धारकों को लचीला बने रहना होगा। गर्मी नई फसलों के लिए द्वार खोल सकती है, लेकिन वैश्विक मांग और बाजार की ताकतों में बदलाव लोगों द्वारा खेती के लिए चुने जाने वाले तरीकों को और भी बदल सकते हैं। नई स्थितियों से निपटने के लिए किसानों द्वारा जो तरीके अपनाए जा सकते हैं, उनमें विभिन्न फसल किस्मों के साथ प्रयोग करना, रोपण के मौसमों को समायोजित करना तथा गर्म मौसम और कीटों से निपटने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश करना शामिल है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अगर हम भविष्य में अपनी खाद्य प्रणाली को सुरक्षित करना चाहते हैं, तो हमें जलवायु परिवर्तन को कम करना पड़ेगा और इसके प्रभावों के अनुकूल होना पड़ेगा। भले ही सबसे बड़े परिवर्तन भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में हों, हम सभी वैश्विक खाद्य प्रणाली के माध्यम से इन प्रभावों को महसूस करेंगे। अतः हमें इन समस्याओं को दूर करने के लिए मिलकर काम करना पड़ेगा। इस अंतर्संबंध का मतलब है कि दुनिया के एक हिस्से में जलवायु द्वारा संचालित फसल विफलताओं का असर समस्त सप्लाई चेन पर पड़ेगा, जिससे हर जगह खाद्य कीमतों और उपलब्धता पर असर पड़ सकता है। अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि जलवायु परिवर्तन को कम करना आवश्यक है, लेकिन एक गर्म और अधिक अप्रत्याशित ग्रह पर उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों से निपटने के लिए बेहतर योजना बनाना भी उतना ही जरूरी है।

(लेखक विज्ञान मामलों के जानकार हैं)

हिंदवी स्वराज्य का ज्वलंत दीप, रक्षक: छत्रपति संभाजी भोसले

प्रो. आरके जैन

छत्रपति संभाजी भोसले, मराठा साम्राज्य के तेजस्वी सूर्य, जिनका जन्म 14 मई 1657 को पुरंदर किले में हुआ, एक ऐसे युगपुरुष थे, जिन्होंने स्वराज्य की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। उनकी जयंती न केवल एक ऐतिहासिक अवसर है, बल्कि वह प्रेरणा है जो हर भारतीय के हृदय में शौर्य, धर्म और स्वतंत्रता की ज्वाला प्रज्वलित करती है। संभाजी महाराज का जीवन एक तपस्वी योद्धा, विद्वान शासक और हिंदवी स्वराज्य के प्रति अटूट समर्पण का प्रतीक है। उनके शासनकाल में मराठा साम्राज्य ने मुगल साम्राज्य की विशाल सेना को बार-बार परास्त किया और स्वराज्य की नींव को अडिग रखा। यह लेख उनके जीवन, युद्धकौशल, प्रशासनिक दूरदर्शिता, साहित्यिक योगदान और धर्म के प्रति उनकी अटल निष्ठा का एक स्मरण है, जो हमें उनके बलिदान की महत्ता को समझने के लिए प्रेरित करता है। संभाजी महाराज का जन्म शिवाजी महाराज और उनकी प्रथम पत्नी सईबाई के घर हुआ। मात्र ढाई वर्ष की आयु में माता के देहांत के बाद उनकी दादी, राजमाता जीजाबाई ने उनके लालन-पालन का दायित्व संभाला। जीजाबाई के मार्गदर्शन में संभाजी का व्यक्तित्व एक कुशल योद्धा, चतुर रणनीतिकार और विद्वान के रूप में निखरा। उन्होंने मराठी, संस्कृत और अन्य भाषाओं में प्रवीणता हासिल की, जो उनके साहित्यिक कार्यों में स्पष्ट झलकती है। "बुधभूषण" जैसे उनके ग्रंथ संस्कृत साहित्य में उनकी गहन रुचि और विद्वता को दर्शाते हैं। संभाजी का विवाह जिवुबाई (येसुबाई) के साथ हुआ, जिसने मराठा साम्राज्य को कोंकण क्षेत्र में मजबूती प्रदान की। यह वैवाहिक गठबंधन सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। बचपन से ही संभाजी को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। नौ वर्ष की आयु में, पुरंदर संधि के तहत उन्हें मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा बंधक बनाकर आगरा ले जाया गया। वहां शिवाजी महाराज के साथ नजरबंदी के दौरान उनकी बुद्धिमत्ता और साहस ने उन्हें एक असाधारण बालक के रूप में स्थापित किया। बाद में, पिता-पुत्र के बीच कुछ मतभेदों के कारण उन्हें पन्हाला किले में नजरबंद किया गया। कुछ इतिहासकार इसे उनके व्यक्तिगत व्यवहार या मुगलों के साथ संक्षिप्त गठजोड़ से जोड़ते हैं, किंतु संभाजी ने अपनी गलतियों से सीखा और पिता की मृत्यु के बाद मराठा साम्राज्य की बागडोर संभाली। 20 जुलाई 1680 को संभाजी का वैदिक रीति से राज्याभिषेक हुआ। उन्होंने "शककर्ता" और "हिंदवी धर्मोधारक" की उपाधियां ग्रहण कीं। उनके शासन की शुरुआत में ही आंतरिक और बाहरी चुनौतियां सामने आईं। शिवाजी की मृत्यु के बाद उनकी सौतेली मां सोयराबाई ने अपने पुत्र राजाराम को सिंहासन पर बिठाने की साजिश रची। संभाजी ने इस साजिश को कुशलतापूर्वक विफल कर पन्हाला और रायगढ़ किलों पर नियंत्रण स्थापित किया। साजिशकर्ताओं को दंडित कर उन्होंने अपने दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। यह कठोर निर्णय उनके शासन के प्रारंभ में विवादास्पद रहा, किंतु यह मराठा साम्राज्य की एकता के लिए आवश्यक था। संभाजी महाराज का शासनकाल युद्धों और सैन्य अभियानों का स्वर्णिम अध्याय है। उनके नेतृत्व में मराठाओं ने लगभग 210 युद्ध लड़े, जिनमें से अधिकांश में वे विजयी रहे। बुरहानपुर पर उनका आक्रमण, जिसमें 20,000 मराठा सैनिकों ने मुगल सेना को परास्त कर खानदेश की राजधानी को लूटा, उनकी सैन्य कुशलता का प्रतीक है। उन्होंने मैसूर और गोवा जैसे क्षेत्रों में भी अपने अभियानों को विस्तार दिया। संभाजी ने शिवाजी की छापामार युद्ध शैली को और परिष्कृत किया, जिसमें शत्रु की कमजोरियों का त्वरित और गोपनीय उपयोग उनकी प्रमुख रणनीति थी। उनकी सैन्य रणनीतियों ने औरंगजेब की विशाल सेना को दक्षिण भारत में बार-बार पराजय का सामना करने पर मजबूर किया। प्रशासनिक दृष्टि से, संभाजी ने अपने पिता की नीतियों को और सुदृढ़ किया। उन्होंने सार्वजनिक मार्गों और जल निकास व्यवस्था का जीर्णोद्धार कराया, किसानों पर करों को कम किया और प्रजा को निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएं प्रदान कीं। धर्म के प्रति उनकी निष्ठा उनके कार्यों में स्पष्ट थी। उन्होंने चिंचवड के देवस्थान को सैनिकों के उपद्रव के लिए कठोर चेतावनी दी और वाई प्रांत के सुभेदार को मठों के लिए नियत अनुदान समय पर पहुंचाने का आदेश दिया। संभाजी ने सक्ती के धर्मांतरण का कड़ा विरोध किया और हिंदुओं के लिए पुनर्जनन विभाग स्थापित किया, जो उनकी धार्मिक सहिष्णुता और समावेशी नीतियों का परिचायक है। संभाजी का साहित्यिक योगदान भी उल्लेखनीय है। उनके द्वारा रचित "बुधभूषण" और "नायिकाभेद" जैसे ग्रंथ उनकी विद्वता और सांस्कृतिक रुचि को दर्शाते हैं। उन्होंने संस्कृत और मराठी साहित्य को समृद्ध किया और अपने शासनकाल में कवियों और विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया। यह उनके व्यक्तित्व का वह पहलू है, जो अक्सर उनके युद्धकौशल के सामने कम चर्चित रहता है। दुर्भाग्यवश, संभाजी का जीवनकाल अल्प रहा। 1689 में, मुगल सेना ने उन्हें धोखे से बंदी बना लिया। औरंगजेब ने उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए विवश किया, किंतु संभाजी ने अपने धर्म और स्वराज्य के प्रति अटल निष्ठा दिखाई। 11 मार्च 1689 को, तुलापुर में उनकी क्रूर हत्या कर दी गई। उनकी मृत्यु ने मराठा साम्राज्य को झकझोर दिया, किंतु उनके बलिदान ने स्वराज्य की भावना को और प्रज्वलित किया। उनकी पत्नी येसुबाई और पुत्र शाहू ने उनके सपनों को आगे बढ़ाया। संभाजी महाराज की जयंती हमें उनके बलिदान और स्वराज्य के प्रति उनकी अटूट निष्ठा को स्मरण करने का अवसर देती है। वे न केवल एक शासक थे, बल्कि एक प्रेरणा थे, जिन्होंने अपने जीवन से हमें सिखाया कि स्वतंत्रता और धर्म के लिए कोई भी बलिदान छोटा नहीं होता। उनका जीवन एक दीपस्तंभ है, जो हमें साहस, बुद्धिमत्ता और कर्तव्यनिष्ठा का पाठ पढ़ाता है। आज, जब हम उनकी जयंती मना रहे हैं, आइए संकल्प लें कि हम उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएंगे और स्वराज्य की भावना को जीवित रखेंगे। संभाजी महाराज का नाम इतिहास के पन्नों में अमर है, और उनकी गाथा हर भारतीय के हृदय में गूंजती रहेगी।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक व संपादक **सरोज चौधरी** द्वारा ई-37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित तथा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस लालगुटवा रांची से मुद्रित, **संस्थापक संपादक : स्व. राधाकृष्ण चौधरी, प्रबंध संपादक अरूण कुमार चौधरी * फोन :** 9471170557/08084674042, **ई-मेल :** aadivashiexpress@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

राहगीरों को पीने के लिए ठंडा पानी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कई इलाको में प्याऊ की व्यवस्था की गई

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। राजद जिला उपाध्यक्ष दिनेश यादव की ओर से शहर में पड़ रही भीषण गर्मी को देखते हुए आमलोगों व राहगीरों को पीने के लिए ठंडा पानी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कई इलाको में प्याऊ की व्यवस्था की गई है।जहां शहर के प्रमुख स्थानों चैती दुर्गा मंदिर मोड़,गोड़ाबाड़ी हटिया मोड़,रेलवे फाटक,चौक बाजार,पटेल चौक एवं रेलवे स्टेशन चौक मोड़ के समीप ठंडा प्याऊ पानी की व्यवस्था की गई है!जहां इस ठंडा प्याऊ पानी व्यवस्था के लग जाने से अब भीषण गर्मी में आमलोगों व राहगीरों को पीने के लिए ठंडा पानी के लिए इधर उधर भटकना नहीं पड़ेगा।वही बातचीत के क्रम में राजद जिला उपाध्यक्ष दिनेश यादव ने कहा कि पूरे जिले में पड़ रही भीषण गर्मी को देखते हुए जिले के सभी प्रखंडो में भी इस तरह की व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी ताकि ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोगों को भी इसका समुचित लाभ मिल सकें! मौक़े पर मुकेश कुमार,रंजीत कुमार यादव,ऋषि यादव,अलख मिश्रा,बलराम यादव विवेक कुमार मंडल,तारकेश्वर यादव सहित अन्य लोग मौजूद थे!

प्रधानमंत्री आवास का पैसा लेकर आवास नहीं बनाने के आरोप में दो लोगों को पड़कर थाना को सुपुर्द किया

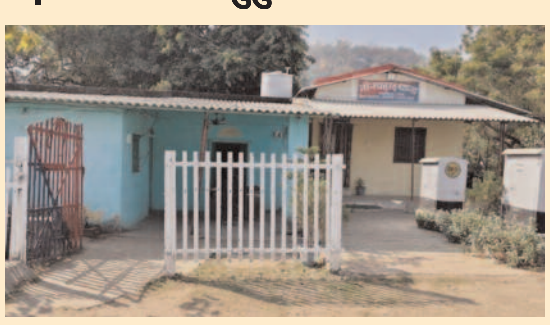

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

तीनपहाड़। राजमहल प्रखंड बीडियो ने प्रधानमंत्री आवास का पैसा लेकर आवास नहीं बनाने के आरोप में दो लोगों को पड़कर थाना को सुपुर्द किया है। मिली जानकारी के अनुसार राजमहल प्रखंड के दरला पंचायत के सरायपुरा के मोहनलाल तिग्गा और दसवा तुरी को प्रथम किस्त लेने के बाद लगभग 2 साल बीत जाने के बाद भी आवास निर्माण नहीं करने पर पकड़ कर तीनपहाड़ थाना को सुपुर्द कर दिया है। वही इस बारे में राजमहल बीडियो मो. यूसुफ ने बताया कि यह लोग 2 साल से प्रथम किस्त का रुपए लेकर आवास निर्माण नहीं कर रहे थे, इनको कई बार नोटिस भी किया गया था। वैसे लाभुक जो रुपए लेकर आवास निर्माण नहीं कर रहे हैं, उनपर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

उपायुक्त कार्यालय प्रकोष्ठ में जिला दंडाधिकारी-सह-उपायुक्त ने जनता दरबार के माध्यम से आमजनों की समस्याएं सुनी

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। जनता दरबार में जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों ने अपनी समस्याओं से जिला दंडाधिकारी-सह-उपायुक्त हेमंत सती को अवगत कराया। उपायुक्त ने लोगों से एक-एक कर उनकी समस्याएं सुनी। साथ ही उनके सामाधान को लेकर उन्हें आश्वस्त कराया। संज्ञान में आए हुए शिकायतों की जांच कराते हुए जल्द से जल्द समाधान करने की बात कही। गौरतलब है कि जनता दरबार के दौरान शिकायत के रूप में आए आवेदन विभिन्न विभागों व योजना से संबंधित रहे। जनता दरबार में शिकायतकर्ता की समस्याएं को सुनने के पश्चात उपायुक्त ने संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को उनका समाधान करने को लेकर निर्देशित किया। सभी आवेदनों की भौतिक जांच करते हुए उसका समाधान जल्द से जल्द सभी संबंधित पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए प्रतिपुष्टि उपायुक्त कार्यालय को समर्पित करें।

फेक आईडी बनाकर युवती को बदनाम करने वाले पर थाना में मामला दर्ज

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज, तीनपहाड़। जिला के तीन पहाड़ क्षेत्र अंतर्गत नीचे टोला निवासी एक युति को अज्ञात द्वारा फेक आईडी बनाकर परेशान करने को मामले प्रकाश में आया है। पीड़ित युवती के करीबी ने बताया कि पीड़ित युवती का फेक आईडी बनाकर एक अज्ञात लड़का फोटो और वीडियो लगाकर उसे बदनाम करने की कोशिश की जा रही है। जब जब विपरीत युति ने उसे अज्ञात को मैसेज किया तो उन्होंने जान मारने की धमकी दी। बताया गया कि यूवति की शादी तय हो गई थी अज्ञात के गलत स्टेटस लगाने के कारण उनकी शादी भी छूट गई। मामले को लेकर तीनपहाड़ थाना कांड संख्या 75/ 25 मामला दर्ज कर पुलिस छानबीन कर रही है। समाचार लिखे जाने तक मामले में तीनपहाड़ थाना प्रभारी से मोबाइल पर संपर्क नहीं हो सका था।

इलेक्ट्रॉनिक्स के मालिक संजीव कुमार हत्याकांड में एक और अपराधी पंकज कुमार मंडल को पुलिस ने किया गिरफ्तार

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। सदर अनुमंडल कार्यालय में आज मंगलवार को अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी किशोर तिर्की ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि दिनांक 04 मई 2025 को नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत कॉलेज रोड चैती दुर्गा के पास जी. एस. इलेक्ट्रॉनिक्स के मालिक संजीव कुमार गुप्ता उर्फ गुड्डू, पिता स्व0 गौरी शंकर साह को उनके दुकान में घुसकर दो अज्ञात अपराधियों के द्वारा गोली मार दी गयी थी, जिसमें ईलाज के क्रम में उनकी मृत्यु हो गयी। इस संबंध में नगर थाना कांड सं-74/25 दिनांक 05 मई 2025, धारा-103 (1) बी.एन.एस. एवं 27 आर्म्स एक्ट अंकित किया गया था। घटना को देखते हुए पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह साहेबगंज के द्वारा घटना के उद्बेदन एवं अपराधकर्मी की गिरफ्तारी के लिए एक एसआईटी टीम का गठन किया गया था। पुलिस अधीक्षक साहेबगंज के द्वारा गठित टीम के द्वारा पूर्व में ही इस घटना में शामिल 5 अभियुक्तों, मनीष कुमार मंडल, कुश कुमार मंडल, विनोद कुमार तांती, छगुरी रजक उर्फ चुटरा एवं गोविन्द कुमार मंडल को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेजा गया है। अभियुक्तों के पास से घटना में प्रयुक्त देशी पिस्टल, देशी कट्टा, जिंदा गोली, फायर किया हुआ खोखा एवं घटना के समय अभियुक्तों के द्वारा पहने हुए कपड़ा बरामद किया गया था। पुलिस अधीक्षक के द्वारा गठित एसआईटी टीम के द्वारा लागातार छापामारी करते हुए इस कांड के मुख्य अभियुक्त पंकज कुमार मंडल उम्र 42 वर्षीय, पिता नवल किशोर मंडल, साकिन कॉलेज रोड चैती दुर्गा के निवासी को गिरफ्तार कर लिया गया है और साथ में सैमसंग कंपनी का एक मोबाइल भी जप्त किया गया। अभियुक्त पंकज कुमार मंडल के द्वारा ही एक लाख रूपया में मृतक संजीव कुमार गुप्ता उर्फ गुड्डू को मारने की सुपारी दी गयी थी। अभियुक्त पंकज कुमार मंडल के द्वारा ही शुटरो को हथियार उपलब्ध कराया गया था। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार चैती दुर्गा पास के ही रहने वाली एक महिला से अभियुक्त पंकज कुमार मंडल का प्रेम प्रसंग, 2 साल से उसके साथ चल रहा था, कुछ दिनों से अभियुक्त पंकज कुमार मंडल के साथ महिला का रिश्ता खराब हो गया था, अभियुक्त ने उस महिला के ऊपर 7 लाख रुपए खर्च किया था, जब अभियुक्त के पास पैसा खत्म हो गया तो वह महिला उससे दरकिनार कर लिया और उसे छोड़ दिया। अभियुक्त पंकज कुमार मंडल को शक हुआ कि महिला किसी अन्य पुरुष के संपर्क में आ गई है इसी शक के आधार पर मृतक संजीव कुमार गुप्ता उर्फ गुड्डू मौत का कारण बना। पुलिस ने अभियुक्त पंकज कुमार मंडल को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। छापामारी दल में पुनि अमित कुमार गुप्ता सह थाना प्रभारी नगर थाना, साहेबगंज, पुअनि अनिश कुमार पाण्डेय नगर थाना साहेबगंज, पुअनि प्रदीप कुमार महतो नगर थाना साहेबगंज, और अन्य पुलिसकर्मी शामिल थे।

अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों के स्कूली छात्र-छात्राओं के बीच प्रखंड स्तरीय कैरम टैलेंट प्रतियोगिता आयोजित की गई

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। तालझारी प्रखंड संसाधन केंद्र के तत्वावधान में मंगलवार को सेन्ट जोन मध्य विद्यालय में प्रखंड अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों के स्कूली छात्र-छात्राओं के बीच प्रखंड स्तरीय कैरम टैलेंट प्रतियोगिता आयोजित की गयी। प्रतियोगिता का उदघाटन बीपीओ अटल बिहारी भगत ने किया। उन्होंने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। प्रतियोगिता में अंडर-17 और अंडर-19 आयु वर्ग के विद्यार्थियों के बीच एकल और युगल श्रेणी में आयोजित की गयी। प्रतियोगिता में अंडर-17 बालक एकल में मो दिलशाद आलम यू एच एस करणपुरा एवं युगल में माईकल किस्कु व सोनू हांसदा यू एच एस कन्या विद्यालय तालझारी विजेता बना। वहीं अंडर 19 बालिका वर्ग एकल में कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की बीजोली पहाडिन एवं युगल में कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की संनेलता हेम्ब्रम, मंजु हांसदा एवं अंडर 17 वर्ग एकल में नेहा मरांडी यू एच एस पोखरिया एवं रानी कुमारी कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विजेता हुई।बीपीओ अटल बिहारी भगत ने बताया की प्रखंड स्तरीय इस प्रतियोगिता में विजेता हुए बालक बालिका जिला स्तरीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे।विजयी प्रतिभागियों को सीआरपी मनोज कुमार और बीपीओ अटल बिहारी भगत ने मेडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।मौके पर सीआरपी सहित संबंधित विधालय के शिक्षक व शिक्षिका मौजूद थे।

भीषण गर्मी के बीच भी वरदान चैरिटेबल ट्रस्ट ने किया अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह

आदिवासी एक्सप्रेस

पलामू। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि वरदान चैरिटेबल ट्रस्ट पलामू की एकमात्र संस्था है जो सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों को लगातार जागरूक कर रही है ! इस टीम का टार्गेट स्कूल/कॉलेज के बच्चे होते हैं क्योंकि किशोरावस्था आते ही गाड़ी चलाने के प्रति उनकी ललक चरम पर होती है ।और बाइक या स्कूटी की चाभी हाथ में आते ही वो खुद को हीरो समझने लगते हैं ।फिल्मों में हीरो / हीरोइन के गाड़ी चलाने की स्टाइल से ये बच्चे खासा प्रभावित होते हैं।नतीजा होता है कि कभी ओवरस्पीड, कभी गलत दिशा से ओवरटेक करने या हेल्मेट न पहनने की वजह से वे दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं ।असमय ऐसे लोगों की मृत्यु से पूरा परिवार बिखर जाता है। वरदान चैरिटेबल ट्रस्ट लगातार प्रयासरत है कि असमय किसी घर का चिराग न बूझे।ये बच्चे खुद भी सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक हों और अपने अभिभावकों को भी जागरूक करें। इसी क्रम में टीम वरदान आज शाहपुर स्थित रेडरोज पब्लिक स्कूल पहुंची और वहां हजारों बच्चों को सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी दी।प्राचार्य विमल कुमार ने टीम वरदान का गर्मजोशी से स्वागत किया।तत्पश्चात शर्मिला वर्मा, पंकज लोचन, अभिषेक तिवारी, मयूरेश द्विवेदी, काश्मीरी टोप्पो आदि वक्ताओं ने सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी दी।संध्या अग्रवाल ने सड़क सुरक्षा गीत गाया और ट्रैफिक प्रभारी शमाल अहमद सर ने सड़क सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने पर दंड के प्रावधान पर जानकारी साझा की। साथ ही बच्चों से आग्रह किया कि सही उम्र से पहले गाड़ी लेकर सड़कों पर कदापि न उतरें। टीम वरदान के इस अहम और नेक कार्य में तमाम स्कूल प्रबंधनों का महत्वपूर्ण योगदान है, जिसके लिए यह टीम उनका हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

बाघवार अकादमी का सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में शत-प्रतिशत परिणाम

चान्हो। 13 मई 2025, सोमवार, सीबीएसई ने झारखंड सहित पूरे देश में आयोजित 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर जारी किया। चान्हो स्थित बाघवार अकादमी ने अपने उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन को बनाए रखते हुए एक बार फिर शत-प्रतिशत परिणाम प्राप्त किया।

इस वर्ष विद्यालय के कुल 107 छात्र-छात्राएं 10वीं बोर्ड परीक्षा में सम्मिलित हुए, जिनमें से:

- 60 छात्र-छात्राएं प्रथम श्रेणी में सफल हुए।
- 42 छात्र-छात्राएं द्वितीय श्रेणी में सफल हुए।
- 5 छात्र-छात्राएं तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

विद्यालय के शीर्ष प्रदर्शनकर्ता:

1. सोनाक्षी जायसवाल - 88.6% (प्रथम स्थान)
2. कृतार्थ खालको - 85.02% (द्वितीय स्थान)
3. अलफीजन्नत - 85% (तृतीय स्थान)
4. अस्तित्व आर्यन - 84.4% (चौथा स्थान)
5. बुलबुल रानी - 82.5% (पांचवां स्थान)
6. शांति हेंब्रम - 81.4% (छठा स्थान)

क्लास 12 में शिवम् राज 67.8 प्रतिशत लाकर प्रथम स्थान पर रहा एवं अफ़रीन प्रवीण और शीला उराव क्रमशः 65.6 एवं 64.4 प्रतिशत लाकर द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे।क्लास 12 का यह पहला बैच था जिसमे सात बच्चे वार्षिक परीक्षा में शामिल हुए थे।

बाघवार अकादमी ने अपने उत्कृष्ट शिक्षण और समर्पित प्रयासों के माध्यम से छात्रों को उत्कृष्ट परिणाम दिलाने में सफलता प्राप्त की है। विद्यालय परिवार इस उल्लेखनीय सफलता के लिए सभी छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को हार्दिक बधाई देता है।

प्रथम पृष्ठ का शेष

छत्तीसगढ़ व झारखंड में एक साथ दबिश से.....

दरअसल झारखंड पुलिस माओवादियों के शीर्ष नेतृत्व को टारगेट में रखकर अभियान चला रही है. मात्र ढाई सालों में झारखंड पुलिस के द्वारा बेहतर रणनीति के बल पर चलाए गए अभियान की वजह से भाकपा माओवादियों के शीर्ष नेतृत्व को लगातार झटके लगते रहे हैं. पुलिस के आंकड़े भी इस बात की गवाही दे रहे हैं कि झारखंड में पिछले ढाई सालों में जब कभी भी बड़े नक्सल कमांडर ने सक्रियता दिखाई, उसे उसका गंभीर परिणाम भुगतना पड़ गया.

कब कब पकड़े गए बड़े नक्सलीझारखंड पुलिस मुख्यालय से मिले आंकड़ों के अनुसार साल 2021 से लेकर 2025 के फरवरी महीने तक कुल 1490 नक्सली गिरफ्तार हुए. इनमें कई बड़े नाम भी शामिल है. जिनकी गिरफ्तारी से संगठन को बड़ा झटका लगा. बड़े नक्सलियों को टारगेट कर अभियान चलाने की शुरुआत 2020 से शुरू हुई थी. इस दौरान कई बड़े और इनामी गिरफ्तार किए गए.

प्रमुख नाम जो गिरफ्तार हुए : प्रशांत बोस, इनाम एक करोड़, रूपेश कुमार सिंह (सैक मेम्बर) प्रभा दी, इनाम 10 लाख, सुधीर किस्कू, इनाम 10 लाख, प्रशांत मांझी, इनाम 10 लाख, नंद लाल मांझी, इनाम 25 लाख, बलराम उरावं, इनाम 10 लाख.

झारखंड में भाकपा माओवादियों को ताकतवर बनाने वाले कई बड़े नाम संगठन छोड़ कर पुलिस की शरण में आ चुके हैं. महाराज प्रमाणिक, विमल यादव, सुरेश सिंह मुंडा, भवानी सिंह, विमल लोहरा, संजय प्रजापति, अभय जी, रिमी दी, राजेंद्र राय जैसे बड़े नक्सली पुलिस के सामने हथियार डाल चुके हैं. पुलिस के द्वारा की गई तबाड़तोड़ कार्रवाई की वजह से झारखंड के सबसे बड़े नक्सली संगठन भाकपा माओवादियों को अब उनके प्रभाव वाले इलाकों में ही बिखरने पर मजबूर कर दिया है. झारखंड में भाकपा माओवादियों के प्रभाव का बड़ा इलाका नेतृत्वविहीन हो गया है.

झारखंड, छतीसगढ़ और बिहार तक विस्तार वाला बूढ़ापहाड़ का इलाका माओवादियों के सुरक्षित गढ़ के तौर पर जाना जाता था, लेकिन अब बूढ़ापहाड़ के इलाके में पड़ने वाले पलामू, गढ़वा, लातेहार से लेकर लोहरदगा तक के इलाके में माओवादियों के लिए नेतृत्व का संकट हो गया है.

गौरतलब है कि साल 2018 के पूर्व सीसी मेंबर देवकुमार सिंह उर्फ अरविंद जी बूढ़ापहाड़ इलाके का प्रमुख था, देवकुमार सिंह की बीमारी से मौत के बाद तेलगांना के सुधाकरण को यहां का प्रमुख बनाया गया था, लेकिन साल 2019 में तेलंगाना पुलिस के समक्ष सुधाकरण ने सरेंडर कर दिया था.

इसके बाद बूढ़ा इलाके की कमान विमल यादव को दी गई थी. विमल यादव ने फरवरी 2020 तक बूढ़ापहाड़ के इलाके को संभाला, इसके बाद बिहार के जेल से छूटने के बाद मिथलेश महतो को बूढ़ापहाड़ भेजा गया था, तब से वह ही यहां का प्रमुख था, लेकिन मिथिलेश को भी बिहार में गिरफ्तार कर लिया गया. नतीजा अब सिर्फ और सिर्फ कोल्हान इलाके में ही नक्सलियों का शीर्ष नेतृत्व बचा हुआ है.

टोटो पलटने से गंभीर रूप से घायल हो गई

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत नया टोला भवानी चौकी निवासी मोहम्मद अंसार अली की 50 वर्षीय पत्नी मदीना बीबी की टोटो पलटने से गंभीर रूप से घायल हो गई।जहां राहगीरों की मदद से घायल को इलाज हेतु सदर अस्पताल लाया।वही ड्यूटी पर रहे डॉक्टर के देख रेख में इलाज किया जा रहा है। वही घायल के पुत्र मोहम्मद चावलिश ने बताया कि मेरी मां टोटो में बैठ के साहिबगंज डॉक्टर के पास जा रही थी।अचानक तलबनना के समीप टोटो पलट जाने से गंभीर रूप से घायल हो गया। वही डॉक्टर के देख रेख में इलाज किया जा रहा है। वही घायल मदीना बीबी के सर और हाथ में गंभीर चोट लगी है।

मोटरसाइकिल की टक्कर में मोटरसाइकिल सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। शहर के कलुआ पुल के पास मंगलवार की सुबह करीब 6:00 बजे ट्रक व मोटरसाइकिल की टक्कर में मोटरसाइकिल सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया है। मिली जानकारी के अनुसार पुलिस घायल युवक को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया है। घायल युवक सकरीगली रामपुर के रामजीवन सिंह का पुत्र सचिन चौधरी 20 वर्षीय है। घायल युवक ने बताया कि वे बिहार के पीरपैंती के बाराहाट अपना ससुराल मोटरसाइकिल से जा रहा था। इसी दौरान कलुआ पुल के पास सामने से आते ट्रक से धक्का लग गया है। इसमें मोटरसाइकिल सवार युवक के सर, दोनों पैर व हाथ में गंभीर चोट लगी है। वहीं पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

गलती से चूहा मारने की दवा खाने से किशोरी हुई गंभीर अस्पताल में भर्ती

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। जिले के तालझारी थाना क्षेत्र अंतर्गत सकरीगली बड़ी भंगिया मारी गांव में गलती से किशोरी चूहा मारने की दवा खाने से गंभीर हो गई गंभीर किशोरी को परिजनों ने इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया बताया जा रहा है कि सकरीगली बड़ी भंगिया मारी गांव निवासी भोरुल सिंह की 15 वर्षीय पुत्री भूल वर्ष गलती से चूहा मारने कि दवा खाने से हालत बिगड़ गई बरहाल किशोरी का इलाज सदर अस्पताल में डॉक्टर के देखरेख में किया गया।

मंडप से दूल्हा हुआ फरार बड़े मस्सकत के 3 घंटे बाद कराया गया शादी

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

इटखोरी (चतरा)। शादी के मौसम में कई जगह से अजीबोगरीब वाकये सामने आ रहे हैं। ऐसा ही एक वाकया भद्रकाली मंदिर परिसर में मंगलवार रात में देखने को मिला। भद्रकाली मंदिर यज्ञशाला से एक दूल्हे ने शादी से इंकार करते हुए फरार हो गया, जब दूल्हा के फरार हो जाने के बाद लड़की बार बार होने लगी बेहोश। भद्रकाली मंदिर में रशीद कटने के बाद सारी रस्मे पूरी हो चुकी थी मांग में सिंदूर भरने से पहले दूल्हा फरार हो गया। फरार होने के बाद इटखोरी थाना को सुचना दिया गया जिसके बाद थाना प्रभारी अभिषेक कुमार सिंह ने पीसीआर को सूचना दिए मौके पर पहुंची पुलिस और मंदिर समिति सदस्य सुरेंद्र सिंह, नागेश्वर यादव, समाजसेवी संतोष कुमार दास के सहयोग से बड़े ही मस्सकत के 3 घंटे के बाद लड़का लड़की की शादी करायी गयी। सभी लोगों ने दोनों दूल्हा दुल्हन को दिया आशीर्वाद।

गिरिडीहः भीषण गर्मी में पानी के लिए त्राहिमाम, गिरिडीह के वार्ड नं. 15 में नदी से चुंआ खोदकर पानी लाने को मजबूर लोग

गिरिडीह, प्रतिनिधि। गिरिडीह नगर निगम क्षेत्र के वार्ड नंबर 15, करबला रोड (हरिजन टोला) के निवासी इन दिनों भीषण गर्मी और पानी की भयंकर किल्लत से परेशान हैं। करीब 50 से अधिक परिवारों के सामने पीने के पानी का संकट गहराता जा रहा है। इस इलाके में नगर निगम की ओर से पाइपलाइन तो डाली गई है, लेकिन इन पाइपों से कभी भी एक बूंद पानी नहीं निकला। भीषण गर्मी के इस दौर में जब पारा चढ़ा हुआ है, लोगों के पास

नदी से चुंआ खोदकर पानी निकालने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है। स्थिति इतनी खराब हो गई है कि अब वह नदी भी सूख चुकी है, जो कभी लोगों का एकमात्र सहारा हुआ करती थी। इसके चलते लोग अब पूरी तरह से जल संकट के मुहाने पर आ खड़े हुए हैं। कई बार नगर निगम को लिखित रूप में आवेदन देने के बावजूद कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। न अधिकारी सुनवाई कर रहे हैं, न ही पानी की व्यवस्था हो पाई है। अब मोहल्ले के लोगों का सब्र टूट रहा है और वे आंदोलन की राह पकड़ने को मजबूर हो रहे हैं। स्थानीय लोगों की माने तो वे अब नदी से किसी तरह गंदा पानी लाकर खाना बनाने से लेकर कपड़े धोने और अन्य जरूरी काम कर रहे हैं। इससे बच्चों और महिलाओं की सेहत पर गंभीर असर पड़ रहा है। संक्रमण और बीमारियों का खतरा लगातार मंडरा रहा है, लेकिन पानी न होने की मजबूरी में लोग इस गंदे पानी का इस्तेमाल करने पर विवश हैं। यह स्थिति केवल आम जनजीवन को ही नहीं, बल्कि पूरे इलाके की स्वच्छता और स्वास्थ्य पर भी सवाल खड़े करती है। लोगों का कहना है कि जब पानी नहीं मिल रहा है तो नगर निगम को बिल भेजने का क्या औचित्य है, हर महीने पानी का बिल जरूर आ जाता है, लेकिन पानी एक बार भी नल से नहीं निकलता। इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था से मोहल्ले में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। अब यहां के लोग संगठन बनाकर नगर निगम के खिलाफ प्रदर्शन करने की तैयारी में हैं। उनका साफ कहना है कि अगर जल्द समाधान नहीं हुआ तो उग्र आंदोलन किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने से व्यक्ति की मौत, इलाके में शोक की लहर

गिरिडीह, प्रतिनिधि। गिरिडीह- धनबाद मुख्य पथ पर वनांचल कॉलेज के पास मंगलवार को एक तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने से फकीरा पहरी निवासी शंभु पांडेय की मौत हो गई। वह अपने रिश्तेदार के घर पुरनानगर जा रहे थे जब दुर्घटना हुई। स्थानीय लोगों की मदद से घायल शंभु को गिरिडीह सदर अस्पताल ले जाया गया, जहां से गंभीर स्थिति में उन्हें धनबाद रेफर किया गया, लेकिन रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। हादसे के बाद लोगों ने ट्रक को पकड़कर मुफ्फसिल थाना पुलिस को सूचना दी, जिसने ट्रक को जब्त कर लिया। घटना से ब्राह्मण समाज और परिजनों में शोक की लहर है।

बीएनएस डीएवी के छात्रों ने सीबीएसई परीक्षा-2025 में दिखाया शानदार प्रदर्शन

गिरिडीह, प्रतिनिधि। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड सीबीएसई द्वारा घोषित कक्षा 12वीं के परीक्षा परिणाम में बीएनएस डीएवी पब्लिक स्कूल के छात्रों ने शानदार प्रदर्शन किया। विज्ञान वर्ग में रितिक राज ने 98प्रतिशत अंक प्राप्त कर टॉपर बने, जबकि माही सिंह और मुस्कान कुमारी क्रमशः 95.8प्रतिशत और 94.6प्रतिशत अंकों के साथ दूसरे और तीसरे स्थान पर रहीं। वाणिज्य वर्ग में दिव्या जैन 97.4प्रतिशत अंकों के साथ शीर्ष पर रहीं। वहीं कला वर्ग में कृतिका कुमारी साहा ने 97.8 प्रतिशत अंक हासिल कर टॉपर का स्थान प्राप्त किया। विद्यालय प्राचार्य सचिन गर्ग ने सभी विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

गिरिडीह में पेयजल संकट को लेकर माले नेता ने सौंपा ज्ञापन

- समाधान नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी

गिरिडीह, प्रतिनिधि। गिरिडीह नगर निगम क्षेत्र में बढ़ती पेयजल समस्या को लेकर माले नेता राजेश सिन्हा ने उपनगर आयुक्त प्रशांत लायक को ज्ञापन सौंपा और चेतावनी दी कि अगर जल्द समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि वार्ड 15 समेत कई इलाकों में लोग नदी से चूंवा खोदकर पानी पीने को मजबूर हैं, जबकि 36 में से सिर्फ 30 वार्डों में ही आंशिक जलापूर्ति हो रही है। नगर निगम पर आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा कि दो समय का बिल तो आता है, पर एक बार भी पानी ठीक से नहीं मिलता। उपनगर आयुक्त ने आश्वासन दिया कि सभी वार्डों की समस्याओं पर रांची में बैठक कर समाधान की दिशा में कदम उठाए जाएंगे।

तिसरी सीओ के खिलाफ किसान जनता पार्टी का आक्रोश मार्च

- पुलिसिया उत्पीड़न और झूठे मुकदमों की जांच की मांग

गिरिडीह, प्रतिनिधि। जिले के तिसरी प्रखंड में किसानों पर हो रहे झूठे मुकदमों और पुलिसिया उत्पीड़न के विरोध में किसान जनता पार्टी ने शुक्रवार को झंडा मैदान से एसपी आवास तक आक्रोश मार्च निकाला। सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ताओं ने सीओ को बर्खास्त करो और किसानों पर अत्याचार बंद करो जैसे नारे लगाते हुए प्रदर्शन किया। पार्टी ने ज्ञापन सौंपते हुए तिसरी थाना कांड संख्या 32/2025 को रद्द करने, सीओ की उच्चस्तरीय जांच कर बर्खास्तगी की मांग और ग्रामीणों को सुरक्षा देने की मांग की। पार्टी का कहना है कि जब तक किसानों को न्याय नहीं मिलेगा, शांतिपूर्ण संघर्ष जारी रहेगा।

हर पंचायत में जल संकट से निपटने की स्थाई व्यवस्था बनाई जाएः ई अनिल चौधरी

- जमुआ विधानसभा में पानी कि समस्या विकराल रुप ले रहाः ई अनिल चौधरी
- कई गांवों में पाइपलाइन बिछी तो है, लेकिन पानी नहीं, जलमीनारें हैं, पर टंकी सूखी है
- यह भ्रष्टाचार, लापरवाही और प्रशासनिक असफलता का स्पष्ट उदाहरण है

गिरिडीह, प्रतिनिधि। जिले के जमुआ प्रखंड और देवरी प्रखंड इस समय भीषण जल संकट से जूझ रहे हैं। गर्मी की मार ऐसी है कि गांव-गांव में कुएं सूख चुके हैं, तालाबों का अस्तित्व खत्म हो चुका है, और नदियों में जल का नामोनिशान नहीं है। हालात इतने बदतर हैं कि लोगों को पीने का पानी भी मयस्सर नहीं हो पा रहा है। सरकार की बहुप्रचारित नल जल योजना केवल कागजों पर चल रही है। करोड़ों रुपये खर्च करने के बावजूद नलों में पानी नहीं आता। कई गांवों में पाइपलाइन बिछी तो है, लेकिन पानी नहीं। जलमीनारें हैं, पर टंकी सूखी है। यह भ्रष्टाचार, लापरवाही और प्रशासनिक असफलता का स्पष्ट उदाहरण है। मैं स्वयं जब भी किसी गांव में जाता हूँ हर जगह पानी की कमी सबसे बड़ी शिकायत के रूप में सामने आती है। महिलाएं मीलों दूर से पानी ढो रही हैं, बच्चे स्कूल छोड़कर पानी लाने जा रहे हैं। यह स्थिति मानवाधिकारों के भी खिलाफ है। इस विकराल संकट के बावजूद जमुआ विधायक और कोडरमा की संसद महोदया ने अब तक कोई गंभीर पहल नहीं की है। न कोई दौरा, न कोई समाधान। यह जनप्रतिनिधित्व की सबसे बड़ी विफलता है। मैं सरकार से मांग करता हूँ कि सभी जलस्रोतों की मरम्मत और सफाई कराई जाए। नल जल योजना की निष्पक्ष जांच हो और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाए। हर पंचायत में जल संकट से निपटने की स्थायी व्यवस्था बनाई जाए। वर्षा जल संचयन को अनिवार्य किया जाए।

जमुआ में बिजली संकट पर सख्त हुई जमुआ विधायक डॉ मंजू कुमारी मुख्य अभियंता से मिलकर दिया समाधान का निर्देश

- जमुआ विधायक ने मुख्य अभियंता को स्पष्ट निर्देश दिया कि गर्मी के इस मौसम में किसी भी हाल में जनता को दिक्कत न हो इसका पूर्ण रूप से ध्यान रखा जाए

गिरिडीह, प्रतिनिधि। बढ़ती गर्मी और तेज धूप के बीच जमुआ विधानसभा क्षेत्र में बिजली से जुड़ी समस्याएं लगातार लोगों की परेशानी बढ़ा रही हैं। क्षेत्र के कई गांवों में ट्रांसफार्मर जले हुए हैं, कई जगहों पर तार और पोल की हालत जर्जर है, और बिजली कटौती ने आमजन का जीना मुश्किल कर दिया है। जनता की इन समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए जमुआ की विधायक डॉ मंजू कुमारी ने जिला बिजली विभाग के मुख्य अभियंता से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने

पूरे विधानसभा क्षेत्र में बिजली आपूर्ति से जुड़ी चुनौतियों को विस्तार से रखते हुए शीघ्र समाधान की मांग की। जमुआ विधायक ने मुख्य अभियंता को स्पष्ट निर्देश दिया कि गर्मी के इस मौसम में किसी भी हाल में जनता को अंधेरे में न रखा जाए और ट्रांसफार्मर, तार, पोल जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की मरम्मत और बदलाव कार्य को प्राथमिकता पर पूरा किया जाए। इतना ही नहीं, बैठक के दौरान जमुआ विधानसभा क्षेत्र में एक नए पावर हाउस के निर्माण को लेकर भी विस्तृत चर्चा हुई। जमुआ विधायक डॉ मंजू कुमारी ने कहा कि आने वाले समय में क्षेत्र में स्थायी और निर्बाध बिजली आपूर्ति तभी संभव होगी, जब यहां खुद का पावर हाउस होगा। उन्होंने अधिकारियों को इस दिशा में जल्द से जल्द ठोस कदम उठाने की बात कही।

नगर के समस्याओं के समाधान के लिए समाजिक कार्यकर्ता अरविंद ने कार्यापालक अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

पेयजल संकट सहित कई महत्वपूर्ण समस्याओं की ओर कार्यापालक अधिकारी का ध्यान आकृष्ट कराया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता
छतरपुर, पलामू। नगर पंचायत छतरपुर में कई समस्याएं विद्यमान हैं। जिनके समाधान हेतु सामाजिक कार्यकर्ता सह छतरपुर विकास मंच के अध्यक्ष और झारखंड अगेंस्ट करप्शन के केंद्रीय महामंत्री अरविन्द गुप्ता चुनमून ने नगर पंचायत के कार्यपालक अधिकारी को समस्याओं के समाधान हेतु ज्ञापन सौंपा। जिसमें कहा गया है कि नगर पंचायत में योजनाओं के चयन, सन्चालन और क्रियान्वयन हेतु योजना समिति का गठन किया जाए। साथ ही सिविल सोसाइटी की भी मदद ली जाय। नगर में जलसंकट से ग्रसित क्षेत्रों में टैंकर द्वारा पानी सप्लाई सुनिश्चित करवाया जाए। नगर के जपला मोड़, सरैडीह मोड़, रामगढ़, मदनपुर, भेरवाडीह मोड़, बाज़ार परिसर, मंदेया सूर्य मंदिर

के पास लगाए गए हाईमास्ट लाइटों की मरम्मत करवाई जाए। नगर पंचायत के पैसों से दूसरे गैर जरुरी स्थलों पर योजनाओं के चयन में मनमानी बन्द की जाये। सूर्य मंदिर के पास बनाये जाने वाले पार्क का टेंडर हुए एक साल हो गए हैं, लेकिन संवेदक ने काम नहीं लगाया है, इसलिए उसे ब्लैक लिस्टेड किया जाए। नगर में जिम के निर्माण हेतु हुए टेंडर के आलोक में अविलम्ब उसका अधिष्ठापन करवाया जाए। शहर में टूट चुके पैदल पथ के लोहे के बेरिकेड्स की मरम्मत करवाई जाए। तेनुडीह वार्ड 16 और अनुमंडलीय अस्पताल वार्ड 1 पासवान टोला में खराब पड़े सोलर जलमीनार की मरम्मत कर उसे चालू करवाया जाए। पीएम आवास के योग्य लाभुकों के घरों का नगर पंचायत द्वारा खुद सर्वे करवा कर उनका आवास चयन किया जाए जैसी महत्वपूर्ण मांगें शामिल थी। ज्ञापन सौंपने के बाद अरविन्द ने कहा कि जल संकट से निबटने को लेकर नगर पंचायत की तैयारी तो सन्तोषजनक है लेकिन अन्य समस्याओं का समाधान आवश्यक है। ऐसे में नगर पंचायत को उनके समाधान की दिशा में ठोस और त्वरित कार्रवाई करनी चाहिए। साथ ही नगर पंचायत को उन्होंने हिदायत भी दिया कि नगर पंचायत कार्यालय को बिचौलिया और दलालों से मुक्त करवाएं कार्यापालक अधिकारी।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर बरगंडा का बोर्ड परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत

गिरिडीह, प्रतिनिधि। सीबीएसई नई दिल्ली द्वारा आयोजित कक्षा 10वीं और 12वीं के परीक्षा परिणाम मंगलवार को जारी किए गए, जिसमें सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, बरगंडा ने शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त की। कक्षा 12वीं विज्ञान वर्ग में पीहू कुमारी भदानी ने 87.6प्रतिशत और वाणिज्य वर्ग में प्रियांशु कुमार ने 85.8प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय टॉपर बने। कक्षा 10वीं में मानस वर्मा ने 97.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया। प्रधानाचार्य आनंद कमल ने छात्रों की सफलता पर प्रसन्नता जताते हुए इसे उनकी मेहनत और शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम बताया। विद्यालय परिवार ने सभी सफल विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं।

नहीं थम रहा हइवा का तेज रफ़्तार का कहर

- जिला प्रशासन के सख्ती के बाद भी हाइवा चालक बेलगाम
- तेज रफ्तार हइवा ने बाइक सवार को मारी टक्कर, युवक गंभीर रुप से घायल, रेफर

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास
हंटरगंज (चतरा)। एक बार फिर हाइवा का रफ्तार सातवें आसमान में दिखने को मिला। चतरा जिला प्रशासन के सख्ती के बाद भी नहीं थम रहा है तेज रफ्तार का कहर ताजा मामला हंटरगंज थाना क्षेत्र के जावादोहार गांव के पास मंगलवार को एक तेज रफ्तार हइवा ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। इसमें बाइक सवार युवक गंभीर रुप से घायल हो गया। जबकि हाइवा चालक हाइवा लेकर भागने में सफल रहा। गंभीर रूप से घायल युवक को ग्रामीणों ने हंटरगंज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती करवाया जहा चिकित्सको ने प्राथमिक उपचार के बाद स्थिति खराब देखते हुए गया मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर कर दिया है। घायल युवक पहचान थाना क्षेत्र के सरहचिया गांव निवासी दुल्हन भारती के 25 वर्षीय पुत्र महेन्द्र भारती के रुप में हुई है। ग्रामीणों के अनुसार युवक अपने रिश्तेदार बलनिया गांव से अपने बाइक पर सवार होकर घर वापस सरहचिया लौट रहा था इसी दौरान तेज रफ्तार हाइवा ने अपने अपने चपेट मे लिया था।चिकित्सकों के अनुसार युवक की स्थिति चिंताजनक है।इधर घटना के बाद पुलिस हइवा की पहचान में जुट गई है हाइवा की तलाश जारी है।

ऑक्सब्रिज स्कूल मंडर के बच्चों का शानदार प्रदर्शन, नाभ्या सिन्हा स्कूल टॉपर

मांडर। सी वी एस ई दसवीं बोर्ड परीक्षा में ऑक्सब्रिज स्कूल मांडर के बच्चों ने शानदार प्रदर्शन किया है। मंगलवार को जारी दसवीं की परीक्षा परिणाम में ऑक्सब्रिज स्कूल मांडर का रिजल्ट शत-प्रतिशत रहा। स्कूल की प्राचार्य मिस ईवोन ई. एक्का के अनुसार 96 प्रतिशत अंक लाकर नाभ्या सिन्हा स्कूल टॉपर हुई। 94 प्रतिशत अंक लाकर मोहित भगत दूसरा व 93.4 प्रतिशत अंक लाकर आरती कुमारी तीसरा स्थान प्राप्त की। इसके अलावे परीक्षा में अदनान सना ने 93.2 प्रतिशत, सपना कुमारी 92.8 प्रतिशत , रौनक कुमार यादव 92.6 प्रतिशत, हिमांशु साहू एवं जैद अकरम अंसारी 92 प्रतिशत, रोली कुमारी 91.6 प्रतिशत, शशि उरांव 90.8 प्रतिशत , सक्षम राज 90.4 प्रतिशत एवं अयाज अली 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किया।

इधर नाभ्या सिन्हा ने हिंदी, इंग्लिश , विज्ञान में 96 अंक एवं कम्प्यूटर में 99 अंक हिमांशु साहू ने गणित में 95 अंक एवं मोहित भगत ने समाज अध्ययन में 95 अंक प्राप्त कर स्कूल का नाम रोशन किया। स्कूल के निदेशक तौफीक आलम, प्राचार्या ईवोन ई. एक्का एवं शिक्षकों ने बच्चों के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

विवेकानंद कॉन्वेंट स्कूल के मुस्कान शर्मा ने सीबीएसई दसवीं बोर्ड में 94 प्रतिशत व निकिता कुमारी ने बारहवीं बोर्ड में ने 91 प्रतिशत अंक लाकर विद्यालय टॉपर बनी

आदिवासी एक्सप्रेस
कोडरमा। चेचाई, चाराडीह स्थित विवेकानंद कॉन्वेंट स्कूल के बच्चों ने सीबीएसई दसवीं एवं बारहवीं बोर्ड परीक्षा में सफलता का परचम लहराया। कक्षा बारहवीं बोर्ड परीक्षा में कुल 32 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया था। जिसमें तीन विद्यार्थियों का एक एक विषय में कंपार्ट लगा है, बाकी सभी अच्छे अंकों व प्रथम श्रेणी से परीक्षा पास किया। निकिता कुमारी ने सर्वाधिक 91 प्रतिशत अंक लाकर स्कूल टॉपर बनी। वही कोमल गुप्ता 88 प्रतिशत अंक

लाकर द्वितीय स्थान प्राप्त की। और दीपप्रीत कौर ने 86 प्रतिशत अंक लाकर तृतीय स्थान पर रही। बाकी अन्य सभी छात्र-छात्राओं ने प्रथम श्रेणी से पास किया।

इधर दशवी बोर्ड परीक्षा में कुल 41 छात्र-छात्राएं परीक्षा में शामिल हुआ था। जिसमें सभी बच्चों ने परीक्षा पास किया। इस प्रकार दशवी का रिजल्ट शत प्रतिशत रहा। दसवीं में मुस्कान शर्मा सर्वाधिक 94 प्रतिशत अंक लाकर विद्यालय टॉपर बनी। वही अकाक्षी आस्था ने 87 प्रतिशत लाकर विद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त की। व चांदनी कुमारी ने 84 प्रतिशत अंक लाकर तृतीय स्थान पर रही। बाकी के सभी छात्र छात्राएं लगभग प्रथम श्रेणी से परीक्षा पास किया।

विद्यालय प्रबंधक अनिल कुमार ने कहा कि यदि बच्चे अपने अंदर पढ़कर कुछ बेहतर करने की ठान ले तो वे कोई भी परीक्षा में बैठे, सफल जरूर होता है। वैसे दशवी परीक्षा के बाद ही असल इम्तिहान शुरू होता है। बच्चों को अपने परिजनों व शिक्षकों के निर्देश का पालन करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। इससे उसके सकारात्मक ऊर्जा के साथ सफल होने के उम्मीद ज्यादा होता है। अंत में उन्होंने सभी सफल छात्र छात्राओं को बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित किए। इधर विद्यालय प्राचार्या राधेश्याम पंडित ने बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बच्चों के बेहतर शिक्षा व रिजल्ट के लिए शिक्षक अपने आप को कक्षा में समर्पित कर देते है। यदि बच्चे भी समर्पण भाव से मेहनत करे तो वे अवश्य सफल होंगे। इस सफलता पर पूरे विद्यालय परिवार ने हर्ष व्यक्त करते हुए बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना किए।

संक्षिप्त समाचार

डेमोक्रेटिक प्रेस क्लब की कार्यकारिणी मीटिंग दिल्ली मे हुई

नई दिल्ली। दिनांक 8 मई 2025 को डेमोक्रेटिक प्रेस क्लब DPC की वार्षिक मीटिंग प्रेस क्लब ऑफ़ इंडिया मे हुई जिसमें कुछ मुद्दों पर चर्चा हुई और उन्हें तय सीमा में पूरा करने का टारगेट रखा गया।
डेमोक्रेटिक प्रेस क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर फरीद चुगताई जी कहां के आज की यह मीटिंग पूरे भारतवर्ष में अलग-अलग कार्यकारिणी समिति के गठन को लेकर बड़े पैमाने पर पत्रकार को डीपीसी के मेंबर बनाने की ओर एक नई पहल है जिसमें अलग-अलग स्टेट में कमेटी नियुक्त की जाएगी और उन कमेटी को दायित्व होगा कि जो पत्रकारिता से संबंधित लोग हैं उनको डेमोक्रेटिक प्रेस क्लब से जोड़ा जाए।
डीपिसी के सचिव डॉ जावेद रहमानी ने कहा कि आज ऐसे समय में जहां बहुत सारी पत्रकारिता के नाम पर संस्थाएं काम कर रहे हैं लेकिन सिर्फ वह कागजों तक ही सीमित है डेमोक्रेटिक प्रेस क्लब भारत की एकमात्र सर्वश्रेष्ठ पत्रकारिकताओं के हित की बड़ी संस्था है जिससे छोटे-छोटे समस्याओं को भी सरकार के आंख में आंखें डाल करके उन तक बात रह रखी जाएगी।
पहली खबर के प्रधान संपादक श्री इमरान कलीम ने कहा कि युवाओं में मैं देख रहा हूं कि पत्रकारिता का एक तरह से रुझान बढ़ता जा रहा है युवाओं के अंदर पत्रकारिता को लेकर के काफी उत्सुकता है यह हम सब की जिम्मेदारी है के उसे उत्सुकता में गुणवत्ता का भी ध्यान रखा जाए।
सारा सच संपादक व डीपीसी राष्ट्रीय सचिव सलीम अहमद जी ने कहा की टेक्नोलॉजी का सही इस्तेमाल करके सोशल मीडिया के माध्यम से भी हम जल्द और मजबूती से अपनी बात सरकार और लोगो तक पंहुचा सकते है। कुछ और अन्य मुद्दों पर चर्चा हुई जैसाकि DPC मेंबर बनने के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क रखा गया जिसमें उनको DPC का आई कार्ड दिया जाएगा व मेंबरशिप सर्टिफिकेट भी दिया जाएगा तथा हर मेंबर को वार्षिक शुल्क भी देना होगा। DPC की पहचान बनाने और ज़्यादा से ज़्यादा लोगो तक पहुंचने तथा लोगो को जोड़कर रखने के लिए एक वार्षिक कार्यक्रम किया जाएगा।

सीएम के आगमन को लेकर वाहनों की नो एंट्री

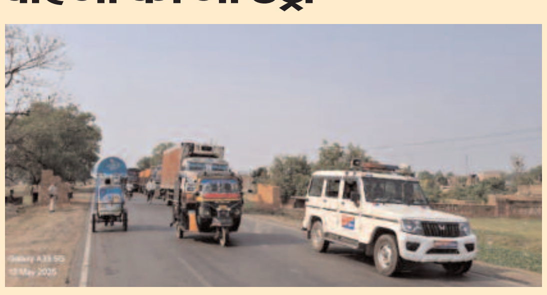

आदिवासी एक्सप्रेस /बौसी(बांका)
भागलपुर में सीएम आगमन को लेकर बौंसी प्रशासन ने डऊवा गांव के समीप लगाए नो एंट्री। जिसको लेकर ट्रक एवं बड़ी वाहन की लग गई लंबी कतार। सिर्फ छोटी एवं सवारी गाड़ियों को ही आवागमन किया जा रहा था। सीएम के आगमन को लेकर दिनभर वन वे ट्रेफिक रहा सिर्फ छोटी वहां को ही जाने का इजाजत दिया गया बड़े वाहन लंबी कतार में खड़े रहे कम के भागलपुर से प्रस्थान के बाद इन वाहनों को इजाजत मिली. प्रशासन ने सुरक्षा कारणों से यह व्यवस्था की थी।

पंजाब की सीमा सबसे संवेदनशील, जनता और सेना एकजुट : गुलाबचंद कटारिया

उदयपुर। पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने उदयपुर प्रवास के दौरान भारत-पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव पर चिंता जताई। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि पंजाब, जो पाकिस्तान से लगती लगभग 533 किलोमीटर लंबी सीमा से जुड़ा है, युद्ध या युद्ध जैसी किसी भी स्थिति में सबसे पहले और सबसे ज्यादा प्रभावित होता है। उन्होंने दावा किया कि जब भी युद्ध की हलचल होती है, सबसे पहले पंजाब की सीमा पर असर दिखता है।
राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि देश की सीमा पर स्थित पंजाब की जनता सीधे सीमा पार के लोगों से संवाद कर सकती है। पंजाब की लगभग 533 किलोमीटर लंबी सीमा युद्ध या तनाव के समय सबसे अधिक प्रभावित होती है। हाल के पहलगाम हमले के बाद जनता में आक्रोश था और वे इसका हिसाब चाहते थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सेना द्वारा किए गए ऑपरेशन की पंजाब की जनता ने भी सराहना की। हमारी सेना की सजगता और तैयारी के कारण सीमा पर आए अधिकांश ड्रोन नष्ट किए गए। मिसाइलें भी निष्क्रिय की गईं। सेना, विशेषकर वायुसेना ने इस बार जिस तरह का प्रदर्शन किया, उसने देशवासियों का मनोबल बढ़ाया और यह साबित किया कि हम हर तरफ से सुरक्षित हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब की जनता का सेना, बीएसएफ और पुलिस को भरपूर सहयोग मिलता है। लोग खाना, नाश्ता आदि पहुंचाकर सेना का समर्थन करते हैं। सीमा पर न तो लोगों को गांव खाली करना पड़ा, न ही स्थानांतरित करना पड़ा। कई रिटायर्ड सैनिक भी यहां बसे हैं, जो पंजाब को और मजबूत बनाते हैं। पंजाब में जाति या धर्म के आधार पर कोई विद्वेष नहीं है, सभी लोगों ने सेना का साथ दिया। उन्होंने आगे कहा कि सेना और स्थानीय प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। वे डीसी, एसपी, सेना और बीएसएफ के साथ लगातार संपर्क में रहते हैं और दैनिक रिपोर्ट प्राप्त करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट किया है कि अगर आतंकवादी घटनाएं जारी रही, तो सेना को दोबारा कार्रवाई की पूरी छूट है। पाकिस्तान को मानसिक और सामरिक रूप से कमजोर किया गया है। उनके हथियार नाकाम रहे, जबकि भारत के स्वदेशी हथियारों ने अपनी ताकत दिखाई। इस घटना ने विश्व में भारत की सेना का सम्मान बढ़ाया और भारत की ताकत को वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया गया।

मुख्यमंत्री ने भागलपुर में 208 करोड़ रुपये से अधिक की 48 विकासात्मक योजनाओं का किया उद्घाटन एवं शिलान्यास

आदिवासी एक्सप्रेस/ रूपेश कुमार राज/भागलपुर

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भागलपुर स्थित सैण्डिस कंपाउंड में 13 मई को 20862.25 लाख रुपये की लागत से 48 विकासात्मक योजनाओं का रिमोट के माध्यम से शिलापट्ट का अनावरण कर उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। इनमें 4502.79 लाख रुपये की लागत से 32 योजनाओं का उद्घाटन तथा 16359.46 लाख रुपये की लागत से 16 योजनाओं का शिलान्यास शामिल है।

इसके पश्चात् मुख्यमंत्री भागलपुर जिला अंतर्गत जगदीशपुर प्रखंड के खिरीबांध पंचायत स्थित मुखैरिया ग्राम में डॉ0 अंबेडकर समग्र सेवा अभियान अन्तर्गत आयोजित विशेष विकास शिविर में शामिल हुए। विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉल का मुख्यमंत्री ने अवलोकन किया। अवलोकन के क्रम में विभिन्न योजनाओं के लाभुकों को मुख्यमंत्री ने सांकेतिक चेक, स्वीकृति पत्र एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने वासगीत पर्चा, राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना का सांकेतिक चेक, सतत् जीविकोपार्जन योजना का प्रशस्ति पत्र, कुशल युवा कार्यक्रम का प्रमाण पत्र, स्पॉन्सरशिप योजना का सांकेतिक चेक, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण की चाभी, मुख्यमंत्री अंतर्जातीय विवाह प्रोत्साहन अनुदान योजना का सांकेतिक चेक आदि लाभुकों को प्रदान किया।

शिविर में बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों का मुख्यमंत्री ने हाथ हिलाकर अभिनंदन किया और लोगों ने ताली बजाकर मुख्यमंत्री का स्वागत किया। महिलाओं ने मुख्यमंत्री को स्मृति चिन्ह भेंटकर उनका स्वागत किया।

इस अवसर उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी, जल संसाधन सह संसदीय कार्य मंत्री श्री विजय कुमार चौधरी, सांसद श्री अजय कुमार मंडल, सांसद श्री गिरिधारी यादव, विधायक श्री गोपाल मंडल, विधायक श्री ललन कुमार, विधायक श्री ललित नारायण मंडल, विधायक श्री पवन यादव, भागलपुर के जिला परिषद् अध्यक्ष श्री मिथुन कुमार यादव, भागलपुर नगर निगम की मेयर डॉ0 वसुंधरा लाल, पूर्व सांसद श्री बुलो मंडल, पूर्व सांसद श्रीमती कहकशां परवीन, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव श्री कुमार रवि, भागलपुर प्रमंडल के आयुक्त श्री दिनेश कुमार, भागलपुर पूर्वीय प्रक्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक श्री विवेक कुमार, भागलपुर के जिलाधिकारी डॉ0 नवल किशोर चौधरी, वरीय पुलिस अधीक्षक श्री हृदय कांत सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति एवं वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने भागलपुर में खेलो इंडिया यूथ गेम्स-2025 का लिया जायजा, प्रतिभागी खिलाड़ियों का किया उत्साहवर्द्धन

आदिवासी एक्सप्रेस/ रूपेश कुमार राज/भागलपुर

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भागलपुर स्थित सैण्डिस कंपाउंड के इंडोर स्टेडियम में खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 के खेल परिसर का मुआयना कर खिलाड़ियों से मुलाकात की। मुलाकात के क्रम में मुख्यमंत्री ने खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 में भाग ले रहे खिलाड़ियों से बातचीत की और उनका उत्साहवर्द्धन किया।

इस दौरान मुख्यमंत्री ने सैण्डिस कंपाउंड स्थित इंडोर स्टेडियम में दिल्ली और छत्तीसगढ़ के बीच आयोजित महिला सिंगल बैडमिंटन मैच का अवलोकन किया। मुख्यमंत्री ने स्टेडियम परिसर का भ्रमण कर विभिन्न राज्यों से आए हुए खिलाड़ियों एवं दर्शकों का हाथ हिलाकर अभिनंदन किया। खिलाड़ियों एवं दर्शकों ने ताली बजाकर मुख्यमंत्री का अभिवादन किया। कार्यक्रम में भागलपुर के जिलाधिकारी डॉ0 नवल किशोर चौधरी ने मुख्यमंत्री को पौधा एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर उनका स्वागत किया।

इस अवसर उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी, जल संसाधन सह संसदीय कार्य मंत्री श्री विजय कुमार चौधरी, सांसद श्री अजय कुमार मंडल, सांसद श्री गिरिधारी यादव, विधायक श्री गोपाल मंडल, विधायक श्री ललन कुमार, विधायक श्री ललित नारायण मंडल, विधायक श्री पवन यादव, भागलपुर के जिला परिषद् अध्यक्ष श्री मिथुन कुमार यादव, भागलपुर नगर निगम की मेयर डॉ0 वसुंधरा लाल, पूर्व सांसद श्री बुलो मंडल, पूर्व सांसद श्रीमती कहकशां परवीन, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार, सामान्य प्रशासन सह खेल विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ0 बी0 राजेन्दर, मुख्यमंत्री के सचिव श्री कुमार रवि, भागलपुर प्रमंडल के आयुक्त श्री दिनेश कुमार, भागलपुर प्रक्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक श्री विवेक कुमार, खेल विभाग के निदेशक श्री महेंद्र कुमार, भागलपुर के जिलाधिकारी डॉ0 नवल किशोर चौधरी, वरीय पुलिस अधीक्षक श्री हृदयकांत सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति एवं वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

भारत में सभी क्रिप्टो एक्सचेंजों के लिए प्रूफ ऑफ रिज़र्व्स अनिवार्य क्यों होना चाहिए

नई दिल्ली, (आरएनएस)।
हाल के वर्षों में, एफटीएक्स जैसे बड़े एक्सचेंजों के बंद होने के बाद, क्रिप्टो एक्सचेंजों की विश्वसनीयता पर गंभीर सवाल उठे हैं। इन घटनाओं ने यह साबित किया कि वर्चुअल एसेट्स (क्रिप्टो) के लिए पारदर्शिता बेहद जरूरी है। भारत जैसे देश में, जहां स्पष्ट नियमों की गैरमाजूदगी के बावजूद, लाखों लोग क्रिप्टो का इस्तेमाल कर रहे हैं, यह चुनौती और भी बढ़ जाती है। इसी कड़ी में प्रूफ ऑफ रिज़र्व्स एक ऐसा तरीका है, जिसे अब दुनिया भर में अपनाया जा रहा है। यह एक ऐसा सिस्टम है जो यह प्रमाणित करता है कि एक्सचेंजों के पास वास्तव में उतने एसेट्स हैं जितने वे दावा करते हैं, और उनके ग्राहकों की जमा राशियों से मेल खाते हैं। प्रूफ ऑफ रिज़र्व्स एक क्रिप्टोग्राफिक टूल है जो यह सत्यापित करता है कि किसी प्लेटफॉर्म के पास उपयोगकर्ताओं की जमा राशि के अनुरूप पर्याप्त एसेट्स हैं या नहीं। मर्कल ट्री जैसी तकनीकों के जरिए, कोई भी एक्सचेंज बिना किसी ग्राहक की पहचान उजागर किए, इस बात का प्रमाण प्रस्तुत कर सकता है कि उसके पास मौजूद रिज़र्व्स कुल ग्राहक होल्डिंग्स के बराबर या अधिक हैं। सही तरीके से लागू किए जाने पर, प्रूफ ऑफ रिज़र्व्स उपयोगकर्ताओं को यह जांचने की स्वतंत्र रूप से सुविधा देता है कि उनकी राशि सुरक्षित है और पूरी पारदर्शिता के साथ दर्ज है। प्रूफ ऑफ रिज़र्व्स न केवल निवेशकों को आश्वस्त करता है, बल्कि यह एक्सचेंज की वित्तीय स्थिति में भी पारदर्शिता बढ़ाता है। इससे बाजार में उतार-चढ़ाव के समय उपयोगकर्ताओं द्वारा घबराहट में निकासी की संभावना कम होती है। चूंकि क्क्षत्र रिपोर्ट सार्वजनिक रूप से उपलब्ध होती हैं, अगर कोई गड़बड़ी होती है तो यह आसानी से सामने आ जाती है, जिससे धोखाधड़ी और गलत प्रबंधन की संभावना घट जाती है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में, प्रूफ ऑफ रिज़र्व्स को लागू करने की ज़रूरत और अधिक मजबूत हो जाती है क्योंकि देश में नियमन की स्थिति अभी भी विकासशील और अनिश्चित है। हालाँकि सरकार ने वर्चुअल एसेट सर्विस प्रोवाइडर्स को मनी लॉन्ड्रिंग रोधी दायरे में लाने के प्रयास किए हैं, लेकिन अभी तक किसी प्लेटफॉर्म के लिए पारदर्शी कस्टडी प्रथाएं अपनाना कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं किया गया है। ऐसे में, जब तक एक व्यापक नियामक ढांचा तैयार नहीं हो जाता, सभी क्रिप्टो प्लेटफॉर्मों के लिए प्रूफ ऑफ रिज़र्व्स रिपोर्ट सार्वजनिक करना अनिवार्य किया जाना अत्यंत आवश्यक है। प्रूफ ऑफ रिज़र्व्स को अनिवार्य बनाकर, प्लेटफॉर्म्स को यह साबित करने के लिए बाध्य किया जा सकता है कि वे ग्राहकों के फंड को सुरक्षित रख रहे हैं। इससे न केवल निवेशकों का विश्वास बढ़ेगा, बल्कि यह क्रिप्टो क्षेत्र में पारदर्शिता और जिम्मेदारी को भी बढ़ावा देगा। यह कदम भारतीय सरकार को एक मजबूत, पारदर्शी और जिम्मेदार क्रिप्टो सेक्टर की दिशा में पहला बड़ा कदम बनाने का मौका देगा।
भारत में क्रिप्टो के भविष्य के लिए यह एक अहम मोड़ है। हालांकि, क्रिप्टो क्षेत्र में एक मजबूत कानूनी ढांचा अभी नहीं है, फिर भी प्रूफ ऑफ रिज़र्व्स जैसे कदम से प्लेटफॉर्म की नैतिक जिम्मेदारी बढ़ाई जा सकती है। अगर सरकार प्रूफ ऑफ रिज़र्व्स रिपोर्ट को अनिवार्य करती है, तो बिना नवाचार को रोके भारतीय निवेशकों के लिए एक सुरक्षित और भरोसेमंद वातावरण तैयार किया जा सकता है।

पंचायत चुनाव 2025 में भारी जीत के बाद असम भाजपा की 2026 में 104 विधानसभा सीटों पर नजर

पंकज नाथ, आदिवासी एक्सप्रेस, असम

हाल ही में समाप्त हुए असम के पंचायत चुनावों में भाजपा गठबंधन के प्रदर्शन को ऐतिहासिक बताते हुए राज्य के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सत्तारूढ़ एनडीए गठबंधन के लिए 2026 के राज्य विधानसभा चुनावों में 104 सीटों की संभावित जीत का अनुमान लगाया। मतगणना के समय पत्रकारों से बात करते हुए, सरमा ने ग्रामीण चुनावों में पार्टी के मजबूत प्रदर्शन पर जोर देते हुए कहा, भाजपा जिला परिषद में 300 से अधिक सीटों पर कब्जा कर रही है, और यह ऐतिहासिक है। सीएम सरमा ने स्पष्ट किया कि पंचायत चुनाव ग्रामीण भावनाओं को दर्शाते हैं,

जबकि विधानसभा चुनाव ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों को शामिल करते हैं, जहां भाजपा पारंपरिक रूप से मजबूत स्थिति में है। उन्होंने यह कहते हुए अपने अनुमान को स्पष्ट किया, वर्तमान में, असम में भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन की क्षमता विधानसभा क्षेत्र के 104 सीटों में हैं। हालांकि, संभावना और वास्तविकता के बीच अंतर है। हमें उम्मीद है कि हम 95 सीटें जीतेंगे। लेकिन सब कुछ जनता के मूड पर निर्भर करता है। असम राज्य चुनाव आयोग द्वारा जारी किए गए डेटा से पता चलता है कि भाजपा ने पहले ही 242 आंचलिक पंचायत सीटें हासिल कर ली हैं, जबकि उसके सहयोगी असम गण परिषद ने 30 सीटें जीती हैं। विपक्षी कांग्रेस 34 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर है, उसके बाद 14 सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवार हैं, जबकि रायजोर दल और AIUDF के खाते में एक-एक सीट गई है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि इसबार के पंचायत चुनाव में भारी जीत के बाद भाजपा की नज़र आगामी 2026 के विधानसभा चुनाव में 104 सीटों पर है।

विभाग की लापरवाही से हुई दर्दनाक घटना के दूसरे दिन भी लावारिश अवस्था में पड़ा रहा तार

बांका कटोरिया से श्रीकान्त यादव की रिपोर्ट

बांका कटोरिया क्षेत्र के कोल्हासार पंचायत अन्तर्गत कल्हाडिंडा गांव के रोड में बिते हुए कल बरातियों से भरे बस में ग्यारह हजार करंट दौड़ गई थी। जिनसे तीन बरातियों की मौंत होने के साथ अठारह बराती पुरी तरह झुलस गये थे। जिनका ईलाज देवघर व भागलपुर में परिजनों के सहयोग से किया जा रहा है। परन्तु इस घटना के दुसरे दिन भी बिजली विभाग की लापरवाही

देखी गई। जहां हाईभोलटेज तार रोड पर ही लावारिश अवस्था में बिखरे हुए दिखाई दियें। जिनको खबर लिखे जानें तक दुरूस्त नही किया गया था। ग्रामींण परशुराम यादव नें बताया देर शाम को दो बिजली विभाग के आदमीं आये हुए थे। जो बिजली ट्रान्सफरमर को दुसरे जगह ले जाकर लगनें की बात कर रहे थे। वहीं घटना के बाद से बिजली तार छतिग्रस्त होनें एवं विभाग द्वारा सुध नही लेनें पर गांव में अंधेरा छाया हुआ है।

मंदार स्पोर्ट्स क्लब ने आगामी टी- 20 टैलेंट स्काउटिंग सीरीज़ 2025 के लिए टीम जर्सी का किया समारोह पूर्वक अनावरण

- **टीम के ऑफिशियल और कप्तान की हुई घोषणा, क्षेत्र के युवा क्रिकेट टैलेंट को ऊंचाई प्रदान करना क्लब का मूल उद्देश्य**

आदिवासी एक्सप्रेस/ बौसी (बांका)

बौंसी। मंदार स्पोर्ट्स क्लब ने ज्ञ20 टैलेंट स्काउटिंग सीरीज़ 2025 (व्हाइट लेदर बॉल टूर्नामेंट) के लिए अपनी तीन टीमों - एम एस सी/ईस्ट ,एम एस सी वेस्ट और एम एस सी सेन्ट्रल क्रिकेट टीम की जर्सी का अनावरण समारोह पूर्वक किया। यह समारोह आर्ट एंड क्राफ्ट विलेज़ मंदार विला एंड रिसॉर्ट, बौंसी में आयोजित किया गया। जहां समस्त प्रबंधकीय टीम और ऑफिशियल की मौजूदगी में यह घोषणा की गई साथ ही यह जानकारी दी गई कि आगामी 18 मई से 25 मई तक यह टूर्नामेंट

का आयोजन शहर के प्रसिद्ध और पौराणिक सीएनडी खेल मैदान पर आयोजित किया जाएगा। इच्छुक क्रिकेट खिलाड़ियों ने ऑनलाइन ऑफिशल वेबसाइट पर इस टूर्नामेंट में हिस्सा लेने के लिए अपना पंजीकरण कराया है। इंटरनेशनल क्रिकेट नियमों के तहत है यह टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। जर्सी अनावरण के मौक़े पर मंदार स्पोर्ट्स क्लब के कई खिलाड़ी और समर्थक खेल प्रेमी उपस्थित रहे।
इस भव्य टी-शर्ट अनावरण कार्यक्रम में पुनीत कुमार सिंह, चीफ सेलेक्टर, बांका जिला क्रिकेट संघ,प्रमोद कुमार राय, सदस्य, बांका जिला क्रिकेट संघ,अमित सिंह पूर्व एम एम सी खिलाड़ी,राजाराम अग्रवाल,पूर्व सचिव,एम एम सी सहित मंदार स्पोर्ट्स क्लब कोर कमिटी के गणमान्य मुख्य सदस्यगण मौजूद थे।
इस मौके पर तीनों टीमों के कप्तानों की भी घोषणा की गई।
एम एस सी ईस्ट टीम के कप्तान गुलफराज अंसारी,एम एस सी वेस्ट के कप्तान रंजन सिंघानिया औरएम एस सी सेंट्रल के कप्तान केशव अग्रवाल को बनाया गया है।
इस मौक़े पर राजाराम अग्रवाल ने कहा कि यह पहल जमीनी स्तर और युवा प्रतिभाओं को वह मंच देगी जिसे मंदर स्पोर्ट्स क्लब ने तैयार किया है और यह निकट भविष्य में ऊंचाइयों तक पहुंचेगी।
श्री राय ने कहा, यह एक अनोखी पहल है जो बौंसी ब्लॉक के युवा खिलाड़ियों और क्रिकेट प्रेमियों में नई ऊर्जा का संचार करेगी। श्री सिंह ने कहा कि यह एक शानदार अवसर है। यदि खिलाड़ी अनुशासन और समय की पाबंदी के साथ खेलेंगे तो बांका जिला क्रिकेट संघ उनकी ओर ज़रूर ध्यान देगा और अच्छे प्रदर्शन पर आगे खेलने का मौका भी मिल सकता है।
मंदार स्पोर्ट्स क्लब कोर कमिटी के सदस्य ने कहा कि क्लब सभी खिलाड़ियों को आवश्यक खेल उपकरण किट और अन्य जरूरी सामग्री उपलब्ध कराएगा ताकि वे पूरे जोश और समर्पण के साथ अपने क्रिकेट खेल प्रतिभा के दम पर और आगे जा सकते है। मंदार स्पोर्ट्स क्लब समिति के सदस्यों ने आम लोगों से भी अपील की है कि वह इस स्काउटिंग टैलेंट क्रिकेट टूर्नामेंट की सफलता में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान करें और खेल प्रतिभा का उत्साह वर्धन करें जिससे उनके क्षेत्र के युवा अपने टैलेंट का प्रदर्शन कर क्षेत्र का नाम रोशन कर सके।

केसीसीआई ने ताइक्वांडो प्रशिक्षण के नए बैच की शुरुआत की

एजेंसी

नयी दिल्ली । भारत और कोरिया के बीच खेल और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए कोरियन कल्चरल सेंटर इंडिया (केसीसीआई) ने ताइक्वांडो प्रशिक्षण के नए बैच की शुरुआत की है। इस पहल में भारत के 45 स्कूलों के 3,195 छात्र शामिल हुए हैं। इसके तहत वर्ष 2021 से अब तक नौ हजार से अधिक छात्रों को ताइक्वांडो सिखाया जा चुका है। ताइक्वांडो कोरिया का पारंपरिक मार्शल आर्ट है यह शारीरिक और मानसिक मजबूती विकसित करने में मदद करता है। यह खेल 1988 के सियोल ओलंपिक में पहली बार प्रदर्शनी के रूप में शामिल हुआ और 2000 के सिडनी ओलंपिक में आधिकारिक ओलंपिक खेल बना। आज यह खेल दुनियाभर में लोकप्रिय है, और भारत में इसका तेजी से विस्तार हो रहा है। इस अवसर पर भारत ताइक्वांडो के अध्यक्ष नामदेव संपत शिरगांवकर ने कहा, हम भारत में ताइक्वांडो की स्थिति को और मजबूत करना चाहते हैं और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ाना हमारा मुख्य लक्ष्य है। विश्व ताइक्वांडो चैंपियनशिप 2025 और लॉस एंजेलेस ओलंपिक 2028 के लिए हमारी तैयारियां जारी हैं। केसीसीआई के निदेशक ह्वांग इल योंग ने कहा, हम भारत में ताइक्वांडो को एक लोकप्रिय और सुलभ खेल बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

कोहली का नाम भारतीय क्रिकेट इतिहास में दर्ज रहेगाः रेवंत

हैदराबाद। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने महान क्रिकेटर विराट कोहली की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनका नाम भारतीय क्रिकेट के इतिहास में दर्ज रहेगा।टेस्ट क्रिकेट से विराट के संन्यास पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री ने ट्विटर पर पोस्ट किया और खेल में पूर्व भारतीय कप्तान के असाधारण योगदान की सराहना की। उन्होंने कोहली को एक अत्यंत अनुशासित और प्रतिबद्ध खिलाड़ी बताया, जिन्होंने अनेक रिकॉर्ड बनाए तथा देश के लाखों युवा खिलाड़ियों को प्रेरित किया। श्री रेवंत रेड्डी ने भारतीय क्रिकेट की विरासत में एक उल्लेखनीय अध्याय जारी रखने के लिए कोहली की सराहना की और उन्होंने टेस्ट क्रिकेट से परे उनकी यात्रा के अगले चरण में बड़ी सफलता प्राप्त करने की शुभकामनाएं दीं।

बीसीबी ने शॉन टैट को तेज गेंदबाजी कोच किया नियुक्त

ढाका। बंगलादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज शॉन टैट को अपनी टीम का गेंदबाजी कोच नियुक्त किया है।शॉन टैट का अनुबंध नवंबर 2027 तक होगा। वह आंद्रे एडम्स का स्थान लेंगे। टैट इस महीने के आखिरी में टीम के साथ शामिल होंगे। टैट ने एक दशक तक चले अपने करियर में ऑस्ट्रेलिया के लिए सभी प्रारूपों में 59 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 95 विकेट लिए है। वह वर्ष 2007 में क्रिकेट विश्वकप जीतने वाले ऑस्ट्रेलियाई टीम का हिस्सा थे। एडम गिलक्रिस्ट के शानदार शतक ने ऑस्ट्रेलिया को 2007 विश्व कप फाइनल में श्रीलंका पर जीत दिलाने में मदद की। अपनी नियुक्ति पर टैट ने मुख्य कोच फिल सिमंस के नेतृत्व में राष्ट्रीय टीम के साथ काम करने को लेकर खुशी जाहिर की है। उन्होंने कहा कि अभी बंगलादेश क्रिकेट टीम के साथ जुड़ना अच्छा समय है। यह एक नए युग की तरह है। बंगलादेश की हाल ही में जिम्बाब्वे के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला बराबर रही थी और उसे अभी संयुक्त अरब अमीरात के खिलाफ भी खेलना है।

अनाहत, वीर, रमित की हार से विश्व स्क्वैश चैंपियनशिप में भारतीय अभियान समाप्त

शिकागो। विश्व स्क्वैश चैंपियनशिप में अनाहत सिंह, वीर चोटरानी और रमित टंडन की हार के साथ ही भारत का टूर्नामेंट में अभियान समाप्त हो गया। लेकशोर स्पोर्ट एंड फिटनेस सेंटर में रविवार को खेले गये दूसरे दौर में 28 मिनट तक चले मुकाबले में भारत की शीर्ष रैंक वाली महिला खिलाड़ी अनाहत को मिस्र की फैरूज अबोएलखिर के हाथों 3-1 (11-7, 8-11, 11-4, 11-3) से हार का सामना करना पड़ा। 17 वर्षीय भारतीय स्क्वैश खिलाड़ी अनाहत ने पहले दौर के पांच सेट में अमेरिका की मरीना स्टेफनोनी को हराकर इस स्पर्धा के एकल में जगह बनाई थी। वीर चोटरानी ने भी 32 मिनट तक चले मुकाबले में चार बार के विश्व चैंपियन मिस्र के अली फराग के खिलाफ 3-1 (7-11, 11-7, 11-3, 12-10) से हार गए। चोटरानी ने पहले दौर में इंग्लैंड के डेक्लान जेम्स को 3-1 से हराया था।

इटालियन ओपन 2025: जैनिक सिनर की डोपिंग बैन से शानदार वापसी, प्री-क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

एजेंसी

रोम। दुनिया के नंबर 1 टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर ने इटालियन ओपन 2025 में डोपिंग बैन से वापसी के बाद लगातार दूसरा मुकाबला जीत लिया है। खेले गए मुकाबले में उन्होंने डच क्वालिफायर जेस्पर डी योंग को 6-4, 6-2 से हराकर अंतिम 16 में जगह बना ली। यह उनका होम क्राउड के सामने पहला टूर्नामेंट है, और फैन्स का जोश चरम पर नजर आया।

पहले सेट में दिखी चूक, फिर की जोरदार वापसी

मैच की शुरुआत में सिनर ने 4-1 की बढ़त बना ली थी, लेकिन कुछ गलत ड्रॉप शॉट्स, एक डबल फॉल्ट और अन्य त्रुटियों की वजह से डी योंग ने स्कोर 4-4 से बराबर कर दिया। हालांकि इसके बाद सिनर ने अपने दमदार ग्राउंडस्ट्रोक्स और तेज सर्व के दम पर मैच पर पूरी तरह से नियंत्रण बना लिया। इस जीत के साथ सिनर की जीत की लय अब 23 मुकाबलों तक पहुंच गई है, जो अक्टूबर 2024 से जारी है। यह

इटालियन ओपन उनके लिए ऑस्ट्रेलियन ओपन 2025 में ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने के बाद पहला टूर्नामेंट है। फरवरी में वर्ल्ड एंटी-डोपिंग एजेंसी (वाडा) के साथ समझौते के तहत सिनर को तीन महीने का बैन झेलना पड़ा। यह फैसला विवादों में रहा क्योंकि इसकी टाइमिंग कुछ ऐसी रही कि वे कोई ग्रैंड स्लैम मिस नहीं कर पाए और सीधे अपने होम टूर्नामेंट से वापसी कर पाए।पहले राउंड में मारियानो नवोन पर जीत की तरह ही इस मैच में भी रोम के फोरो इटालिको स्टेडियम में मौजूद फैन्स ने वाय जैनिक÷ के नारे लगाकर उन्हें पूरा समर्थन दिया। अगले राउंड में अब उनका सामना अर्जेंटीना के 17वें वरीय फ्रांसिस्को सेरुंडोलो से होगा, जो मैड्रिड ओपन के सेमीफाइनल तक पहुंचे थे। दूसरे सेट के दौरान डी योंग एक पासिंग शॉट के प्रयास में गिर पड़े और उनकी कलाई चोटिल हो गई। सिनर तुरंत नेट के पार जाकर उनका हालचाल जानने पहुंचे, उन्होंने उनके रैकेट का हैंडल पोंछा और मेडिकल टीम को बुलाया। डी योंग ने इसके बाद मेडिकल ट्रीटमेंट के बाद मैच खेला। पुरुषों में सातवें वरीय एलेक्स डी मिनौर ने ह्यूगो डेलियन को हराया, हालांकि मैच के दौरान एक दर्शक की तबीयत बिगड़ने और एयरफोर्स फ्लाईओवर के चलते दो बार मैच रुका।

ऑस्ट्रेलिया ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए टीम की घोषणा की

एजेंसी

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया ने मंगलवार को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 11 जून से शुरु होने वाली आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल के लिए पैट कमिंस की अगुवाई वाली 15 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। चयनकर्ताओं ने चोट से उबर रहे तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड और ऑलराउंडर कैमरन ग्रीन को टीम में शामिल किया है। टीम में मिशेल स्टार्क, स्कॉट बोलैंड तथा अनुभवी बल्लेबाज के रूप में उस्मान ख्वाजा, मार्नस लाबुशेन, स्टीव स्मिथ, ट्रैविस हेड और विकेटकीपर एलेक्स कैरी को जगह दी गई हैं। जोश इंगलिस को भी बैकअप विकेटकीपर के रूप में शामिल किया गया है साथ ही युवा बल्लेबाज सैम कोंस्टास को टीम में जगह मिली है। बाएं हाथ के स्पिनर मैट कुहनेमैन स्पिन विकल्प के रूप में नाथन लियोन के साथ शामिल हैं। ऑस्ट्रेलियाई चयन समिति के अध्यक्ष जॉर्ज बेली ने कहा, यह एक संतुलित और अनुभवी टीम है और हम भाग्यशाली हैं कि पैट, जोश और कैम फिट होकर वापसी कर रहे हैं।

टीम डब्ल्युटीसी खिताब के बचाव और लॉर्ड्स में दक्षिण अफ्रीकी टीम का सामना करने के लिए उत्साहित है। डब्ल्यूटीसी फाइनल के ऑस्ट्रेलियाई टीम इस प्रकार हैः- पैट कमिंस (कप्तान), स्कॉट बोलैंड, एलेक्स कैरी, कैमरून ग्रीन, जॉश हेजलवुड, ट्रैविस हेड, जॉश इंगलिस, उस्मान ख्वाजा, सैम कोंस्टास, मैट कुहनेमैन, मार्नस लाबुशेन, नाथन लियोन, स्टीव स्मिथ (उप-कप्तान), मिशेल स्टार्क और ब्यू वेबस्टर।

झांसी के लाल का मुम्बई में कमाल, नेशनल सेलिंग प्रतियोगिता में जीता कांस्य

एजेंसी

झांसी। कहते हैं प्रतिभा किसी परिचय का मोहताज नहीं होती। उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गांव मडोरा खुर्द (तहसील मोंठ, झांसी) के रहने वाले 16 वर्षीय रामकांत ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। उन्होंने हाल ही में मुम्बई में आयोजित नेशनल सेलिंग प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया है, जिससे उनके गांव और पूरे जिले का नाम रोशन हुआ है।

रामकांत ने 3 से 10 मई तक मुम्बई के एचबीटीसी मार्वे में आयोजित यूथ नेशनल सेलिंग प्रतियोगिता में भाग लिया था। इस प्रतियोगिता में पूरे देश से कुल 31 युवा प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया था। आठ रोमांचक रेस के दौरान रामकांत ने आईएलसीए 4 बोट क्लास में बेहतरीन कौशल का प्रदर्शन करते हुए तीसरा स्थान हासिल कर यह गौरवपूर्ण उपलब्धि अपने नाम की। वर्तमान में रामकांत गोवा नेवी बॉयज़ स्पोर्ट्स कंपनी में नियमित रूप से सेलिंग का अभ्यास कर रहे हैं और इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में उन्होंने उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया। महज 16 साल की उम्र में राष्ट्रीय स्तर पर

पदक जीतना उनकी कड़ी मेहनत, अटूट लगन और प्रतिभा का जीता-जागता उदाहरण है। रामकांत की इस शानदार सफलता से उनके परिवार में खुशी का माहौल है, वहीं उनके गांव मडोरा खुर्द और पूरे झांसी जिले में गर्व की लहर दौड़ गई है। ग्राम प्रधान सहित सभी गांववासियों ने रामकांत को इस उपलब्धि पर बधाई दी है और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं व्यक्त की हैं।

नॉर्वे चेस में समान इनामी राशि से महिलाओं को खेल अपनाने की प्रेरणा मिलती हैः जू वेनजून

एजेंसी

स्टावेंगर (नॉर्वे)। नॉर्वे चेस वूमेन 2025 टूर्नामेंट के दूसरे संस्करण को लेकर मौजूदा चैंपियन जू वेनजून ने अपनी उत्सुकता और उम्मीदें साझा की हैं। यह टूर्नामेंट 26 मई से 6 जून के बीच स्टावेंगर सिटी के फिनान्सपार्कन (एसआर-बैंक) में आयोजित होगा।चीनी ग्रैंडमास्टर जू वेनजून ने कहा, मैं नॉर्वे चेस वूमेन 2025 में हिस्सा लेने को लेकर बहुत रोमांचित हूं। यह मेरा इस टूर्नामेंट में दूसरा अनुभव होगा। इस बार कई मजबूत शतरंज खिलाड़ी हिस्सा ले रही हैं। मुझे लगता है कि अब लोग अर्मागेडन और टाइम कंट्रोल फॉर्मेट से ज्यादा परिचित हैं, जिससे टूर्नामेंट और भी रोमांचक होगा।जू वेनजून, जिन्हें मौजूदा समय में शतरंज की निर्विवाद महारानी कहा जाता है, इस साल की शुरुआत में अपना लगातार पांचवां वर्ल्ड चैंपियनशिप खिताब जीत चुकी हैं। उन्होंने सात साल की उम्र में शतरंज खेलना शुरू किया, 2004 में प्रोफेशनल बनीं, 2014 में ग्रैंडमास्टर की उपाधि पाई और 2018 में पहली बार विश्व चैंपियन बनीं। तब से लेकर अब तक वह महिलाओं की क्लासिकल शतरंज में अजेय रही हैं। वह वर्तमान वूमेन्स वर्ल्ड ब्लिट्ज चैंपियन भी हैं और दो बार की वर्ल्ड रैपिड चैंपियन भी।

अपनी यात्रा को याद करते हुए 34 वर्षीय वेनजून ने कहा, हर मुकाबला मेरे लिए एक यादगार और अनोखा अनुभव होता है। मेरा मानना है कि हर खेल को एक-एक कर फोकस के साथ खेलना चाहिए, कड़ी मेहनत करनी चाहिए और टीमवर्क जरूरी है। जब मैं खेल रही होती हूं, तो सबसे अच्छा होता है सिर्फ शतरंज पर ध्यान देना और मैच का आनंद लेना।

पिछले साल जू वेनजून ने नॉर्वे चेस वूमेन के पहले संस्करण का खिताब जीतकर इतिहास रच दिया था। यह टूर्नामेंट महिलाओं के लिए समान इनामी राशि देने वाला पहला टूर्नामेंट बना, जिससे शतरंज के भविष्य की दिशा में एक अहम कदम माना गया। वेनजून ने टूर्नामेंट आयोजकों की सराहना करते हुए कहा, मुझे लगता है कि यह एक बड़ी सफलता है और बेहद प्रेरणादायक भी सिर्फ शतरंज में ही नहीं, बल्कि पूरे खेल जगत में महिलाओं के लिए। यह महिलाओं को शतरंज अपनाने के लिए प्रेरित करता है और हमारे लिए एक शानदार मंच प्रदान करता है। शतरंज के अलावा वेनजून को टेबल टेनिस खेलना और देखना पसंद है। वह अपने देश के टेबल टेनिस वर्ल्ड और ओलंपिक चैंपियन फैन झेंडोंग से प्रेरणा लेती हैं। नॉर्वे में खेलने के साथ-साथ वह घूमने-फिरने का भी प्लान बना रही हैं और उन्होंने इस बार के मुकाबले के लेवल को लेकर भी चर्चा की। उन्होंने कहा, शायद खिताब बचाने का थोड़ा दबाव जरूर रहेगा, लेकिन कुल मिलाकर मैं स्टावेंगर में खेलने और इस अनुभव का आनंद लेने के लिए बहुत उत्साहित हूं।

कार्लो एंसेलोटी बने ब्राज़ील फुटबॉल टीम के नए कोच, मई के अंत में छोड़ेंगे रियल मैड्रिड

जेंसी

नई दिल्ली। इटली के दिग्गज फुटबॉल मैनेजर कार्लो एंसेलोटी अब ब्राज़ील पुरुष राष्ट्रीय फुटबॉल टीम की कमान संभालेंगे। ब्राज़ील फुटबॉल संघ (सीबीएफ) ने यह घोषणा की। एंसेलोटी इस सीजन के अंत में रियल मैड्रिड छोड़ देंगे और जून से ब्राज़ील के कोच के रूप में कार्यभार संभालेंगे।

ब्राज़ील फुटबॉल संघ ने की पुष्टि

सीबीएफ के अध्यक्ष एडनाल्डो रोड्रिग्स ने एक बयान में कहा, कार्लो एंसेलोटी को ब्राज़ील लाना सिर्फ एक रणनीतिक कदम नहीं है, बल्कि यह दुनिया को यह दिखाने का ऐलान है कि हम फिर से शीर्ष पर लौटने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा, वह इतिहास के सबसे महान कोच हैं और अब वह दुनिया की सबसे महान राष्ट्रीय टीम का नेतृत्व करेंगे। हम साथ मिलकर ब्राज़ीलियाई फुटबॉल का एक और स्वर्णिम अध्याय लिखेंगे।

रियल मैड्रिड में शानदार लेकिन बिना ट्रॉफी का आखिरी सीजन

एंसेलोटी रियल मैड्रिड के सबसे सफल

मैनेजर रहे हैं। उनके नेतृत्व में क्लब ने अब तक 15 खिताब जीते, लेकिन 2024-25 का सीजन वह बिना किसी ट्रॉफी के समाप्त करेंगे।

ब्राज़ील में होगी पहली जिम्मेदारी वर्ल्ड कप क्वालीफायर

एंसेलोटी ब्राज़ील के पहले विदेशी कोच बनेंगे। वह डोरिवाल जूनियर की जगह लेंगे, जिन्हें अर्जेंटीना से 4-1 की हार के बाद मार्च में बर्खास्त कर दिया गया था। एंसेलोटी की पहली चुनौती अगले महीने वर्ल्ड कप क्वालीफायर में इक्वाडोर और पराग्वे के खिलाफ मुकाबले होंगे। मुश्किल में ब्राज़ील, नेमार की फॉर्म चिंता का विषयब्राज़ील फिलहाल 14 मैचों के बाद वर्ल्ड कप क्वालीफाइंग में चौथे स्थान पर है। टीम के स्टार खिलाड़ी नेमार अभी तक 2023 में एसीएल चोट के बाद से फॉर्म में वापसी नहीं कर पाए हैं। हालांकि, दक्षिण अमेरिका से शीर्ष छह टीमें सीधे 2026 वर्ल्ड कप के लिए क्वालिफाई करेंगी। एंसेलोटी की नियुक्ति से ब्राज़ील को एक बार फिर विश्व फुटबॉल में अपना दबदबा स्थापित करने की उम्मीद है।

मध्यप्रदेश 24 पदकों के साथ पांचवें स्थान पर

एजेंसी

भोपाल। बिहार में 4 से 15 मई तक खेलो इण्डिया यूथ गेम्स 2025 का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश के खिलाड़ी खेल का शानदार प्रदर्शन कर रहें है। प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश 9 स्वर्ण, 5 रजत और 10 कांस्य सहित कुल 24 पदकों के साथ पांचवें स्थान पर है।आज मध्यप्रदेश टीम ने वेटलिफ्टिंग, योग, एथेलेटिक्स (पोल वॉल्ट), एथेलेटिक्स (3000 मी.) में बेहतर खेल प्रदर्शन कर 01-01 कांस्य सहित कुल 04 पदक अर्जित किये। प्रतियोगिता में आज म.प्र. के खिलाड़ियों द्वारा खेले गये मुकाबलों में अर्जित पदकों में वेटलिफ्टिंग में हिमांशु कुशवाह ने 73 किग्रा. पुरूष वर्ग में स्नैच में 115 कि.ग्रा और क्लीन एण्ड जर्क 140 कि.ग्रा. सहित कुल 255 कि.ग्रा. भार उठाकर कांस्य पदक प्राप्त किया। योगासन में रिया ने टेडिशनल योगासन इवेन्ट में 60.58 अंक प्राप्त कर कांस्य पदक अपने नाम किया। पोल वॉल्ट में आशीष कुमार यादव ने एथेलेटिक्स (पोल वॉल्ट) में 4.10 मी. छलांग लगाकर कांस्य पदक अर्जित किया।

एथेलेटिक्स (3000 मी.) में श्रृष्टि ने महिला वर्ग के 3000 मी. इवेन्ट में 10:29.50 का समय लेकर कांस्य पदक प्राप्त किया। कल एथेलेटिक्स, बॉक्सिंग, फेंसिंग, वेटलिफ्टिंग, कलरिपयट्टू, योगासन, कुश्ती, थांग-ता और हॉकी के मुकाबले खेले जायेंगे।

एफआईएच प्रो लीग 2024-25: यूरोपीय चरण के लिए 24 सदस्यीय भारतीय महिला हॉकी टीम घोषित

एजेंसी

नई दिल्ली। हॉकी इंडिया ने एफआईएच प्रो लीग 2024-25 के यूरोपीय चरण के लिए 24 सदस्यीय भारतीय महिला हॉकी टीम की घोषणा कर दी है। यह चरण 14 से 29 जून तक लंदन, एंटवर्प और बर्लिन में आयोजित होगा, जिसमें भारत चार प्रतिभागी टीमों– ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना, बेल्जियम और चीन के खिलाफ दो-दो मैच खेलेगा। भारत अपना अभियान 14 जून को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मुकाबले से शुरू करेगा। टीम की कमान मिडफील्ड की स्टार खिलाड़ी सलीमा टेटे को सौंपी गई है, जबकि फॉरवर्ड लाइन की अनुभवी खिलाड़ी नवनीत कौर को उपकप्तान बनाया गया है। भारतीय टीम ने प्रो लीग के घरेलू चरण में दो जीत और दो ड्रॉ के साथ कुल नौ अंक हासिल किए और अंकतालिका में छठे स्थान पर रही। इंग्लैंड के खिलाफ 3-2 की जीत और एक ड्रॉ से शानदार शुरुआत की, लेकिन इसके बाद स्पेन से दो और

जर्मनी से एक हार मिली। हालांकि, जर्मनी के खिलाफ 1-0 की वापसी जीत ने टीम का मनोबल बढ़ाया। विश्व की नंबर 1 टीम नीदरलैंड्स के खिलाफ अंतिम दो मैचों में भारत ने दमदार जज्बा दिखाया। पहले मुकाबले में भले ही 2-4 से हार मिली, लेकिन भारत ने 13 पेनल्टी कॉर्नर हासिल कर डच टीम को कड़ी टक्कर दी। आखिरी मैच में भारत ने नीदरलैंड्स को 2-2 से ड्रॉ पर रोका और शूटआउट में जीत हासिल कर बोनस अंक भी अर्जित किया। भारतीय महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच हरेंद्र सिंह ने कहा, हमने अनुभव और युवा जोश का संतुलन साधते हुए यह टीम चुनी है। यूरोपीय चरण प्रो लीग का अहम हिस्सा है और यहां दुनिया की टॉप टीमों से कड़ी चुनौती मिलेगी। उन्होंने आगे कहा, भुवनेश्वर में हुए मुकाबलों से हमें अपनी ताकत और कमजोरियों का आकलन करने का मौका मिला है। टीम ने हालिया कैंप और ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान बेहतरीन प्रतिबद्धता दिखाई है। अब लक्ष्य यही है कि हर मैच में खुद को बेहतर करते हुए टीम को आगे बढ़ाएं।

24 सदस्यीय टीम इस प्रकार है:

गोलकीपरः सविता, बिचू देवी खारिबम।

डिफेंडर्सः सुशीला चानू पुखरंबम, ज्योति, सुमन देवी थौडम, ज्योति सिंह, ईशिका चौधरी, ज्योति छेत्री,

मिडफील्डर्सः वैष्णवी विट्ठल फालके, सुजाता कुजुर, मनीषा चौहान, नेहा।

मिडफील्डरः सलीमा टेटे (कप्तान), लालरेमसिआमी, शर्मिला देवी, सुनेलीता टोप्पो, महिमा टेटे।

फॉरवर्ड:दीपिका, नवनीत कौर (उपकप्तान), दीपिका सोरेन, बलजीत कौर, रुतुजा दडासो पिसाल, ब्यूटी डुंगडुंग, साक्षी राणा।

स्टैंडबाय खिलाड़ीः बंसरि सोलंकी (गोलकीपर), अजमीना कुजुर (डिफेंडर)।

छत्तीसगढ़ के युवाओं ने कलारीपयट्टू में जीता स्वर्ण पदकें

गया (बिहार) । खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 में अर्जुन कुमार चंद्रा और अनंत स्वर्णकार ने पारंपरिक भारतीय मार्शल आर्ट (कलारीपयट्टू) प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ के लिए स्वर्ण पदक जीता। आज यहां आईआईएम स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में हुई कलारीपयट्टू प्रतियोगिता में अर्जुन कुमार चंद्रा और अनंत स्वर्णकार ने कलारीपयट्टू में अकल्पनीय प्रदर्शन किया। झारखंड के खिलाड़ियों की सहज गति, नियंत्रण और अभिव्यक्ति ने उन्हें फाइनल में दिल्ली और केरल से अधिक अंक दिलाए। स्वर्ण पदक जीतने के बसाद अर्जुन कुमार चंद्रा ने कहा, ÷हमने कड़ी मेहनत की और पदक की उम्मीद की। लेकिन हमें विश्वास नहीं था कि हम स्वर्ण पदक जीत पाएंगे। किसी भी चीज से अधिक, हमें इस बात की खुशी है कि हम स्वर्ण पदक जीतकर अपनी बात साबित कर पाए।

टेस्ट क्रिकेट से संन्यास के बाद संत प्रेमानंद से मिले विराट कोहली, साथ में दिखीं पत्नी अनुष्का

एजेंसी

मथुरा। टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले चुके विराट कोहली और उनकी पत्नी अनुष्का शर्मा मंगलवार सुबह वृंदावन पहुंचे। यहां उन्होंने श्रीराधे हित केली कुंज आश्रम में संत प्रेमानंद महाराज से भेंट की। इस दौरान दोनों ने संत महाराज से आशीर्वाद लिया और आध्यात्मिक चर्चा में भाग लिया। संन्यास के बाद यह उनकी पहली सार्वजनिक उपस्थिति मानी जा रही है। संन्यास के बाद सीधे आध्यात्मिक शांति की तलाश में वह वृंदावन पहुंचे।

विराट ने इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिये टेस्ट क्रिकेट से संन्यास का एलान किया था। उन्होंने एक भावुक पोस्ट के जरिये अपने 14 साल के टेस्ट करियर पर विराम लगाने की पुष्टि की थी। विराट ने कहा था कि उन्होंने इस प्रारूप से काफी सबक लिया है। विराट टी20 अंतरराष्ट्रीय से पहले ही संन्यास ले चुके हैं और अब सिर्फ वनडे में खेलते दिखाई पड़ेंगे।

विराट आईपीएल 2025 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की टीम का भी हिस्सा हैं और कुछ दिनों बाद वह आरसीबी टीम से जुड़ जाएंगे और पहली बार टीम को चैंपियन बनाने की कोशिश करेंगे। कोहली और अनुष्का ने संत प्रेमानंद के आश्रम में साढ़े तीन घंटे से भी ज्यादा समय बिताया। दोनों सुबह करीब छह बजे आश्रम पहुंचे और करीब साढ़े नौ बजे वहां से निकल गए। यह पहली बार नहीं है जब विराट संत प्रेमानंद से मिलने पहुंचे हैं। वह इससे पहले जनवरी 2023 में इसी साल जनवरी में भी मिलने पहुंचे थे। अब टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद उन्होंने संत प्रेमानंद से गहन चर्चा की। इस दौरान विराट ने पूछा कि असफलता से कैसे बाहर निकला जाए? इस पर प्रेमानंद ने कहा कि अभ्यास करना जारी रखें।

आईपीएल 2025 का बदला हुआ शेड्यूल जारी:17 मई से फिर शुरू होगा टूर्नामेंट, 3 जून को फाइनल

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने सोमवार देर रात इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 का संशोधित कार्यक्रम जारी कर दिया। टूर्नामेंट अब 17 मई से दोबारा शुरू होगा और फाइनल मुकाबला 3 जून को खेला जाएगा। आईपीएल को भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा पर बढ़ते तनाव के कारण 9 मई को एक सप्ताह के लिए स्थगित कर दिया गया था। अब बाकी बचे 17 मुकाबले बेंगलुरु, जयपुर, दिल्ली, लखनऊ, मुंबई और अहमदाबाद में खेले जाएंगे। प्लेऑफ के स्थानों की घोषणा बाद में की जाएगी।

इन तारीखों पर होंगे प्लेऑफ मुकाबले

प्लेऑफ के चार मुकाबलों की तारीखें तय कर दी गई हैं-

क्वालिफायर 1:29 मई

एलिमिनेटर:30 मई

क्वालिफायर 2:1 जून

फाइनलः 3 जून

टूर्नामेंट के दोबारा शुरू होने के बाद कुल 17 मुकाबले खेले जाएंगे, जिसमें दो डबल हेडर (रविवार को) होंगे। कुल मिलाकर 13 लीग मुकाबले और 4 प्लेऑफ मैच बाकी हैं।

आरसीबी और केकेआर के बीच 17 मई को होगा पहला मुकाबला

आईपीएल के फिर शुरू होने के साथ पहला मुकाबला 17 मई को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के बीच बेंगलुरु में खेला जाएगा। वहीं 8 मई को धर्मशाला में अधूरा छोड़ा गया पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) और दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) का मुकाबला अब 24 मई को जयपुर में होगा, जो पंजाब का अस्थायी होम ग्राउंड होगा। पंजाब को 26 मई को मुंबई इंडियंस के खिलाफ भी जयपुर में ही खेलना होगा। पहले यह मैच धर्मशाला में होना था।

रविवार के डबल हेडर्स में होंगे ये मुकाबले

18 मई (रविवार):

दोपहर 3-30 बजेः राजस्थान रॉयल्स बनाम पंजाब किंग्स

शाम 7:30 बजेः दिल्ली कैपिटल्स बनाम गुजरात टाइटंस

25 मई (रविवार):

दोपहर 3:30 बजेः गुजरात टाइटंस बनाम चेन्नई सुपर किंग्स

शाम 7:30 बजः सनराइजर्स हैदराबाद बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स

लीग चरण का अंतिम मुकाबला 27 मई को लखनऊ सुपर जायंट्स और आरसीबी के बीच लखनऊ में खेला जाएगा।

घरेलू मैदान से वंचित रह जाएंगी ये टीमें

शेड्यूल में बदलाव के चलते तीन टीमें–पंजाब, चेन्नई और हैदराबाद–अब अपने होम ग्राउंड पर कोई मुकाबला नहीं खेल पाएंगी। हालांकि चेन्नई और हैदराबाद पहले ही प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो चुके हैं, लेकिन पंजाब को यह बड़ा झटका माना जा रहा है क्योंकि वे 11 मैचों में 15 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर थे।

विदेशी खिलाड़ियों की उपलब्धता बनी चुनौती

आईपीएल का फाइनल अब 3 जून को खेला जाएगा, जो इंग्लैंड और वेस्टइंडीज के बीच 29 मई से शुरू हो रही एकदिनी सीरीज के साथ टकराएगा। इससे वेस्टइंडीज के खिलाड़ी रोमारियो शेफर्ड (आरसीबी), शामार जोसेफ (एलएसजी) और शेरफेन रदरफोर्ड (गुजरात) आईपीएल प्लेऑफ से बाहर हो सकते हैं।

संघर्ष विराम और मजबूत ग्लोबल संकेतों से झूमा शेयर बाजार, स्टॉक मार्केट में दिखी 4 साल की सबसे बड़ी सिंगल डे रैली

नई दिल्ली। भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम का ऐलान होने के बाद आज घरेलू शेयर बाजार में पिछले 4 साल की सबसे बड़ी तेजी दर्ज की गई। आज के कारोबार के दौरान सेंसेक्स इंट्रा-डे में 3 हजार अंक से भी अधिक उछल गया। इसी तरह निफ्टी ने भी 900 अंक से अधिक की छलांग लगाई। पिछले 4 सालों में सेंसेक्स और निफ्टी की ये अभी तक की सबसे बड़ी सिंगल डे रैली है। अगर वृद्धि प्रतिशत की बात की जाए, तो आज के कारोबार में सेंसेक्स 3.74 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। वहीं निफ्टी ने 3.82 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया। वृद्धि प्रतिशत के लिहाज से 2021 से लेकर अभी तक की अवधि में ये शेयर बाजार की दूसरी सबसे बड़ी बढ़त रही। इसके पहले 1 फरवरी 2021 को सेंसेक्स और निफ्टी 4.7 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए थे। भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा पर बने तनाव के कम होने से निवेशकों के सेंटीमेंट्स में काफी सुधार हुआ है। इसके साथ ही अमेरिका और चीन के बीच ट्रेड और टैरिफ को लेकर सकारात्मक बातचीत हो जाने के कारण भी मार्केट सेंटीमेंट्स पॉजिटिव हुए हैं। यही कारण है कि घरेलू शेयर बाजार में आज चौतरफा तेजी का माहौल बना रहा, जिसकी वजह से शेयर बाजार के निवेशकों को 1 दिन में ही 16 लाख करोड़ रुपये से अधिक का मुनाफा हो गया। आज के कारोबार की शुरुआत जोरदार मजबूती के साथ हुई थी।

अमेरिका-चीन में हुई ट्रेड डील, दोनों देश टैरिफ में 115 फीसदी कटौती पर हुए सहमत

नई दिल्ली। अमेरिका और चीन के बीच जिनेवा में चल रही दो दिवसीय बैठक के बाद ट्रेड डील पर सहमति बन गई है। दोनों देशों ने टैरिफ में 115 फीसदी कटौती करने का ऐलान किया है। जिनेवा में दोनों देशों के बीच हुए समझौते के मुताबिक अमेरिका, चीन के सामानों पर 30 फीसदी और चीन, अमेरिकी सामानों पर 10 फीसदी टैरिफ लगाएगा। दोनों देशों के बीच टैरिफ में हुए ये बदलाव 14 मई, 2025 से लागू हो जाएंगे। अमेरिका और चीन के बीच जिनेवा में चल रही दो दिवसीय बैठक के बाद जारी एक बयान में बताया कि दोनों देश एक-दूसरे पर टैरिफ घटाने पर सहमत हो गए हैं। अमेरिका और चीन दोनों देशों के बीच हुई इस बैठक के बाद बनी सहमति अमेरिका ने चीन पर 90 दिनों के लिए टैरिफ 30 फीसदी कर दिया है। वहीं चीन ने भी अमेरिका के लिए 90 दिनों के लिए टैरिफ को 125 फीसदी से घटाकर 10 फीसदी कर दिया है। अमेरिका और चीन ने कहा कि वे टैरिफ पर 90 दिनों के विराम पर सहमत हो गए हैं। इससे पारस्परिक शुल्कों में तेजी से कमी आएगी, जिससे निवेशकों का कुछ भरोसा हुआ कि पूर्ण पैमाने पर व्यापार युद्ध टल गया है। उल्लेखनीय है कि यह बैठक 9 मई से चल रही थी, जिसकी अगुवाई अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी स्कॉट बेसेंट और चीनी उप-प्रधानमंत्री हे लिफेंग ने की है।

किसानों को उनकी उपज खरीद का भुगतान होने में देरी नहीं होना चाहिए- शिवराज सिंह

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने देश के कृषि क्षेत्र की प्रगति के संबंध में कृषि भवन में समीक्षा बैठक की और वरिष्ठ अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। शिवराज ने किसानों से चना, मसूर, उड़द एवं अरहर की खरीद के संबंध में निर्देश देने के साथ ही अधिकारियों से कहा कि ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे कि किसानों को उनकी उपज खरीद का भुगतान होने में देरी नहीं हो। उन्होंने मीडिया को बताया कि देश में चावल और गेहूं का वास्तविक स्टॉक बफर मानक के मुकाबले काफी ज्यादा है। समीक्षा बैठक में शिवराज ने इस बात पर संतोष के साथ ही प्रसन्नता व्यक्त की कि चावल-गेहूं का वास्तविक स्टॉक, बफर मानक के मुकाबले ज्यादा है। चावल का वास्तविक स्टॉक 135.80 एलएमटी के बफर मानक के मुकाबले 389.05 एलएमटी है। गेहूं का वास्तविक स्टॉक 74.60 एलएमटी के बफर मानक के मुकाबले 177.08 एलएमटी है। इस प्रकार चावल व गेहूं का वास्तविक स्टॉक 210.40 एलएमटी के बफर मानक के मुकाबले 566.13 एलएमटी है। गेहूं के लिए प्रमुख राज्य उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान व बिहार हैं। कटाई की स्थिति 2 मई 2025 तक मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात में 100 प्रतिशत, उत्तरप्रदेश में 94 प्रतिशत, पंजाब में 97 प्रतिशत एवं बिहार 96 प्रतिशत गेहूं की कटाई पहले ही हो चुकी है।

आयकर विभाग ने वर्ष 2025-26 के लिए सभी 7 आईटीआर फॉर्म किए अधिसूचित

नई दिल्ली। आयकर विभाग ने आकलन वर्ष 2025-26 के लिए सभी 7 आयकर रिटर्न फॉर्म (आईटीआर) अधिसूचित कर दिए हैं। केंद्रीय प्रत्?यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने अधिसूचना के जरिए आईटीआर-फॉर्म-7 को अधिसूचित किया है। आयकर विभाग ने 'एक्स' पोस्ट पर लिखा कि आकलन वर्ष 2025-26 के लिए सभी सात आयकर रिटर्न फॉर्म (आईटीआर) अधिसूचित कर दिया गया है। इससे पहले छोटे और मझोले करदाताओं द्वारा दाखिल किए जाने वाले आईटीआर फॉर्म एक और चार को 29 अप्रैल को अधिसूचित किया गया था। ट्रस्ट और धर्मार्थ संस्थानों द्वारा दाखिल किए जाने वाले आईटीआर-7 फॉर्म को 11 मई को अधिसूचित किया गया। आईटीआर-1 और 4 में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है, जिसे 29 अप्रैल, 2025 को अधिसूचित किया गया था, जो सूचीबद्ध इक्विटी से पूंजीगत लाभ आय की रिपोर्टिंग से संबंधित है।

ऑपरेशन सिन्दूर: ट्रावोमिंट ने तुर्की, अजरबैजान की एयरलाइनों के टिकट बेचने बंद किये

नयी दिल्ली। भारत की अग्रणी ऑनलाइन ट्रैवल एजेंसी ट्रावोमिंट ने पाकिस्तान के साथ सीमा पर तनातनी के बीच उसको एकतरफा समर्थन देने के तुर्की और अज़रबैजान के रवैये को देखते हुए अपने प्लेटफार्म पर उनकी एयरलाइनों के टिकटों की बुकिंग बंद कर दी है। ट्रावोमिंट ने एक विज्ञप्ति में बताया कि उसने तुर्की एयरलाइंस, पेगासस एयरलाइंस, कोरेंडन एयरलाइंस और अज़रबैजान एयरलाइंस (एजेएएल) के लिये टिकटों की सभी बिक्री निलंबित करने का निर्णय किया है। उसने कहा है कि भविष्य में किसी भी घटनाक्रम के बावजूद उसका निर्णय अपरिवर्तित रहेगा और आगे भी ट्रावोमिंट इन देशों की ट्रैवेल इकाइयों के साथ कोई साझेदारी नहीं करेगा। उसका कहना है कि यह निर्णय राष्ट्रीय भावना के अनुरूप है तथा ट्रावोमिंट की देशभक्ति और अपने ग्राहकों की सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। इसके अतिरिक्त, ट्रावोमिंट ने उन यात्रियों के लिये रद्द करने का शुल्क माफ कर दिया है, जिन्होंने पहले ही इन गंतव्यों के लिये उड़ानें बुक कर ली थीं। उसका कहना है कि आपातकालीन एवं मानवीय यात्रा आवश्यकताओं पर मामला-दर-मामला आधार पर विचार किया जायेगा। ट्रावोमिंट के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी आलोक कुमार सिंह ने कहा,' हम एक गौरवान्वित भारतीय ओटीए हैं, और हमारी जिम्मेदारी और कर्तव्य सबसे पहले राष्ट्र और उसके लोगों के प्रति हैं।श्री सिंह ने कहा, यह बहिष्कार नहीं है- यह उन लोगों से अलगाव का प्रतीक है जो चुप्पी साधे हुये हैं और अनिश्चितता के इस समय में हमारे साथ खड़े नहीं हैं। तुर्की के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय की एक रिपोर्ट के हवाले से बताया गया है कि 2024 में भारत से 3.30 लाख यात्रियों ने वहां की यात्रा की थी। पिछले 10 साल में भारत से सैर-सपाटे के लिए तुर्की जाने वाले यात्रियों की संख्या करीब दो गुनी हो गयी है, जो वहां के पर्यटन उद्योग के लिए महत्वपूर्ण है। इसी तरह अजरबैजान के पर्यटन बोर्ड के हवाले से कहा गया है कि पिछले वर्ष भारत से 2.44 लाख लोगों ने वहां की यात्राएं कीं। पाकिस्तान में आतंकवादियों और उनके ठिकानों पर भारत ऑपरेशन के दौरान सोशल मीडिया पर भारत के लोगों ने तुर्की और अजरबैजान की सरकारों की ओर से पाकिस्तान को दिये गये एकतरफा समर्थन के लिये उनकी आलोचना की थी। आलोचकों ने इन देशों के पर्यटन उद्योग को भारतीय लोगों से होने वाले लाभ के बावजूद पाकिस्तान को उनके समर्थन पर रोष जताया था।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें स्थिर

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम आज स्थिर रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर साप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 0.67 प्रतिशत उबलकर 61.43 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। इसी तरह लंदन ब्रेंट क्रूड 0.58 प्रतिशत की तेजी के साथ 64.28 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

सी-डॉट, सिनर्जी क्वांटम ड्रोन आधारित प्रणालियों के लिए मिल कर करेंगे क्वांटम प्रौद्योगिकी का विकास

एजेंसी

नई दिल्ली। दूरसंचार विभाग (डीओटी) की दूरसंचार अनुसंधान एवं विकास एजेंसी सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ टेलीमैटिक्स (सी-डॉट) ने क्वांटम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की अत्याधुनिक डीप-टेक कंपनी सिनर्जी क्वांटम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के साथ उन्नत क्वांटम प्रौद्योगिकी से सुरक्षित दूरसंचार प्रणालियों की प्रौद्योगिकी पर मिल कर काम करने का समझौता किया है। दोनों के बीच इस मामले में एक करार पर हस्ताक्षर किए गए है। इस उद्देश्य ड्रोन आधारित क्वांटम की डिस्ट्रिब्यूशन (क्यूकेडी) प्रणालियों के विकास में सी-डॉट और सिनर्जी क्वांटम के बीच सहयोग को औपचारिक रूप प्रदान करना है जिनमें दूरसंचार प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर (टीआरएल) छह या उससे ऊपर की पोलराइजेशन (समन्वयकारी) एन्कोडिंग के लिए छद्म बीबी84 प्रोटोकॉल का उपयोग किया जाता है। दूरसंचार विभाग की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है कि यह साझेदारी आत्मनिर्भर भारत पहल के अंतर्गत स्वदेशी अनुसंधान एवं नवाचार को मजबूती प्रदान करने तथा उभरती एवं सुरक्षित दूरसंचार प्रौद्योगिकियों में भारत की क्षमता बढ़ाने के राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अनुरूप है। इस सहयोग अंतर्गत सी-डॉट और सिनर्जी क्वांटम संयुक्त रूप से ड्रोन-आधारित तैनाती के लिए अनुकूलित क्वांटम संचार प्रौद्योगिकियों के विकास को आगे बढ़ाएंगे। सी-डॉट के सीईओ डॉ. राजकुमार उपाध्याय ने कहा, क्वांटम प्रौद्योगिकियों में अगली पीढ़ी के सुरक्षित संचार के लिए अपार संभावनाएं हैं और सिनर्जी क्वांटम के साथ यह सहयोग इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में स्वदेशी क्षमता बढ़ाने के हमारे साझा दृष्टिकोण को दर्शाता है।सिनर्जी क्वांटम इंडिया के संस्थापक और सीईओ जय ओबेरॉय ने सी-डॉट के साथ काम करने पर उत्साह व्यक्त किया और कहा कि इस साझेदारी में भारत को ड्रोन-आधारित क्वांटम सुरक्षित संचार में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने की क्षमता है।

अमेरिका-चीन ट्रेड डील से कच्चे तेल में तेजी, दो सप्ताह के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंचा क्रूड

एजेंसी

नई दिल्ली। । अमेरिका और चीन के बीच ट्रेड डील फाइनल होने की खबर आते ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल (क्रूड ऑयल) की कीमत में एक बार फिर तेजी का रुख बन गया है। पिछले कुछ दिनों से लगातार गिरावट का सामना कर रहा कच्चा तेल आज पिछले दो सप्ताह की ऊंचाई पर पहुंच कर कारोबार कर रहा है। कच्चे तेल की कीमत में आज एक ही दिन में तीन प्रतिशत से अधिक की तेजी आई है। आज की तेजी के कारण भारतीय समय के अनुसार शाम 6 बजे अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड 3.70 प्रतिशत की तेजी के साथ 66.38 डॉलर प्रति बैरल के स्तर पर पहुंच गया था। इसी तरह वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड 4 प्रतिशत उछल कर 63.59 डॉलर प्रति बैरल के स्तर तक आ गया था। माना जा रहा है कि अमेरिका और चीन के बीच ट्रेड डील फाइनल हो जाने के बाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की मांग में तेजी आ सकती है। हालांकि ये तेजी कितने दिन तक कायम रहेगी, इसके बारे में अभी से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है,

क्योंकि तेल उत्पादक देशों के संगठन ओपेक प्लस ने जून के महीने में कच्चे तेल के उत्पादन में बढ़ोतरी करने का ऐलान किया है। ऐसा होने पर मांग की तुलना में कच्चे तेल की उपलब्धता अधिक हो सकती है, जिससे अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड ऑयल की कीमत में एक बार फिर गिरावट का दौर शुरू हो सकता है।

क्रूड ऑयल के अलावा कमोडिटी मार्केट में आज एग्रो कमोडिटीज में से एक हल्दी ने हलचल मचा रखी है। हल्दी की कीमत में 1 दिन में ही 3 प्रतिशत से अधिक की तेजी आ गई है। हल्दी का मई महीने का वायदा 14,300 रुपये के स्तर को पार कर गया है। हल्दी की कीमत में पिछले 3 महीने से लगातार तेजी बनी हुई है। इस अवधि में इस कमोडिटी में 15 प्रतिशत तक का उछाल आ चुका है।

श्रीराम जनरल इंश्योरेंस का मुनाफा आठ प्रतिशत चढ़ा

एजेंसी

नई दिल्ली। श्रीराम जनरल इंश्योरेंस कंपनी (एसजीआई) वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में शानदार प्रदर्शन करते हुए सकल लिखित प्रीमियम (जीडब्ल्यूपी) में 876 करोड़ रुपये से 25 प्रतिशत की वार्षिक बढ़ोतरी लेकर 1,099 करोड़ रुपये हो गया जबकि शुद्ध लाभ आठ प्रतिशत बढ़कर 130 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। कंपनी ने यहां बयान जारी कर बताया कि यह वृद्धि मोटर बीमा खंड में केंद्रित रणनीति और बेहतर वितरण नेटवर्क का प्रतिफल है, जिसने कंपनी को बीमा उद्योग की औसत वृद्धि दर से कई गुना बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम बनाया है। चौथी तिमाही में उसका जीडब्ल्यूपी 876 करोड़ रुपये से बढ़कर 1,099 करोड़ रुपये हो गया जबकि शुद्ध लाभ आठ प्रतिशत बढ़कर 130 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। पूरे वित्तीय वर्ष 2025 के दौरान, कंपनी का जीडब्ल्यूपी 24 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 3,036 करोड़ रुपये से बढ़कर 3,753 करोड़ रुपये हो गया। यह वृद्धि सामान्य बीमा उद्योग की छह प्रतिशत वार्षिक वृद्धि के मुकाबले चार गुना अधिक है। इसी अवधि में एसजीआई का शुद्ध लाभ 13 प्रतिशत बढ़कर 455 करोड़ रुपये से 515 करोड़ रुपये हो गया।

एसजीआई के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनिल अग्रवाल ने कहा, हमारी रणनीतिक प्राथमिकताओं विशेष रूप से मोटर बीमा खंड में केंद्रित दृष्टिकोण ने हमें बाजार की अस्थिरताओं के बावजूद लचीलापन और चपलता प्रदान की है। आगे चलकर हम डिजिटल परिवर्तन, विविध पोर्टफोलियो और कम सेवा वाले क्षेत्रों में गहरी पैठ बनाने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। कंपनी की वित्तीय मजबूती का प्रमाण इसका 3.51 का सॉल्वेंसी अनुपात है, जो बीमा नियामक द्वारा निर्धारित न्यूनतम 1.50 की आवश्यकता से काफी अधिक है। साथ ही, मार्च 2025 तक एसजीआई ने 65.17 लाख लाइव पॉलिसी दर्ज कीं, जो पिछले वर्ष के 62.59 लाख से अधिक हैं। डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क को मजबूत करने की दिशा में भी एसजीआई ने बड़ी छलांग लगाई है। वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में कंपनी ने 5,479 नए वित्तीय सलाहकारों की नियुक्ति की, जिससे कुल सलाहकारों की संख्या 89,621 हो गई है। कंपनी का लक्ष्य है कि वित्त वर्ष 2030 तक यह आंकड़ा दो लाख तक पहुंचे।

सरकार ने नागरिक उड़ानों को अनुमति दी, 32 बंद हवाई अड्डे फिर से खुले

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने अपने सभी 32 हवाई अड्डों को फिर से खोल दिया है, जो भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष के कारण 9 मई से बंद थे। सरकार ने यह कदम उड़ान संचालन को फिर से शुरू करने के लिए नोटैम्स (एयरमैन को नोटिस) जारी करने के बाद उठाया गया है।नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि 15 मई, 2025 को 05- 29 बजे तक नागरिक विमान परिचालन के लिए 32 हवाई अड्डों को अस्थायी रूप से बंद करने की अधिसूचना हटा दी गई है। ये सभी हवाई अड्डे अब तत्काल प्रभाव से नागरिक विमान परिचालन के लिए उपलब्ध हैं। मंत्रालय के मुताबिक फिर से खुलने वाले अन्य हवाई अड्डों में श्रीनगर, अमृतसर, लुधियाना, भुंतर, किशनगढ़, पटियाला, शिमला, कांगड़ा-गग्गल, भठिंडा, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, हलवारा, पठानकोट, जम्मू, लेह, मुंद्रा, जामनगर, हीरासर, पोरबंदर, केशोद, कांडला और भुज शामिल हैं। इस आदेश के बाद चंडीगढ़ अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे ने घोषणा की कि 12 मई सुबह 10 बजे से उड़ानों का संचालन फिर से शुरू कर दिया गया है। इस बीच इंडिगो एयरलाइंस ने 'एक्स' पोस?ट पर साझा की गई एक ट्रैवल एडवाइजरी में कहा कि हवाई अड्डों पर उसके सभी ऑपरेशन धीरे-धीरे फिर से शुरू हो जाएंगे। हालांकि, विमानन दिग्गज ने कहा कि जैसे-जैसे स्थिति सामान्य होगी, निर्धारित उड़ानों में देरी हो सकती है और यात्रियों को उड़ान की स्थिति की जांच करने की सलाह दी। कंपनी ने कहा कि यात्रियों को सलाह दी जाती है।

भारत-पाकिस्तान तनाव से प्रभावित मार्गों पर एयर इंडिया फिर से शुरू करेगी परिचालन

एजेंसी

नई दिल्ली। टाटा की अगुवाई वाली एअर इंडिया अब हालात सामान्य होने के बाद उड़ानें फिर से शुरू कर रही है। भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ने की वजह से देश के 32 एयरपोर्ट्स से फ्लाइट रद्द कर दी गई थीं। एअर इंडिया ने एक्स पोस्ट में बताया कि हवाई अड्डों को फिर से खोलने के बारे में विमानन अधिकारियों की अधिसूचना के बाद कंपनी जम्मू, श्रीनगर, लेह, जोधपुर, अमृतसर, भुज, जामनगर, चंडीगढ़ और राजकोट के लिए अपनी उड़ानें यानी परिचालन शुरू करने की दिशा में काम कर रही है। इसके अलावा इंडिगो एयरलाइंस ने भी हवाई अड्डों के फिर से खुलने के बाद अपनी उड़ानें बहाल करने की कोशिश कर रही है। एअर इंडिया ने कहा कि हम इस समय आपकी समझदारी की

सराहना करते हैं, क्योंकि हमारी टीमें इन हवाई अड्डों पर परिचालन को सामान्य बनाने के लिए काम कर रही हैं। कृपया आगे की अपडेट के लिए बने रहें। इसके साथ ही किसी अन्य जानकारी के लिए 011-69329333/011-69329999 नंबर पर संपर्क करें। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने एक बयान में बताया कि बदलती परिस्थितियों के कारण 15 मई तक बंद 32 एयरपोर्ट्स तत्काल प्रभाव से एयरक्राफ्ट ऑपरेशन्स के लिए उपलब्ध हैं। यात्रियों को फ्लाइट्स की जानकारी के लिए एयरलाइन कंपनियों की वेबसाइट देखने के लिए कहा गया है। इसके साथ ही बताया कि एयरपोर्ट्स से यात्रा करने वाले यात्रियों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी संबंधित एयरलाइनों से सीधे फ्लाइट स्टेटस की जांच करके अपडेट रहें। उल्लेखनीय है कि भारत ने 7 मई, 2025 को पाकिस्तान में ऑपरेशन सिंदूर के तहत एयर स्ट्राइक कर 22 अप्रैल को हुए पहलगाम आतंकी हमले का बदला लिया है। इस दौरान भारत ने 9 आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया, जबकि इस ऑपरेशन में 100 से ज्यादा आतंकियों की मौत हुई। इसके बाद से भारत पाकिस्तान में तनाव बढ़ गया था। हालांकि, 10 मई से दोनों देशों के बीच संघर्ष विराम लागू है।

वैगन आर, आल्टो के 10 व ईको में आएंगे छह एयरबैग: मारुति सुजुकी

एजेंसी

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी वाहन निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया ने अपनी वैगन आर, आल्टो के 10 और ईको मॉडल की सभी कारों में छह एयरबैग को मानक के रूप में शामिल किया है। कंपनी द्वारा यह अपडेट सुरक्षा को बढ़ाने के लिए किया है। अब इन कारों में सफर के दौरान यात्री पहले से ज्यादा सुरक्षित रहेंगे। मारुति सुजुकी इंडिया प्रबंधन द्वारा जारी बयान के मुताबिक वैगनआर, ऑल्टो के 10, सेलेरियो और ईको जैसे मॉडल के सभी संस्करणों में छह एयरबैग की पेशकश करेगी। कंपनी ने कहा कि यह कदम विभिन्न क्षेत्रों में ग्राहकों के लिए बढ़ी हुई सुरक्षा की पेशकश करने की कंपनी की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। कंपनी के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (विपणन एवं बिक्री) पार्थो बनर्जी ने कहा कि भारत में तेजी से फैल रहे आधुनिक सड़क ढांचे, हाई-स्पीड एक्सप्रेस-वे और विकसित हो रहे मोबिलिटी पैटर्न से पता चलता है कि मजबूत सुरक्षा उपायों की जरूरत पहले कभी इतनी अधिक नहीं थी। वैगन आर, ऑल्टो के 10, सेलेरियो और ईको में छह एयरबैग को मानक बनाने के निर्णय के साथ कंपनी यह सुनिश्चित कर रही है कि सभी के लिए बेहतर सुरक्षा उपलब्ध हो। पार्थो बनर्जी ने बताया कि इन मॉडल की अपार

लोकप्रियता को देखते हुए, यह कदम बड़ी संख्या में मोटर चालकों के लिए सुरक्षा मानकों को काफी हद तक बढ़ाता है और देश भर में यात्रियों की सुरक्षा में समग्र रूप से योगदान देता है। दरअसल मारूति अपने एरेना बिक्री नेटवर्क के जरिये वैगन आर, ऑल्टो के 10, सेलेरियो और ईको जैसे मॉडल की बिक्री करती है, जबकि नेक्सा नेटवर्क के जरिये वह बलेनो, ग्रैंड विटारा और इनविक्टो जैसे प्रीमियम मॉडल बेचती है।

अमेरिका पर जवाबी टैरिफ लगा सकता है भारत

मुंबई। अमेरिका के स्टील पर शुल्क लगाने के फैसले के बाद अब भारत भी अब अमेरिकी उत्पादों पर टैरिफ लगाने के प्रस्ताव पर विचार कर रहा है। भारत ने विश्व व्यापार संगठन (डब्लूटीओ) को इस प्रस्ताव की जानकारी दी है। अमेरिका भारतीय स्टील और एल्युमीनियम के निर्यात पर शुल्क वसूल रहा है। अमेरिका के स्टील शुल्क से बुरी तरह प्रभावित हुआ है भारत का निर्यात भारत ने विश्व व्यापार संगठन को सोमवार को दिए नोटिस में कहा है कि भारत छूट को समाप्त कर कुछ अमेरिकी उत्पादों पर आयात शुल्क बढ़ा सकता है। भारत का कहना है कि ये अपने बचाव में उठाया गया कदम है। भारत का कहना है कि अमेरिका द्वारा स्टील और एल्युमीनियम उत्पादों पर शुल्क लगाए जाने से उसके करीब 7.6 अरब डॉलर के निर्यात पर असर पड़ा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस साल सत्ता में आने के बाद अपने संरक्षणवादी दृष्टिकोण को जारी रखा और दुनिया के कई देशों पर टैरिफ लगाने का एलान कर दिया। अपने पिछले कार्यकाल के दौरान भी ट्रंप ने स्टील और एल्युमीनियम पर राष्ट्रीय सुरक्षा की आड़ में शुल्क लगाए थे। भारत दुनिया में कच्चे इस्पात का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। ऐसे में ट्रंप द्वारा स्टील और एल्युमीनियम पर लगाए गए शुल्क का भारत के निर्यात पर बड़ा असर पड़ा है।

कमोडिटी मार्केट में फिसला सोना, चांदी की भी फीकी पड़ी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। कमोडिटी मार्केट में सोना फिसलता हुआ नजर आ रहा है। इसी तरह चांदी की चमक भी फीकी पड़ती नजर आ रही है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोना 94 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर से भी नीचे फिसल गया है। ये सोने का पिछले 5 दोनों का सबसे निचला स्तर है। इसी तरह चांदी की कीमत भी गिर कर 96 हजार रुपये प्रति किलोग्राम से नीचे चली गई है। एमसीएक्स की तरह ही कॉमेक्स (सीओएमईएक्स) पर भी सोना 3,280 डॉलर प्रति औंस के स्तर से नीचे फिसल गया है। सोने की तरह ही चांदी की कीमत भी कॉमेक्स पर 33 डॉलर प्रति औंस के नीचे पहुंच गई है। मार्केट एक्सपर्ट्स का कहना है कि अमेरिका और चीन के बीच हुई ट्रेड डील के कारण सोने में 'सेफ हेवेन' के रूप में होने वाले निवेश में कमी आ सकती है। अभी तक दुनिया के कई देशों के बीच जारी तनाव और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा थोपी गई नई टैरिफ पॉलिसी के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में निवेशक सेफ हेवेन यानी सुरक्षित निवेश के रूप में सोने में बढ़-चढ़ कर पैसा लगा रहे थे, लेकिन अब स्थितियां बदलने लगी हैं। अमेरिका और चीन के बीच ट्रेड डील फाइनल होने के साथ ही भारत और पाकिस्तान के बीच भी

सीजफायर का ऐलान हो गया है। इसके अलावा रूस और यूक्रेन युद्ध के भी खत्म होने की उम्मीद बन गई है। इसकी वजह से सोने की मांग पर दबाव बन गया है। कैपेक्स गोल्ड एंड इन्वेस्टमेंट्स के सीईओ राजीव दत्ता का कहना है कि दुनिया में किसी भी तरह का तनाव बढ़ने पर सोने की मांग में भी तेजी आती है। इसी तरह तनाव घटने पर सोने की मांग घट जाती है। पिछले कुछ दिनों से अंतरराष्ट्रीय मंच पर लगातार तनाव की स्थिति बनी हुई थी। कहीं युद्ध के कारण तनाव बना हुआ था, तो दुनिया के कई देशों में अमेरिका की नई टैरिफ पॉलिसी का डर छाया हुआ था। इन वजहों से दुनिया के ज्यादातर देशों के बाजारों में लगातार उथल-पुथल की स्थिति देखी जा रही थी। ऐसा होने के कारण ज्यादातर निवेशक सोने को सुरक्षित निवेश मानते हुए इस चमकीली धातु की जम कर खरीदारी कर रहे थे, लेकिन अब स्थितियां विपरीत होने लगी हैं। अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक साथ स्थितियां सकारात्मक होने लगी हैं। यानी तनाव घटता हुआ नजर आने लगा है। इसका असर सोने की मांग में आई कमी के रूप में भी नजर आ रहा है। यही कारण है कि सोने की कीमत पिछले 5 दिन के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है। हालांकि राजीव दत्ता का कहना है कि लॉन्ग टर्म में सोने की कीमत तेजी बनी रह सकती है, लेकिन शॉर्ट टर्म में सोना अपनी चमक खोता हुआ नजर आ रहा है। उनका कहना है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में स्थिरता आने के बाद सोने की कीमत में एक बार फिर तेजी का रुख बनेगा।

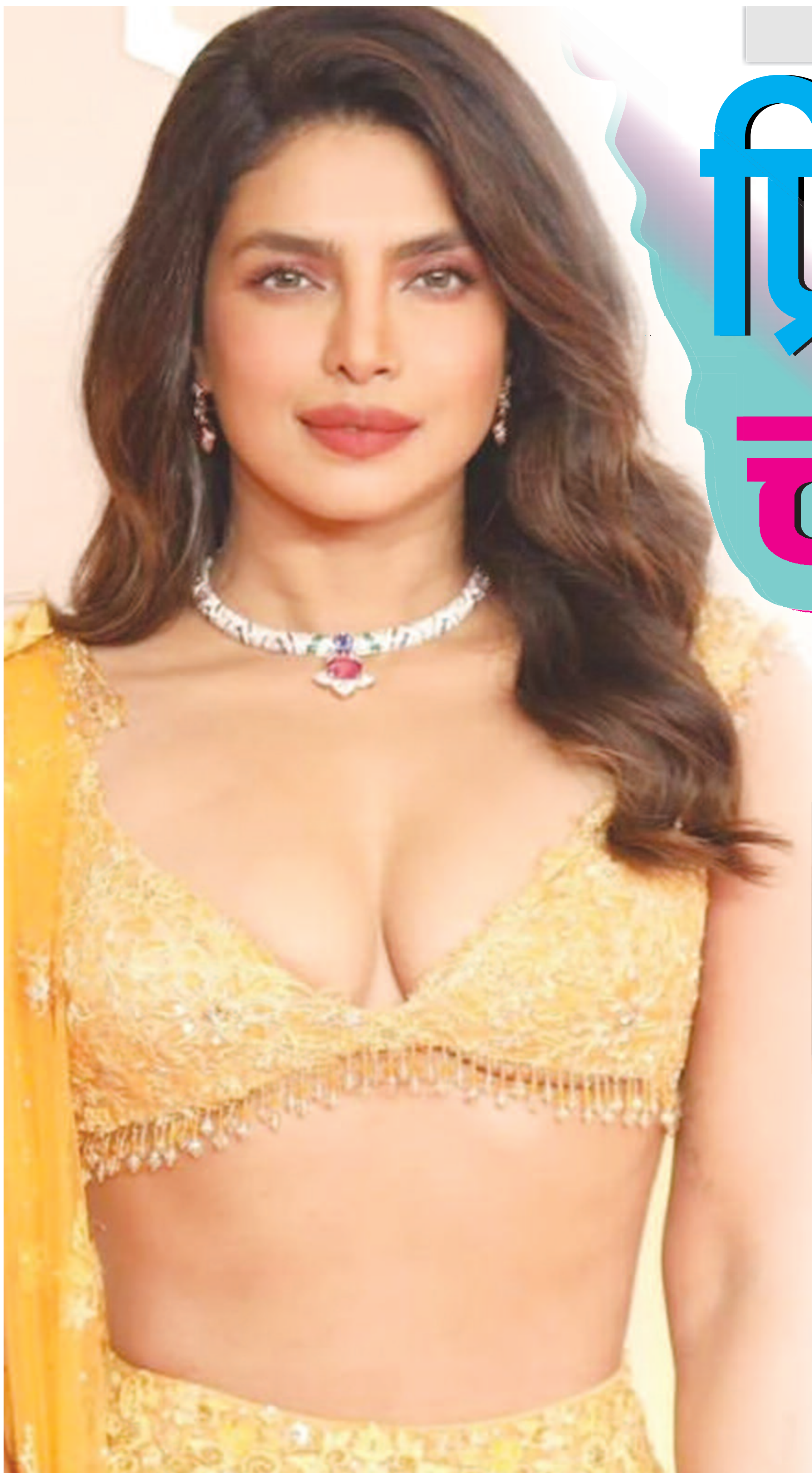

पति अक्षय के साथ

प्रियंका चोपड़ा

की करीबी से आग बबूला हो गई थीं ट्विंकल, एक्ट्रेस को सबक सिखाने सेट पर पहुंच गई थीं

बॉलीवुड के कई एक्टर्स ने शादीशुदा होते हुए भी एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर्स चलाए हैं. हिंदी सिनेमा के सुपरस्टार अक्षय कुमार का नाम भी इस लिस्ट में शामिल है. शादी से पहले अक्षय के कई अफेयर रहे हैं. हालांकि शादी के बाद भी अक्षय बहक गए थे. उनका दिल मशहूर एक्ट्रेस प्रियंका चोपड़ा पर आ गया था.अक्षय कुमार ने प्रियंका चोपड़ा के साथ कई फिल्मों में काम किया है. दोनों की जोड़ी को दर्शकों ने काफी पसंद किया है. हालांकि साथ काम करने के दौरान दोनों के बीच अफेयर की शुरुआत हो गई थी. दोनों के अफेयर के किस्से सुर्खियों में थे तब ट्विंकल खन्ना को बड़ा झटका लगा था. जब अक्षय और प्रियंका किसी फिल्म की शूटिंग कर रहे थे तब प्रियंका को सबक सिखाने के लिए ट्विंकल सेट पर पहुंच गई थीं और उन्होंने अक्षय कुमार को भी जमकर खरी खोटी सुनाई थी.

सुर्खियों में रहा अक्षय-प्रियंका का अफेयर

प्रियंका ने साल 2003 में आई फिल्म 'द हीरो-लव स्टोरी ऑफ अ स्पाई' से बॉलीवुड डेब्यू किया था. इसके एक महीने बाद ही उनकी फिल्म 'अंदाज' रिलीज हुई थी, जिसमें वो अक्षय कुमार के अपोजिट थीं. इस फिल्म के बाद दोनों के अफेयर को लेकर सुगबुगाहट शुरू हो गई थी. 'अंदाज' के बाद दोनों 'मुझसे शादी करोगी', 'ऐतराज' और 'वक्त: रेस अगेंस्ट टाइम' में भी साथ नजर आए थे.

इधर 1800 करोड़ी एक्ट्रेस ने काटा जान्हवी कपूर का पत्ता! उधर फिल्म पर हो गया बड़ा फैसला

करण जौहर और कार्तिक आर्यन जल्द दो बड़े प्रोजेक्ट में साथ दिखने वाले हैं. जहां पहले 'तू मेरी मैं तेरा, मैं तेरा तू मेरी' आएगी, तो उसके बाद 'नागजिला' को सिनेमाघरों में उतारा जाएगा. दोनों ही फिल्मों से पहले कार्तिक और करण जौहर की एक पुरानी फिल्म चर्चा में आ गई है, जिसमें वो काम करने वाले थे, पर बंद हो गई थी. 4 साल के बाद Dostana 2 पर फिर से काम किया जा रहा है. इस बार एकदम फ्रेश कास्ट के साथ शुरुआत की गई है. लेकिन मेकर्स ने इसी बीच बहुत बड़ा फैसला कर लिया है.

हाल ही में पीपिंगमून पर एक खबर छपी. इससे पता लगा कि धर्मा प्रोडक्शन वाले फिल्म को थिएटर्स नहीं, बल्कि सीधा ओटीटी पर लाने की प्लानिंग कर रहे हैं. साथ ही इस नई कास्ट में लक्ष्य और विक्रांत मैसी के साथ जान्हवी कपूर नहीं होंगी. दरअसल उनकी जगह 1800 करोड़ छापने वाली एक्ट्रेस की एंट्री होने की खबरें हैं.

जान्हवी नहीं, तो फिल्म में कौन होगी ?

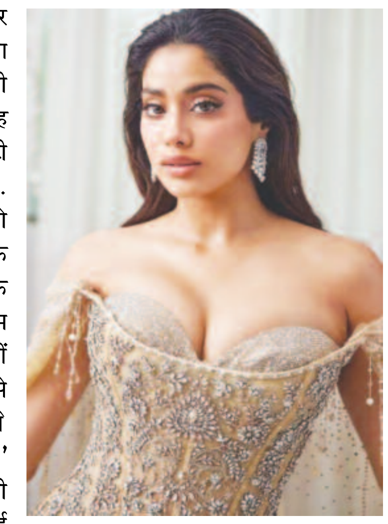

हाल ही में खबर आई कि दोस्ताना पार्ट 2 में जान्हवी कपूर की जगह श्रीलीला की एंट्री हो गई है. दरअसल वो पहले ही कार्तिक आर्यन की एक फिल्म में काम कर रही हैं. वहीं 1800 करोड़ से ज्यादा छापने वाली 'पुष्पा 2' के बाद से ही चर्चा में हैं. कई फिल्मों के लिए उनसे चर्चा चल रही है. कहा जा रहा है कि जान्हवी की जगह वो ही फिल्म में होंगी. लेकिन फिलहाल मेकर्स की तरफ से कोई भी अनाउंसमेंट नहीं की गई है.

किस OTT पर आएगी 'दोस्ताना 2' ?

नई रिपोर्ट के मुताबिक, धर्मा प्रोडक्शन वाले फिल्म को ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर लाने की प्लानिंग कर रहे हैं. इसे डिजिटल फिल्म के तौर पर ही बनाया जा रहा है. हालांकि, विक्रांत मैसी और लक्ष्य पहले ही अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट्स को लेकर बिजी चल रहे हैं. जहां विक्रांत का नाम- Sri Sri Ravi Shankar की बायोपिक और 'डॉन 3' से जुड़ रहा है. तो लक्ष्य के खाते में भी कुछ फिल्में हैं. वहीं बात जान्हवी कपूर की करें, तो वो करण जौहर की पुरानी कास्ट का हिस्सा थीं, लेकिन उम्मीद थी कि फिल्म के दोबारा शुरू होने के बाद भी होंगी. लेकिन नई रिपोर्ट में कहा जा रहा है कि श्रीलीला ने बाजी मार ली है.